पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन

द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – 10

तृतीय भाषा संस्कृत एवं उसकी शिक्षण विधि

इकाई 6 से 10

पत्राचार पाठ्यक्रम
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
डिप्लोमा इन एज्यूकेशन परीक्षा

विषयः संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधि) **प्रश्नपत्रदशम् इकाई षष्ठी**
विषयांशः व्याकरण – संज्ञा, सर्वनाम क्रिया, वचन, लिंग, कारक, विभक्ति, उपसर्ग, और प्रत्यय शब्द।

किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं। संस्कृत में संज्ञा शब्दों को दो भागों में विभाजित किया गया है। अजन्त संज्ञा शब्द और हलन्त संज्ञा शब्द। जिन शब्दों के अन्त में ''अच्'' अर्थात् स्वर होते हैं, उन्हें ''अजन्त'' कहते हैं। जैसे – राम, रमा, हरि, भानु आदि अजन्त (स्वरान्त संज्ञा) शब्द हैं तथा वाच्, दिक्, आदि हलन्त संज्ञा शब्द हैं।

हिन्दी में कर्ता, कर्म आदि संबंध दिखाने के लिए ने, को आदि शब्द संज्ञा के पीछे जोड़ दिए जाते हैं, किन्तु संस्कृत में यह संबंध दिखाने के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्द का रूप ही बदल देते हैं–जैसे – ''राम'' ने की जगह ''रामः'' मोहन को की जगह ''मोहनम्''। इसी प्रकार एक शब्द के कई रूप हो जाते हैं। कर्ता, कर्म, आदि कारकों के अर्थ को ''सुप्'' आदि प्रत्यय लगाकर प्रकट किया जाता है जैसे –

कारक – कारक वे शब्द हैं जो क्रिया से साक्षात् संबंध रखते हैं, कारक संस्कृत में विभक्ति के रूप में प्रयोग होते हैं। ये छह होते हैं।

कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्।।

अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण में छह कारक हैं।

विभक्ति – कारकों को जोड़ने के लिए हिन्दी में को आदि चिह्न काम में आते हैं। ये विभक्ति (कारक चिह्न) कहलाते हैं। संस्कृत में सात विभक्तियाँ तथा एक सम्बोधन होता है।

''राम'' शब्द का सातों विभक्तियों में प्रयोग –
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे,
रामेणाभिहता निशाचरचमू, रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोऽस्म्यहम्
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे, हे राम मां पालय।।

प्रथम विभक्ति – कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है जैस अश्वः धावति। रामः गच्छति।

द्वितीया विभक्ति – (1) वाक्य में कर्ता जिससे अधिक समीपता रखता है उसमें कर्म होता है, जैसे – सः पुस्तकं पठति। इसमें ''पुस्तकं'' शब्द में ''पुस्तक को'' अर्थ निहित है, अतः यहाँ द्वितीया विभक्ति होती है। (2) गमनार्थक – धातुओं के योग में जाने के स्थान पर द्वितीया विभक्ति होती है जैसे – (1) रामः वनं गच्छति। (2) सीता आपणं गच्छति। (3) याच्, दण्ड्, प्रच्छ्, ब्रू, जि, पच्, दुह्, चि, नी, हृ आदि धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

तृतीया विभक्ति – जब किसी की सहायता से कर्ता कर्म पूरा करता है तो उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे – रामः कन्दुकेन, कीडति। (राम गेंद से खेलता है।)

सह, साकं, समं, सार्धम् आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे – सः रामेण सह गच्छति।

चतुर्थी विभक्ति – (1) इसका प्रयोग ''देने के लिए'' के अर्थ में होता है। जैसे – सः निर्धनाय धनं ददाति। धनिकः दीनाय दानं ददाति।

(2) रूच्, क्रुध्, दुह्, ईर्ष्य, असूय तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – (1) रामाय मोदकं रोचते।
(2) पिता पुत्राय क्रुध्यति।
(3) सः रमेशाय ईष्यति।

पञ्चमी विभक्ति–अलग होने के अर्थ में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

(1) प्रमोदः गृहात् विद्यालयं गच्छति।
(2) वृक्षात् फलानि पतन्ति।

भय, रक्षा, उत्पन्न, आदि के अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है, जैसे – बालकः चौरात् विभेति।

षष्ठी विभक्ति – दो वस्तुओं का संबंध स्थापित करने में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे – रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

अन्तः अग्र, उपरि, अधः, समः, श्रेष्ठ, पश्चात्, मध्य हेतु, उत्तरतः दक्षिणतः आदि शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे – कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
रामः राजकुमाराणां ज्येष्ठः आसीत्।

सप्तमी विभक्ति – (अधिकरण) जिस स्थान या समय में कोई कार्य सम्पादित होता है वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे – (i) वृक्षे वानरः तिष्ठति। (वृक्ष पर वानर खड़ा है।)
(ii) विद्यालये छात्राः पठन्ति।

(1) स्निह् अभिलष्, अनुरंजन, आदि के योग में भी सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे– (i) माता पुत्रे स्निह्यति। (ii) कृष्णः गुरूषु आद्रियते। (iii) कुशल, चतुर, तत्परता में सप्तमी विभक्ति लगती है।

जैसे – सूर्ये अस्तं गते सः गमिष्यति।

उपसर्ग – उपसर्ग प्रायः धातु में अथवा धातु से बने विशेषण शब्दों में जोड़े जाते हैं। इनके जुड़ने से धातु का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। उपसर्ग 22 माने जाते हैं, जो निम्नानुसार हैं–

जैसे – ह्न धातु (हरण करना)

प्र + ह्न = प्रहरति = प्रहार करता है / करती है ।
वि + ह्न = विहरति = विहार करता है / करती है ।
सम् + ह्न = संहरति = संहार करता है / करती है ।
परि + ह्न = परिहरति = छोड़ देता / देती है।
उत् + आ + ह्न = उदाहरति = उदाहरण देता है / देती है।
सम् + आ + ह्न = समाहरति = एकत्र करता / करती है।
उत् + ह्न = उदाहरति = उध्दार करता / करती है।

प्रत्यय – प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो धातु के अन्त में जोड़े जाते हैं, जिन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। इन प्रत्ययों के लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं।

जैसे –भू + क्त्वा = भूत्वा, पठ् + क्त्वा = पठित्वा = पढ़कर।

गम् + क्त्वा = गत्वा, पठ् + तुमुन् = पठितुम्

स्था + तुमुन् = स्थातुम्, हस् + तुमुन् = हसितुम्

सुप् – प्रत्यय

(1) विभक्ति	(2) कारक	(3) अर्थ (कारक चिह्न)	(4) एकवचन	(5) द्विवचन	(6) बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	ने	सु	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	कर्म	को	अम्	औट्	शस्
तृतीया	करण	से, के द्वारा	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अपादान	से	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	अधिकरण	में, पर ङि	ओस्	सुप्	

प्रमुख अजन्त संज्ञा शब्दों के साथ ''सुप्'' आदि विभक्ति प्रत्यय लगाकर जो रूप बनते हैं वे इस प्रकार हैं –

अजन्त पुल्लिंग अकारान्त ''राम'' शब्द

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रामः (राम ने)	रामौ (दो रामों ने)	रामाः (अनेक रामों ने)
द्वितीया	रामम् (राम को)	रामौ (दो रामों को)	रामान् (''रामों को)
तृतीया	रामेण (राम से के द्वारा)	रामाभ्याम् (दो रामो से)	रामैः (रामों से के द्वारा)
चतुर्थी	रामाय (राम के लिए)	रामाभ्याम् (दो रामों के लिए)	रामेभ्यः (रामों के लिए)
पञ्चमी	रामात् (राम से)	रामाभ्याम् (दो रामो से)	रामेभ्यः (रामों से)
षष्ठी	रामस्य (राम का, की, के)	रामयोः (दो रामों का)	रामाणाम् (रामों का)
सप्तमी	रामे (राम में, पर)	रामयोः (दो रामों में)	रामेषु (रामों में)
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ! (हे दोनो राम)	हे रामाः! (हे रामों।)

राम की तरह ही इन शब्दों के रूप चलते हैं –

नर, बाल, पुत्र, जनक, सज्जन, दुर्जन, शिष्य, सूर्य, खग, वंश, वानर, गज, मयूर, धर्म आदि।

अजन्त पुल्लिंग इकारान्त ''हरि'' शब्द

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु

सम्बोधन	हे हरि!	हे हरी!	हे हरयः!

इसी प्रकार अन्य इकारान्त पुल्लिंग शब्द यथा – कवि, मुनि, विधि, गिरी, असि, नृपति आदि शब्दों के रूप चलाए जाते हैं।

अजन्त पुल्लिंग उकारान्त ''भानु'' शब्द

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

शत्रु, रिपु, गुरू, जन्तु, ऋतु, यिशु, इत्यादि समस्त उकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप ''भानु'' की तरह चलते हैं।

अजन्त पुल्लिंग ऋकारान्त पितृ (पिता) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पित्भि
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	है पितरौ!	हे पितरः!

भ्रातृ (भाई) जामातृ (दामाद) नृ (आदमी) आदि पुल्लिंग ऋकारान्त शब्दों के रूप ''पितृ'' के समान होते हैं।

अजन्त स्त्रीलिंग आकारान्त ''रमा'' शब्द

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

इसी प्रकार लता, पाठशाला, क्रीड़ा, कक्षा, कन्या, वसुधा, सुधा, अजा (बकरी) प्रभा, आदि, स्त्रीलिंग, शब्दों के रूप चलते हैं।

अजन्त स्त्रीलिंग ईकारान्त "नदी" शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदी!	है नद्यौ!	हे नद्यः!

इसी प्रकार जानकी, पृथ्वी, वेणी, कमलिनी, कौमुदी (चाँदनी) अटवी (जंगल) आदि ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप चलते हैं।

अजन्त नपुंसकलिंग "ज्ञान" शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सम्बोधन	हे ज्ञान!	हे ज्ञाने!	हे ज्ञानानि!

इसी प्रकार फल, रत्न, सुवर्ण, कुसुम, नेत्र, उद्यान, मित्र, सुख, दुःख, पुष्प, गगन, वचन, आदि शब्दों के रूप चलते हैं।

हलन्त पुल्लिंग "वाच्" (वाणी) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक् (वाग्)	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्! हे वाग्!	हे वाचौ!	हे वाचः!

अजन्त स्त्रीलिंग दिक् (दिशा) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक् (दिग्)	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः

पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्! हे दिग्!	हे दिशौ!	हे दिशः।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 संज्ञा शब्द से क्या तात्पर्य है।

प्र.2 विभक्ति किसे कहते हैं।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उ.1 किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं। संस्कृत में संज्ञा शब्दों को दो भागों में विभक्त किया गया है। ''अजन्त'' संज्ञा शब्द और ''हलन्त'' संज्ञा शब्द। हलन्त संज्ञा शब्द व्यञ्जनान्त होता है।

उ.2 विभक्तियाँ कर्ता, कर्म आदि कारकों का अर्थ बतलाती हैं। इन्हें सुप् प्रत्यय लगाकर प्रकट किया जाता है।

सर्वनाम

हिन्दी में सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्द है, किन्तु संस्कृत में सर्वनाम शब्द से ऐसे शब्दों का बोध होता है जो ''सर्व'' शब्द से प्रारम्भ होते हैं। आचार्य पाणिनि ने लिखा है – ''सर्वादीनि सर्वनामानि'' अर्थात् सर्वादि शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है। इन सर्वादि शब्दों की संख्या 35 है।

इनमें से कुछ प्रमुख निम्नानुसार है –

(1)	सर्व	(2)	विश्व	(3)	उभौ	(4)	उभय
(5)	अन्य	(6)	अन्यतर	(7)	इतर	(8)	स्वत्
(9)	त्व	(10)	नेम	(11)	पूर्व	(12)	पर
(13)	अवर	(14)	दक्षिण	(15)	उत्तर	(16)	अपर
(17)	अधर	(18)	अन्तर	(19)	तद्	(20)	यद्
(21)	एतद्	(22)	इदम्	(23)	अदस्	(24)	युष्मद्
(25)	अस्मद्	(26)	भवत्	(27)	किम्!		

इनमें ''त्वन्'' और ''त्व'' अन्य के पर्यायवाची हैं। ''नेम'' अर्थ का और ''सम'' सर्व का पर्याय है। ''सम्'' तुल्य का समान अर्थ प्रकट करने पर सर्वनाम नहीं होगा।

प्रमुख सर्वनामों के रूप इस प्रकार है –

उत्तम पुरूष वाची अस्मद् शब्द

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम् नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

मध्यम पुरूष वाची ''युष्मद्'' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान् वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्मासु
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (वह) पुल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् (वह) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् (वह) नपुसंक लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात	ताभ्याम्	तभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नाम के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम शब्द नाम के ही लिंग वचन और विभक्ति ग्रहण करते हैं। समीप की वस्तु या व्यक्ति के लिए ''इदम्'' शब्द अधिक समीप की वस्तु के लिए ''एतद्'' शब्द तथा जो परोक्ष (सामने नहीं है) उसे बताने के लिए ''तद्'' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

सम्मान के अर्थ में युष्मद् के स्थान पर ''भवत्'' शब्द का प्रयोग होता है। ''भवत्'' शब्द के साथ प्रथम पुरूष की क्रिया का रूप लगता है।

''यत्'' शब्द के साथ ''तत्'' शब्द का नित्य सम्बन्ध होता है, यथा–''यत् वदामि तत् श्रणु।''

संस्कृत में ''यह'' या ''ऐसा'' का अनुवाद ''तत्'' शब्द से होता है, किन्तु कभी कभी ''इति'' शब्द से भी किया जाता है।

जैसे – ''ममेति निश्चयो, यदहं पठिष्यामि''

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 सर्वनाम की क्या परिभाषा है।

प्र.2 सर्वनाम शब्द कौन–कौन से हैं।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उ.1 पाणिनि के अनुसार ''सर्वादीनि सर्वनामानि'' अर्थात् सर्वादि शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है। में सर्वादि शब्द 35 हैं। सर्व, विश्व, उभौ, उभय आदि। नाम के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम शब्द नाम के लिंग, वचन, विभक्ति, ग्रहण करते हैं।

उ.2 इदम्, तत्, सर्व, भवत् आदि।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम अथवा क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिनकी विशेषता बतलाई जाए, उन्हें विशेष्य कहते हैं। जैसे नीलम् उत्पलम् में से (कमलम्) विशेष्य है, क्योंकि उत्पलम् की विशेषता बतलाई गई है। गुण शब्द से अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के गुणों का ग्रहण होता है। और विभक्ति विशेषण की भी होती है। कहा भी है –

जैसे – अयं शोभनः नरः।

केचिद् दुष्टाः नराः।

इमे शोभने स्त्रियौ।

काश्चित् दुष्टाः स्त्रियः।

इमानि शोभनानि पुष्पाणि।

ये सब सामान्य विशेषण के उदाहरण हैं। इनके अतिरिक्त तुलनात्मक और अतिशय बोधक विशेषण भी होते हैं, जैसे –

तुलनात्म्क विशेषण – जब दो की तुलना करके उनमें से एक की अधिकता या न्यूत्मक प्रगट की जाती है।

1. रामः श्यामात् पटुतरः।
2. नरः देवेभ्यः निकृष्टतरः।

अतिशय बोधक विशेषण – जब दो या दो से अधिक पदार्थों की तुलना करके एक को अधिक या न्यून बतलाया जाता है, जैसे –

1. रामः सर्वेषां भ्रातृणां ज्येष्ठः (सर्वेषु भ्रातास्ति)
2. बदरीफलं सर्वेषां फलानां (सर्वेषु फलेषु) निकृष्टतमम्।
3. गंगा सर्वासां नदीनां (सर्वासु नदीषु) पवित्रतमा।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण (एक केवल एकवचन होता है।)

विभक्ति	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्

षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि (केवल द्विवचन होता है)

विभक्ति	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (तीन) इसके सभी रूप बहुवचन में होते हैं

विभक्ति	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	त्रयः	त्रिस्त्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	त्रिस्त्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	त्रिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	त्रिभ्यः	त्रिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिसृषु	त्रिषु

चतुर (चार)

विभक्ति	**पुल्लिग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पंचमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

त्रि, चतुर्, पञ्चन, षट्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्, शब्दों के रूप केवल बहुवचन में ही होते हैं।

प्रथमा	–	पञ्च
द्वितीया	–	पञ्च
तृतीया	–	पञ्चभिः
चतुर्थी	–	पञ्चभ्यः
पंचमी	–	पञ्चभ्यः
षष्ठी	–	पञ्चानाम्
सप्तमी	–	पञ्चसु

पञ्चन् से दशन् संख्यावाचक शब्दों के रूप सभी लिंगों में एक समान होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. विशेषण की क्या परिभाषा है।
2. तुलनात्मक विशेषण से क्या अभिप्राय है।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. जो शब्द संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बतलाता है उसे विशेषण कहते हैं। जैसे – अयं शोभनः नरः।
   इमे शोभने स्त्रियौ।
   इमानि शोभनानि पुष्पाणि।
2. जब दो की तुलना उनमें से एक की न्यूनता का अधिकता प्रकट की जाती है, उसे तुलनात्मक विशेषण कहते हैं।
   जैसे – रामः श्यामात् पटुतरः।

क्रिया (धातु)

संस्कृत में क्रिया को धातु या तिङन्त पद कहते हैं हिन्दी भाषा में क्रियाओं के रूप कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार एवं कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं, जैसे – लड़का पढ़ता है। लड़की कहती है, आदि। किन्तु संस्कृत में क्रिया का लिंग भेद नहीं होता है। कर्ता चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग अथवा नपुंसक लिंग, क्रिया एक समान ही रहती है, जैसे –

1. बालकः पतति।
2. बालिका पतति।
3. फलं पतति।

संस्कृत में लगभग 2000 धातुएँ हैं। ये धातुएँ 10 (दस) समूहों में विभाजित हैं, इन समूहों को ही नवगण कहते हैं। यथा –

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादि दिवादि स्वादिरेवच।
तुदादिश्च रूधादिश्च तनादि क्रीचुरादयः।।

(1) भ्वादि (2) अदादि (3) जुहोत्यादि (4) दिवादि
(5) स्वादि (6) तुदादि (7) रूधादि (8) तनादि
(9) क्रयादि और (10) चुरादि गण।

क्रियाओं के दो रूप होते हैं –

(1) परस्मैपद और (2) आत्मनेपद

परस्मैपद में क्रिया का फल दूसरे के लिए होता है – जैसे सा पचति। इस वाक्य में पकाने का फल दूसरे के लिए होगा, किन्तु आत्मेन पद में क्रिया का फल अपने लिए होगा।
संस्कृत में दस लकार होते हैं। वे इस प्रकार हैं –

1. वर्तमान लट्लकार
2. अनद्यतन भूत लङ्लकार
3. सामान्य भूत लुङ्लकार
4. परोक्ष भूत लिट्लकार
5. सामान्य भविष्य लृट्लकार
6. अनद्यतन भविष्य लुट्लकार

7.	आज्ञार्थ	लोट्लकार
8.	''चाहिए'' अर्थ में	विधिलिङ्लकार
9.	आशीर्वाद अर्थ में	आशीर्लिङ् लकार
10.	क्रियातिपत्ति	लृङ्लकार

धातुओं के रूप परस्मैपद प्रत्यय

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	(सः) ति	(तौ) तः	(ते) अन्ति
मध्यम पुरूष	(त्वम्) सि	(युवाम्) थः	(यूयम्) थ
उत्तम पुरूष	(अहम्) मि	(आवाम्) वः	(वयम्) मः

परस्मैपदी अस् धातु = होना
''लट्'' लकार (वर्तमान काल)

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	असि (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे सब हैं)
मध्यम पुरूष	असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम सब हो)
उत्तम पुरूष	अस्मि (मैं हूँ)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम सब हैं)

परस्मै द ''पठ्'' (पढ़ना) धातु

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरूष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरूष	पठामि	पठावः	पठामः

'पठ्' (पढ़ना) धातु ''लङ्'' लकार (अनद्यतन भूत)

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरूष	अपठः	अपठतम्	अपठत्
उत्तम पुरूष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

''लृट्'' लकार (सामान्य भविष्यत्)

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरूष	पठिष्यति	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरूष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

'पठ्' (पढ़ना) धातु ''लोट्'' लकार (आज्ञार्थ)

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरूष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरूष	पठानि	पठाव	पठाम

'पठ्' (पढ़ना) धातु ''विधिलिङ्'' लकार (अनुज्ञा, विध्यर्थ)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरूष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरूष	पठेयम्	पठेव	पठेम

आत्मनेपदी ''लभ्'' (प्राप्त करना) धातु
''लट्'' लकार (वर्तमान काल)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरूष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरूष	लभे	लभावहे	लभामहे

'लभ्' (प्राप्त करना) धातु ''लङ्'' लकार (भूतकाल्)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरूष	अलभथाः	अलभेताम्	अलभवम्
उत्तम पुरूष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

'लभ्' (प्राप्त करना) ''लृट्'' लकार (सामान्य भविष्यत्)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	लप्स्यते	लप्सयेते	लप्सयन्ते
मध्यम पुरूष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरूष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

'लभ्' (प्राप्त करना) ''लोट्'' लकार (आज्ञार्थ)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरूष	लभस्व	लभथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरूष	लभै	लभावहै	लभामहै

'लभ्' (प्राप्त करना) ''विधिलिङ्'' लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरूष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरूष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

परस्मैपदी ''दृश्'' (देखना) धातु लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरूष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरूष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लोट् विधिलिङ् लकारों के प्रथम पुरूष एकवचन के रूप दिए जा रहे हैं अन्य रूप ''पठ्'' धातु के रूपों के अनुसार ही होंगे।

लोट्	प्र. पु.	एकवचन	पश्यतु
विधिलिङ्	प्र. पु.	एकवचन	पश्येत्
लङ्	प्र. पु.	एकवचन	अपश्यत्

'दृश्' (देखना) धातु ''लृट्'' लकार (सामान्य भविष्यत्)

पुरूष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरूष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरूष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

धातु (क्रिया) के तीन वाच्य होते हैं।

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। भाववाच्य तभी होता है, जब क्रिया अकर्मक हो।

जैसे –

कर्तृवाच्य – विवेकः ग्रामं गच्छति।
कर्मवाच्य – बालकेन पुस्तकं पठ्यते
भाववाच्य – चन्द्रेण क्षीयते

अभ्यास प्रश्न

1. क्रियाओं में कितने पद होते हैं।
2. आत्मनेपदी धातु रूप के अन्तर्गत ''लभ्'' धातुरूप लट्लकार (वर्तमान काल) में लिखिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क्रियाओं में निम्न दो पद होते हैं।
   1. परस्मैपद 2. आत्मने पद
2. लभ् धातु लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
म. पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ. पु.	लभे	लभावहे	लभामहे

अस् धातु लट्लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	अस्ति	स्तः	सन्ति
म. पु.	असि	स्थः	स्थ
उ. पु.	अस्मि	स्वः	स्मः

अस् धातु (होना) लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म. पु.	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ. पु.	आसम्	आस्व	आस्म

अस् (होना) धातु –लृट्लकार (भविष्य काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म. पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ. पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लभ् (प्राप्त करना) धातु लट्लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
म. पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ. पु.	लभे	लभावहे	लभामहे

वचन एवं लिङ्

''छात्रः पुस्तकानि क्रीणाति'' (विद्यार्थी पुस्तकें खरीदता है)

''छात्रः पुस्तके अक्रीणात्'' (छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं)

इन वाक्यों में ''छात्र'' एकवचन ''पुस्तकें'' द्विवचन और ''पुस्तकानि'' बहुवचन है।

इस प्रकार संस्कृत में एकवचन, द्विवचन, बहुवचन, ऐसे तीन वचन होते हैं।

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग द्विवचन में होता है। जैसे – श्रोत्र, चक्षुस्, कर, बहु, स्तन, चरण आदि। जैसे – ममाक्षिणी व्यथेते (मेरी आँखें दुखती हैं) श्रान्तायास्तस्याश्चरणौ न प्रस्वरतः (उस थकी हुई के पाँव आगे नहीं बढते हैं) संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके बहुवचन का ही प्रयोग होता है, जैसे – दारा (पत्नी) अक्षत (पूजा के चावल लाजा) (खील) पु. अप् (जल) सभी, सुमनस् (फूल) प्रजा, आदि।

हिन्दी में दो लिंग हैं – पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। संस्कृत में इन दो लिंगों के अतिरिक्त नपुंसकलिंग भी होता है। समस्त संज्ञा शब्द इन तीनों लिंगों में विभक्त हैं।

एक ही वस्तु का बोध कराने वाला कोई शब्द पुल्लिंग में है, स्त्रीलिंग में, तो कोई नपुंसक लिंग में है।

जैसे – तनु (स्त्री) देह (पु.) और शरिरम् (नपु.) सभी शरीरवाची हैं।

''दार'' शब्द पुल्लिंग में होते हुए भी पत्नी का अर्थ बतलाता है। ''देवता'' शब्द स्त्रीलिंग है, किन्तु देव (पुरूष) का अर्थ प्रगट करता है।

पुल्लिंग शब्द –

घञ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिंग में होते हैं, जैसे – पाक, त्याग अवन्त शब्द

जैसे – करः, यरः

नइन्त शब्द, जैसे – यज्ञः यत्नः।

क्यन्त शब्द, जैसे – जलधिः, निधिः

''न'' तथा ''उ'' जिनके अन्त में हो, जैसे राजन्, प्रभु आदि देव, असुर, आत्म, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, दिवस, आदि शब्द और उनका अर्थ, बतलाने वाले शब्द पुल्लिंग में होते हैं।

स्त्रीलिंग शब्द –

अनि ऊ, मि, नि, वि, और ई प्रत्ययान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे – अवनि, चमूः, भूमिः, कृतिः, लक्ष्मीः। ऊ और आ – अन्य वाले शब्द जैसे – कुरूः वामोरू, विद्या, अजा

कन्या आदि। तल् प्रत्ययान्त जैसे – पवित्रता, जनता, आदि, भूमि, विद्युत, सरित् और बनिता का अर्थ रखने वाले शब्द स्त्रीलिंग में होते हैं। जैसे – पृथ्वी तडित्, नदी, स्त्री आदि।

नपुसंक लिंग शब्द –

अव्ययीभाव समास तथा एकवचनान्त द्वन्द्व व एक वचनान्त द्विगु समास हमेशा नपुंसक लिंग में होते हैं।

जैसे – पाणिपादम्, त्रिभुवनम् आदि।

''अस्'' से अन्त होने वाले शब्द जैसे – मनस्, तपस् तथा मुख, नयन लोह, वन, मांस, रूधिर, धन, अन्न, बल, कुसुम, रंग ये शब्द प्रायः नपुंसक लिङ्ग में होते हैं। फलों की जाति बतलाने वाले शब्द नपुसंक लिंग में होते हैं। जैसे – आम्रम् आमलकम्।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 वचन कितने प्रकार के होते हैं। प्रत्येक का एक उदाहरण लिखिए।

प्र.2 लिंग कितने प्रकार के होते हैं। किसी एक प्रकार के दो उदाहरण लिखिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. वचन तीन प्रकार के होते हैं।
   एकवचन – द्विवचन, बहुवचन
   एकवचन – रामः फलं खादति।
   द्विवचन – रामः श्यामश्च फले खादतः।
   बहुवचन – बालकाः फलानि खादन्ति।
2. लिंग तीन प्रकार के होते हैं।
   पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग।
   पुल्लिंग उदाहरण – बालकः वृक्षः
   स्त्रीलिंग उदाहरण – नदी, मतिः, रमा
   नपुंसकलिंग उदाहरण – वन, पुस्तक, धन

पुनरवलोकन

संज्ञा– किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं। अर्थात् किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। संस्कृत में संज्ञा शब्द दो भागों में विभक्त हैं – अजन्त संज्ञा शब्द और हलन्त संज्ञा शब्द।

सर्वनाम– संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे सः तौ ते। संस्कृत में सर्वनाम शब्द में ऐसे शब्द का बोध होता है जो ''सर्व'' शब्द से प्रारम्भ हों। सर्वादि शब्द 35 हैं।

विशेषण– जो शब्द संज्ञा सर्वनाम या क्रिया की विशेषता बतलाता है उसे विशेषण कहते हैं।

क्रिया– संस्कृत में क्रिया को धातु या तिङन्त पद कहते हैं। संस्कृत में क्रिया में लिंग नहीं होता है। कर्ता चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग में अथवा नपुंसक लिंग में।

वचन और लिंग – संस्कृत में वचन तीन हैं इसी प्रकार लिंग भी तीन हैं।

वचन – एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

लिंग – पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग।

आत्मपरीक्षण के प्रश्न

प्र.1 अजन्त और हलन्त शब्दों से क्या अभिप्राय है ?

प्र.2 विभक्ति रूप लिखिए –

1. मुनि – तृतीया एकवचन
2. पितृ – षष्ठी बहुवचन
3. भानु – पंचमी एकवचन
4. बालिका – सप्तमी एकवचन
5. नदी – द्वितीया बहुवचन

प्र.3 कारक चिह्नों के नाम लिखिए। विभक्ति के नाम लिखिए।

प्र.4 उपसर्ग किसे कहते हैं ? प्रति, सम्, प्र
उपसर्ग लगाकर शब्द निर्माण कीजिए।

प्र.5 क्त्वा, तुमुन्, प्रत्ययों से शब्द बनाइये।

प्र.6 निम्नलिखित शब्दों में से सर्वनाम छांटकर पृथक् – पृथक् लिखिए।
सर्व, यत्, चतुर्, एतत्, किम्, दुष्टः, भवत्, शोभन, श्याम।

प्र.7 निम्नलिखित सर्वनाम एवं विशेषण शब्दों में विभक्ति पहचानिए।
मम, तया, तस्मै, त्वयि, मयि, एकस्यै, एतस्मात्, चतसृणाम्, पुस्तकानि।

प्र.8 निर्देशानुसार धातुरूप लिखिए।

1. ''अस्'' धातु लट्लकार उत्तम पुरूष एकवचन।
2. ''पठ्'' धातु लङ्लकार प्रथम पुरूष बहुवचन।

प्र.9 ऐसे चार शब्द लिखिए जिनका प्रयोग केवल द्विवचनों ही होता हो।

प्र.10 केवल बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले चार शब्द लिखिए।

प्र.11 निम्नांकित शब्दों का लिंग बताइये –
तनुः शरीर, वन, देवता, देह।

प्र.12 दो हलन्त स्त्रीलिंग शब्दों के नाम लिखिए।

आत्मपरीक्षण प्रश्नों के उत्तर

उ.1 स्वरान्त शब्द जैसे राम, हरि, भानु, पितृ, अजन्त हैं और व्यंजनान्त शब्द जैसे – राजन्, वाच्, दिश्, मनस् आदि हलन्त शब्द कहलाते हैं।

उ.2 (1) मुनिना (2) पितृणाम् (3) गुरवे
(4) वसुधायाम् (5) कौमुदीम् (6) नदीम्

उ.3 1. सर्वनाम शब्द – सर्व, यत्, एतद्, किम्, भवत्,।
2. विशेषण शब्द – चतुर्, दुष्टः, शोभनः, श्यामः।

उ.4

मम	–	षष्ठी	एकवचन
तया	–	तृतीया	एकवचन
तस्मै	–	चतुर्थी	एकवचन
त्वयि	–	सप्तमी	एकवचन
एकस्यै	–	चतुर्थी	एकवचन
चतसृणाम्	–	षष्ठी	बहुवचन
शोभनानि	–	प्रथमा एवं द्वितीया	बहुवचन

उ.5 अस्मि
अपठन्

उ.6 श्रोत्र, चक्षुष्, कर, एवं, चरण शब्दों का प्रयोग केवल द्विवचन में ही होता है।

उ.7 दार, अक्षत्, अप्, असु, आदि शब्दों का प्रयोग केवल बहुवचन में ही होता है।

उ.8 तनुः (स्त्रीलिंग) शरीर (नपुंसक लिंग) वन (नपुंसक लिंग) देवता (स्त्रीलिंग) देहः (पुल्लिंग)

उ.9 जलधिः, निधिः

उ.10 सरित्, विद्युत्

अभ्यास प्रश्न

पाठ –

छात्र का नाम ..... विषयः– संस्कृत

छात्र का पंजीयन क्रमांक ..... पूर्णांक :–

नोट – निम्नलिखित गद्यांश एवं पद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखकर आंतरिक मूल्यांकन के समय सम्बन्धित संस्था में प्रस्तुत करें। इन्हें मण्डल कार्यालय में भेजने की आवश्यकता नहीं है। दिए गए रिक्त स्थानों मे ही उत्तर लिखने हैं उत्तर संस्कृत में ही लिखने हैं।

मूल्यांकनकर्ता के हस्ताक्षर
नाम .....
पता .....
.....
मूल्यांकन कर्ता की टिप्पणी –
.....

प्र.1 पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

	प्रश्न	**उत्तर**
प्र.1	सन्मित्रं कस्मै योजयते ?	सन्मित्रं मित्रस्य हिताय योजयते।
प्र.2	सन्मित्रं किं निगूहति ?	सन्मिंत्र मित्रस्य गुह्यं निगूहति।
प्र.3	सन्मित्रलक्षणं के प्रवदन्ति ?	सन्मित्र लक्षणं सन्तः प्रवदन्ति
प्र.4	सन्मित्रं कस्मात् निवारयति ?	सन्मित्रं पापात् निवारयति।
प्र.5	सन्मित्रं कान् प्रकटीकरोति ?	सन्मित्रं स्वमित्रस्य गुणान् प्रकटीकरोति।

प्र.2 ''एकदा स तपस्वी गंगातीरे जपार्थमुपविष्टः। तस्मिन् काले कयाचित् बलाकया उड्डीयमानया तदङ्गोपरि पुरीषोत्सर्गः कृतः। स च तपस्वी क्रोधाकुलितनेत्रः यावदूर्ध्व पश्यति तावत् तत्क्रोधाग्निना भस्मीभूतां बलाकां भूमौ पतितां दृष्ट्वा नारायण द्विजगृहे भिक्षार्थं ययौ।''

प्र.1 स तपस्वी कुत्र जपार्थमुपविष्टः ?

उ.1 स तपस्वी गङ्गातीरे जपार्थमुपविष्टः।

प्र.2 बलाकया उड्डीयमानया कः कृतः ?

उ.2 बलाकया उड्डीयमानया तदङ्गोपरि पुरीषोत्सर्गः कृतः।

प्र.3 क्रोधाकुलित नेत्रः कः ?

उ.3 क्रोधाकुलितनेत्रः तपस्वी आसीत्।

प्र.4 नारायणद्विजगृहे तपस्वी किमर्थं ययौ ?

उ.4 नारायणद्विजगृहे तपस्वी भिक्षार्थं ययौ।

प्र.5 ''गङ्गातीरे'' अस्मिन् पदे का विभक्तिः ?

उ.5 ''गङ्गातीरे'' अस्मिन् पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति।

.....

.....

.....

.....

प्र.3 अजन्त और हलन्त शब्दों से क्या अभिप्राय है ?

उ. स्वरान्त शब्दों के अजन्त एवं व्यंजनान्त शब्दों को हलन्त कहते हैं।
राम, बालक, रमा, हरि, नदी, पितृ – अजन्त शब्द हैं।
राजन्, वाच्, दिश्, सरित्, ये हलन्त शब्द हैं।

.....

.....

प्र.4 सर्वनाम की क्या परिभाषा है ?

उ. पाणिनि के अनुसार ''सर्वादीनि सर्वनामानि'' अर्थात् सर्वादि शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है। उनकी कुल संख्या 35 है।
उदाहरण – सर्व, विश्व, उभय आदि।

.....

.....

प्र.5 तुलनात्मक विशेषण क्या है ? उदाहरण सहित लिखिए।

उ. जब दो व्यक्तियों अथवा वस्तुओं की तुलना की जाती है। और उनमें से एक व्यक्ति या वस्तु की अधिकता या श्रेष्ठता अथवा न्यूनता प्रकट की जाती है तो उसे तुलनात्मक विशेषण कहते हैं, जैसे –
रामः श्यामातः पटुतरः।
सुनन्दा लक्ष्म्याः श्रेष्ठा।

प्र.6 संस्कृत में कितने वचन व लिंग होते हैं। नाम सहित उत्तर लिखिए।

उ. संस्कृत में तीन वचन एवं लिंग होते हैं।

वचन –	एकवचन	2.	द्विवचन	3.	बहुवचन
लिंग –	पुल्लिंग	2.	स्त्रीलिंग	3.	नपुंसक लिंग

प्र.7 उच्चारण का क्या महत्त्व है। विभिन्न वर्णों का उच्चारण स्थान लिखिए।

उ. उच्चारण का भाषा में बडा महत्व होता है। शुद्ध उच्चारण से भाषा में उत्कृष्टता आती है।

	वर्ण		उ स्थान
वर्णोच्चारण स्थान –	अ	कवर्ग है और विसर्ग (:)	कण्ठ
	इ	चवर्ग है य, श्	तालू
	ऋ	टवर्ग ष्	मूर्धा
	लृ	तवर्ग स्	दन्ताः
	उ	पवर्ग	दोनों ओष्ठ
	व		दन्त + ओष्ठ

.....

.....

.....

.....

.....

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एजूकेशन परीक्षा

द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र – दशम्

विषय – संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसका शिक्षण)

इकाई – सप्तमी

विषयांश – प्रथम उप इकाई – संधि एवं उसका सामान्य परिचय

द्वितीय उप इकाई – समास की सामान्य जानकारी

तृतीय उप इकाई – हिन्दी एवं संस्कृत सम्बन्धी समानताएँ एवं असमानताएँ।

चतुर्थ उप इकाई – काव्य तत्वों की सामान्य जानकारी

प्रिय छात्राध्यापको !

पिछली इकाई मे आप संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, वचन एवं लिङ्ग का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में आप संधि एवं समास का सामान्य परिचय, काव्य में निहित तत्त्वों की जानकारी तथा संस्कृत एवं हिन्दी की समानताओं और असमानताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

सर्वनाम, प्रथम उप इकाई के अन्तर्गत हम ''सन्धि का सामान्य परिचय'' से पाठ का शुभारम्भ करते हैं।

प्रथम उप इकाई – 'सन्धि का सामान्य परिचय'

परिभाषा – 'दो या दो से अधिक वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं।

सन्धि का सामान्य अर्थ है–मेल सम् उपसर्ग तथा धा धातु के मिलने से सन्धि शब्द बना है। इस प्रकार सन्धि का सामान्य अर्थ हुआ ''दो वर्णों का साथ–साथ मिलना''।

अतः सन्धि की परिभाषा है – ''परः सन्निकर्षः संहिता''।

सन्धि के प्रकार – परस्पर निकट आये वर्णों की दृष्टि से सन्धियाँ निम्नलिखित वर्गों में विभक्त की जा सकती है –

1. स्वर + स्वर = स्वर सन्धि
2. व्यञ्जन + स्वर अथवा व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि
3. विसर्ग + स्वर, विसर्ग व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि

इस प्रकार से स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि होती है।

अ. स्वर सन्धि –

स्वर सन्धि मुख्य रूप से छह प्रकार की होती हैं –

1. दीर्घ स्वर सन्धि

2. गुण स्वर सन्धि
3. वृद्धि स्वर सन्धि
4. यण् स्वर सन्धि
5. अयादि स्वर सन्धि
6. पूर्वरूप सन्धि

1. दीर्घस्वर सन्धि – यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के पश्चात् सवर्ण स्वर (समान स्वर) आये तो उन दोनों के स्थान पर दीर्घ हो जाता है, यथा –

1. अ + अ = आ – दैत्य + अरिः = दैत्यारिः
2. अ + आ = आ – शिव + आलयः = शिवालयः
3. इ/ई + इ/ई = ई – कपि + ईशः = कपीशः
4. इ/ई + इ/ई = ई – मही + इन्द्रः = महीन्द्रः
5. उ/ऊ + उ/ऊ = विष्णु + उदयः = विष्णूदयः
6. ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = होतृ + ऋकारः = होतृकारः

2. गुण स्वर सन्धि – यदि ह्रस्व या दीर्घ 'अ' के पश्चात् (1) यदि इ या ई आवे तो दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है। (2) यदि उ या ऊ आवे तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है। (3) यदि ह्रस्व या दीर्घ 'ऋ' आवे तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है। (4) और यदि 'ऌ' आवे तो दोनों के स्थान पर 'अल्' हो जाता है, यथा –

1. अ/आ + इ/ई = ए – सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः
   गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः
2. अ/आ + उ/ऊ = ओ – भाग्य + उदयः = भाग्योदयः
   महा + उत्सवः = महोत्सवः
3. अ/आ + ऋ/ॠ = अर् – देव + ऋषिः = देवर्षिः
   सप्त + ऋषिः सप्तर्षिः
4. अ/आ + ऌ/ॡ = अल् – तव + ऌकारः = तवल्कारः

3. वृद्धि स्वर सन्धि – यदि ह्रस्व या दीर्घ 'अ' के बाद ए या ऐ आवे तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। इसी प्रकार ओ या औ आवे तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। यथा–

1. अ/आ + ए/ऐ = ऐ – तत्र + एकः = तत्रैकः
2. अ/आ + ओ/औ = औ – देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्

4. यण् स्वर सन्धि – जब ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद कोई असमान स्वर आवे तो इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है, यथा –

1. इ = य् – इति + अलम् = इत्यलम्
2. उ = व् – साधु + अवदत् = साध्वदत्
3. ऋ = र् – मातृ + अनुमतिः = मात्रनुमतिः
4. ऌ = ल् – ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

5. अयादि स्वर सन्धि – यदि ए, ऐ, ओ, औ इन स्वरों के पश्चात् कोई असमान स्वर आये तो उन के स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव, आव्, हो जाता है, यथा –

1. ए + अ = अय् – ने + अनः = नयनः
2. ऐ + अ = आय् – नै + अकः = नायकः
3. ओ + अ = अव् – पो + अनः = पवनः

4. औ + अ = आव् – पौ + अकः = पावकः

6. पूर्वरूप स्वर सन्धि – यदि पद के अन्त में स्थित 'एकार' या 'ओकार' के बाद 'अ' आवे तो 'अ' का लोप हो जाता है, और 'अ' के स्थान पर अवग्रह चिह्न(ऽ) लग जाता है। यथा –

1. ए + अ – हरे + अव = हरेऽव
2. ओ + अ – विष्णो + अव = विष्णोऽव

(ब) व्यञ्जन सन्धि – जो वर्ण स्वर की सहायता से उच्चरित किए जाते हैं वे व्यञ्जन वर्ण कहलाते हैं। व्यञ्जन और स्वर के मध्य अथवा व्यञ्जन और व्यञ्जन के मध्य में जो सन्धि होती है, वह व्यञ्जन सन्धि होती है। व्यञ्जन सन्धि के अनेक भेद हैं। उनमें मुख्य निम्नानुसार हैं –

1. 'स्' अथवा त् वर्ग के साथ (पहले या बाद में) श् या च् वर्ग हो तो स् का श् में त वर्ग का च वर्ग में परिवर्तन हो जाता है।
   यथा – कस् + चित् = कश्चित्
   उत् + चारणम् = उच्चारणम्
2. यदि स् अथवा त् वर्ग के साथ यदि ष् अथवा ट वर्ग हो तो 'स' वर्ण 'ष', त वर्ग ट वर्ग हो जाता है, यथा –
   रामस् + टीकते = रामष्टीकते
   तत् + टीका = तट्टीका
   कृष् + नः = कृष्णः
3. (अ) वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ण का तृतीय वर्ण होता है यदि पद के अन्त में स्वर परे हो, यथा –
   सुप् + अन्तः = सुबन्तः
   दिक् + गजः = दिग्गजः
   जगत् + ईशः = जगदीशः
   (ब) वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण तृतीय होता है यदि अन्त में वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वर्ण हो, यथा –
   बुध् + धिः = बुद्धिः
   लभ् + धः = लब्धः
   दुध् + धम् = दुग्धम्
4. वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ण उस वर्ग का प्रथम वर्ण होता है, यदि अन्त में प्रथम द्वितीय तथा श्, ष्, स्, वर्ण हों तब, यथा –
   सद् + कारः = सत्कारः
   उद् + पन्नः = उत्पन्नः
   तद् + परः = तत्परः
   दिग् + पालः = दिक्पालः
5. शब्द के अन्त में यदि मकार कोई व्यञ्जन वर्ण हो तब 'म्' वर्ण अनुस्वार (ं) होता है किन्तु अन्त में यदि स्वर है तो यह नियम युक्त नहीं है। यथा –
   सत्यम् + वद = सत्यं वद
   कार्यम् + कुरू = कार्यं कुरू

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

(स) विसर्ग सन्धि – विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यञ्जन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, वह विसर्ग सन्धि कहलाती है, यथा –

मनः + हरः = मनोहरः

(अ) विसर्ग के बाद 'च' अथवा 'छ' हो तब विसर्ग के स्थान पर 'श' होता है, यथा –

बालः + चलति = बालश्चलति

भानुः + चलति = भानुश्चलति

(ब) यदि विसर्ग के पश्चात् 'त' अथवा 'थ' हो तब विसर्ग के स्थान पर 'स' होता है।

यथा – निः + तारः = निस्तारः

नमः + ते = नमस्ते

(स) यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो, और विसर्ग के पश्चात् 'अ' के अतिरिक्त कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

यथा – कृष्णः + उवाच = कृष्ण उवाच

व्यापकः + ईश्वरः = व्यापक ईश्वरः

(द) यदि विसर्ग के पूर्व अ या आ छोड़ कर कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग के पश्चात् कोई मृदु व्यञ्जन हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है।

यथा – निः + मलम् = निर्मलम्

निः + धनम् = निर्धनम्

अभ्यास प्रश्न

1. सन्धि को परिभाषित कीजिए।
2. अयादि स्वर सन्धि को उदाहरण सहित समझाइए।
3. विसर्ग सन्धि के कोई चार उदाहरण लिखिए।
4. निम्न लिखित शब्दों में सन्धि कीजिए।

अ. पुरः + हितः

ब. दुः + थलः

स. नमः + ते

द. कः + चित्

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सन्धि की परिभाषा – दो या दो से अधिक वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। अर्थात् जहाँ दो वर्णों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है वह सन्धि कहलाती है।
2. जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई असमान स्वर आये तो इन स्वरों के स्थान पर क्रमशः अय्, आय् अव्, आव् हो जाते हैं, इसे अयादि स्वर सन्धि कहते हैं। यथा –

शयनम्, गायकः, भवनम्, पावनः

3. विसर्ग सन्धि के निम्न लिखित उदाहरण दृष्टव्य हैं –

मनोहरः, यशोयशः, रामो गच्छति, धनुष्टंकारः

4. अ) पुरः + हितः = पुरोहितः

ब) दुः + थलः = दुस्थलः

स) नमः + ते = नमस्ते

ब) कः + चित् = कश्चित्

द्वितीय उप इकाई
(समास का सामान्य परिचय)

परिचय – समास का सामान्य अर्थ है– संक्षेपीकरण। अर्थात् अनेक पदों का एक होना ही समास कहलाता है।

समास को स्पष्ट करने वाले शब्दों को विग्रह शब्द कहते हैं। उन विग्रह शब्दों में अर्थानुसार विभक्तियां लगाई जाती हैं जो समास के प्रत्येक पद का पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट करती हैं।

1. अव्ययी भाव समास
2. तत्पुरूष समास
3. द्विगु समास
4. द्वन्द्व समास
5. कर्मधारय समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास –

जिस सामासिक पद का प्रथम पद अव्यय तथा द्वितीय पद संज्ञा होता है वह अव्ययी भाव समास कहलाता है। दूसरे शब्दों में जिस सामासिक पद का प्रथम पद मुख्य होता है वह अव्ययी भाव समास कहलाता है, यथा –

यथाशक्तिः = शक्तिम् अनतिक्रम्य
प्रतिदिनम् = दिनं दिनं प्रति

2. तत्पुरूष समास –

जिस सामासिक पद का दूसरा पद प्रधान होता है वह तत्पुरूष समास कहलाता है। तत्पुरूष समास के ऐसे सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए विग्रह करने पर द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक छह भेद होते हैं –

1. द्वितीया तत्पुरूष – कृष्णम् आश्रितः = कृष्णाश्रितः
2. तृतीया तत्पुरूष – अग्निना दग्धः = अग्निदग्धः
3. चतुर्थी तत्पुरूष – दीनाय दानम् = दीनदानम्
4. पञ्चमी तत्पुरूष – चौरात् भयम् = चौरभयम्
5. षष्ठी तत्पुरूष – परेषाम् उपकारः = परोपकारः
6. सप्तमी तत्पुरूष – व्यवहारे कुशलः = व्यवहार कुशलः

3. द्विगु समास –

''संख्या पूर्वे द्विगु'' अर्थात् जिस सामासिक पद का प्रथम पद संख्यावाची हो तथा द्वितीय पद संज्ञा होता है, वह द्विगु समास कहलाता है। यह निम्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है –

1. पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः = पञ्चग्रामम् (पाँच ग्रामों का समूह)
2. त्रयाणां पथाम् समाहारः = त्रिपथम्

– यदि उत्तर पद अकारान्त हो तो समाहार द्विगु में उत्तर पद का अकारान्त ईकारान्त में परिवर्तित होने पर समस्त पद स्त्रीलिंग हो जाता है, यथा –

1. पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी 2. पञ्चानां मूलानां समाहार : = पञ्चमूली

4. कर्मधारय समास –

''तत्पुरूष समानाधिकरणः कर्मधारयः''। अर्थात् जिस सामासिक पद का प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य हो, वह कर्मधारय समास कहलाता है। यथा –

घनश्यामः = घन इव श्यामः
नीलोत्पलम् = नीलम् उत्पलम्

5. द्वन्द्व समास –

"जिस सामासिक पद के दोनों पद प्रधान हों। अर्थात् द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक संज्ञा शब्द होते हैं और वे दोनों पद प्रधान होते हैं, ये शब्द विग्रह करने पर च (और) से जोड़ दिये जाते हैं, यथा –

रामकृष्णौ – रामश्च कृष्णश्च
पितरौ – माता च पिता च

6. बहुब्रीहि समास –

"बहुब्रीहि समास में दो या दो से अधिक शब्द होते हैं। पहला विशेषण रूप होता है, जो दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है। वे दोनों मिलकर अन्य किसी तीसरे शब्द की विशेषता प्रकट करते हैं, यथा –

पीताम्बरः – पीतम् अम्बरम् यस्य सः
दशाननः – दशआननानि यस्य सः

नञ तत्पुरूष – नञ का संक्षिप्त रूप न है। समास में द्वितीय पद का प्रथम वर्ण व्यञ्जन होने पर 'न' का अ हो जाता है।

1. न सत्यम् = असत्यम्
2. न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः
3. न प्रियः = अप्रियः

यदि 'न' के आगे आने वाला पद किसी स्वर से प्रारम्भ होता है तो न के स्थान पर अन् हो जाता है, यथा–

1. न अर्थः = अनर्थः 2. न ईश्वरः = अनीश्वरः

अभ्यास प्रश्न

1– निम्नलिखित शब्दों के विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए।
अ. महापुरूषः ब. चन्द्रशेखरः स. पाषाणप्रतिमा
2– समास के कितने भेद होते हैं ? उनके नाम लिखिए –
3– निम्न शब्दों में समास का नाम लिखिए।
अ. वृक्षात् पतितः ब. घन इव श्यामः स. राज्ञः पुरूषः

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) महान् चासौ पुरूषः = कर्मधारय समासः
(ख) चन्द्रः शेखरे यस्य सः = बहुब्रीहि समासः
(ग) पाषाणस्य प्रतिमा = षष्ठी तत्पुरूषः
2. समास के छह भेद होते हैं, उनके नाम निम्नानुसार हैं –
1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरूष समास 3. द्विगु समास
4. द्वन्द्व समास 5. कर्मधारय समास 6. बहुब्रीहि समास

3. अ. वृक्षात् पतितः – वृक्ष पतितः – पञ्चमी तत्पुरूष
ब. घन इव श्यामः – घनश्यामः – कर्मधारय समास

स. राज्ञः पुरूषः – राजपुरूषः – षष्ठी तत्पुरूष

तृतीय उप इकाई
(हिन्दी एवं संस्कृत सम्बन्धी समानताएँ एवं असमानताएँ)

1. हिन्दी एवं संस्कृत में संज्ञाएँ होती हैं। हिन्दी की संज्ञाएँ विभक्ति रहित होती हैं। इन में पृथक् से प्रत्यय लगाये जाते हैं, जबकि संस्कृत की संज्ञाओं के रूप विभक्तियों के आधार पर एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन में बँटे होते हैं।
2. हिन्दी एवं संस्कृत के सर्वनामों में अन्तर है। हिन्दी में सामान्य प्रचलन में एकवचन तथा द्विवचन का प्रयोग नहीं होता, इसी प्रकार हिन्दी सर्वनाम में लिंग नहीं होता है। जबकि संस्कृत में कुछ सर्वनाम लिंग के अनुसार अपने रूप बदलते हैं।
3. हिन्दी क्रियाओं का कोई वर्गीकरण नहीं है जबकि संस्कृत धातुएँ गणों में, समूह में विभक्त हैं।
4. हिन्दी में अव्ययों की संख्या कम है, जबकि संस्कृत में यह अधिक संख्या में पाये जाते हैं।
5. हिन्दी में दो लिंग–पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग होते हैं, संस्कृत में तीन लिंग–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसक लिंग होते हैं।
6. हिन्दी में दो वचन होते हैं – 1. एकवचन 2. बहुवचन, संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन होते हैं।
7. हिन्दी में सम्बोधन को कारक माना जाता है, जबकि संस्कृत में सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता है।
8. हिन्दी एवं संस्कृत में शब्द शक्तियाँ, गुण, रीतियाँ समान रूप से पाई जाती हैं।
9. हिन्दी में अलंकारों की संख्या कम है, जबकि संस्कृत में अधिक संख्या में अलंकार पाये जाते हैं।
10. हिन्दी में छन्द, चौपाई, दोहा, सोरठा, उल्लाला जैसे छन्द संस्कृत में नहीं पाये जाते हैं। हिन्दी में मात्रिक छन्द हैं, जबकि संस्कृत में वर्णिक छन्द होते हैं।
11. अर्थ सम्बन्धी भिन्नता भी संस्कृत और हिन्दी में पाई जाती है। जैसे संस्कृत में निर्भर शब्द का अर्थ पूर्ण जबकि हिन्दी में उस का अर्थ आश्रित है। लिंग सम्बन्धी अन्तर में संस्कृत में अग्नि पुल्लिंग है जबकि हिन्दी में स्त्रीलिंग है।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1– निम्न लिखित वाक्यों में सत्य/असत्य छाँटिए –

अ. हिन्दी की संज्ञाएँ विभक्ति रहित होती हैं।
ब. संस्कृत में दो लिंग होते हैं।
स. संस्कृत में विभक्तियाँ कारक आठ होते हैं।
द. हिन्दी एवं संस्कृत में शब्द शक्तियाँ समान रूप से पाई जाती हैं।

प्र.2– (अ) संस्कृत में निर्भर शब्द का अर्थ बताइए।
(ब) संस्कृत में 'अग्नि' शब्द किस लिंग में है ?

उत्तर

प्र.1– अ. सत्य
ब. असत्य
स. असत्य
द. सत्य

प्र.2– अ. पूर्ण
ब. पुल्लिंग

चतुर्थ उप इकाई
(काव्य तत्त्वों की सामान्य जानकारी)

काव्य की परिभाषा – आचार्य विश्वनाथ के अनुसार – 'वाक्यं' रसात्मक काव्यम्' अर्थात रस युक्त वाक्य ही काव्य है।''

जिसमें ज्ञान की प्रधानता हो वह शास्त्र है और जिसमें सरसता की प्रधानता हो वह काव्य या साहित्य है। काव्य का स्वभाव बहुत व्यापक है। काव्य जितना व्यापक है उतना ही सूक्ष्म है। वह वाणी का विषय नहीं है। काव्य का स्वरूप प्रत्येक क्षण परिवर्तनमान सौन्दर्य के समान है।

1. भामह द्वारा काव्य की परिभाषा – 'शब्दार्थै संहितौ काव्यम् – शब्दार्थ सहित रचना काव्य है।
2. मम्मट की परिभाषा – 'तद्दोषौ शब्दार्थो सगुणावलंकृती पुनः क्वापि'। ऐसा शब्दार्थ जो दोषों रहित हो, गुणों वाला हो, अलंकारों से सुसज्जित हो काव्य कहलाता है।
3. पंडितराज जगन्नाथ – 'रमणीयार्थः प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'। अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।

काव्य के भेद – काव्य के दो भेद हैं – 1. पद्य काव्य 2. गद्य काव्य
पद्य काव्य के दो भेद हैं – 1. मुक्तक 2. प्रबन्धकाव्य
प्रबन्ध काव्य के दो भेद है – 1. महाकाव्य 2. खण्ड काव्य

महाकाव्य – ऐसा काव्य जिसमें नायक के सम्पूर्ण जीवन का वर्णन रहता है।
यथा – रामायण महाकाव्य।

खण्डकाव्य – ऐसा काव्य जिसमें नायक के जीवन की किसी एक घटना का वर्णन होता है।
काव्य के अन्य भेद भी हैं। यह भेद इन्द्रियों के आधार पर किए गए हैं –
1. दृश्य काव्य 2. श्रव्य काव्य

1. दृश्य काव्य –
इस काव्य का आनन्द नेत्रों से लिया जाता है, यथा – नाटक तथा एकांकी।

2. श्रव्य काव्य –
इस काव्य का आनन्द श्रवण द्वारा लिया जाता है, यथा – मुक्तक इत्यादि।

काव्य का आनन्द उसके अर्थ को ज्ञात करके लिया जाता है। अर्थ को ज्ञात करने के लिए तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ हैं, जिनका परिचय नीचे दिया जा रहा है –

शब्द शक्ति – शब्दों के विषय में विचार करने वाले तत्त्वों को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं – 1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यंजना।

इनके अनुसार शब्द भी तीन प्रकार के होते हैं – 1. वाचक 2. लक्षक 3. व्यंजक।

1. अभिधा शक्ति :– जिस शक्ति से किसी शब्द के प्रचलित अर्थ का ज्ञान होता है उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। यथा – स्वगृहम् – प्रियम् अस्ति – अपना घर प्यारा होता है। यहाँ पर घर का अर्थ रहने वाले आवास से है। इससे घर के प्रचलित अर्थ का बोध होता है।

2. लक्षणा शक्ति :– शब्द का अर्थ अभिधा मात्रा में सीमित नहीं हैं उसका व्यापार व्यापक है। अतएव् मुख्य अर्थ ग्रहण होने पर उस ग्रहण अर्थ के भाव रूढ़ि सा प्रयोजन से जिस वृत्ति द्वारा अन्य अर्थ की प्रतीति होती है, उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं। यथा 'कर्मणि कुशलः' सामान्य अर्थ है – कार्य करने में दक्ष किन्तु यहाँ पर कुशल शब्द का अर्थ चतुर लिया गया है। अतएव् यहाँ शब्दों की लक्षण शक्ति से अर्थ का बोध होगा। इसी प्रकार 'गंगायाम् घोषः' – गंगा में गांव सामान्य अर्थ हुआ किन्तु लक्ष्य अर्थ गंगा के समीप गांव है, यह अर्थ है।

3. व्यंजना :– अभिधा और लक्षणा के विरत हो जाने पर जो अर्थ निकलता है उसे व्यंग्यार्थ कहते हैं, और जिस वृत्ति या व्यापार द्वारा यह अर्थ प्राप्त होता है उसे व्यंजना वृत्ति कहते हैं। काव्य मे व्यंजना शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है।

रस – कविता, कहानी, उपन्यास आदि के पढ़ते या सुनते समय तथा नाटक को देखते समय पाठक या श्रोता या दर्शक को जो आनन्द प्राप्त होता है वह रस कहलाता है। इसके चार अंग माने गये हैं – 1. स्थायी भाव 2. विभाव 3. अनुभाव 4. संचारी भाव। सहृदय या पाठक के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 9 हैं। ये रति, हास, शक्ति, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद।

विभाव – स्थायी भाव के कारण को विभाव कहते हैं। विभाव के कारण ही सहृदय को रस प्राप्त होता है।

विभाव के प्रकार – विभाव दो प्रकार के होते हैं – 1. आलम्बन 2. उद्दीपन।

आलम्बन – आलम्बन विभाव ऐसे कारण को कहते हैं जिस पर भाव अबलम्बित रहता है। इसके भी दो भेद हैं – 1. आश्रय 2. विषय

आश्रय – जिस पुरूष या नारी के चित्त में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं। उसे आश्रय कहते हैं।

विषय – जिस व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति आश्रय के मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं। उसे विषय कहते हैं। इसका दूसरा नाम आलम्बन है।

उद्दीपन विभाव – जो आलम्बन द्वारा उत्पन्न भावों को उद्दीपन करते हैं अर्थात् तीव्र करते हैं, उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं।

अनुभाव – आश्रय की बाहरी चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। यथा – हाथ–पैर कांपना, चीखना आदि।

संचारी भाव – आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं।

रस निष्पत्ति –

आश्रय के हृदय में स्थित स्थायी भाव को जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग होता है, तो यह रस का रूप ग्रहण कर लेता है। विभिन्न रसों के स्थायी भाव निम्नलिखित हैं –

रस	स्थायी भाव
श्रंगार	रति
हास्य	हास्य
करूण	शोक
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा
अद्‌भुत्	विस्मय

काव्य गुण – कविता, नाटक, उपन्यास एवं कहानी को पढ़ने के बाद हमें रसानुभूति होती है। रस के साथ एक और काव्य तत्त्व सदैव साथ–साथ रहता है, वह गुण कहलाता है। गुण रस का धर्म है। रस के साथ गुण विद्यमान रहता है।

गुण तीन हैं – माधुर्य, ओज और प्रसाद।

1. माधुर्य गुण – काव्य के जिस गुण विशेष से सहृदय का चित्त द्रवित होता है, वह माधुर्य गुण कहलाता है। यह करूण और शान्त रसों में रहता है। इसमें कोमल वर्णों का प्रयोग होता है।

2. ओज गुण – काव्य के जिस गुण विशेष के कारण सहृदय के हृदय में जोश का संचार होता है, वह ओज कहलाता है।

यह गुण, वीर, रौद्र और वीभत्स रसों में रहता है। इसमें कठोर वर्णों का प्रयोग होता है जैसे – ट, ठ, ढ़ आदि।

3. प्रसाद गुण – काव्य के लिए गुण विशेष के कारण सहृदय का चित्त व्याप्त हो जाता है। यह गुण रचना में माना जाता है। जहाँ ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जिनके सुनने मात्र से ही अर्थ का बोध हो। यह सभी रसों में पाया जाता है।

रीति – जो गुण के आश्रित रहकर रस का उपकार करती है, उसे रीति कहते हैं। रीतियाँ तीन हैं – 1. वैदर्भी 2. गौड़ी 3. पाञ्चाली

1. जहाँ रचना में माधुर्य गुण हो, वहाँ वैदर्भी रीति होती है।
2. जहाँ ओज गुण की रचना हो, वहाँ गौड़ी रीति होती है।
3. जहाँ प्रसाद गुण की रचना होती है, वहाँ पाञ्चाली रीति होती है।

अलंकार के प्रकार – 1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार

(1) शब्दालंकार – शब्दालंकार में वर्णों या शब्दों का चमत्कार है, शब्दालंकार की दृष्टि ध्वनि के आधार पर होती है। इसे काव्य का संगीत धर्म कहते हैं। शब्दालंकार के तीन भेद हैं – अनुप्रास, यमक, श्लेष।

(2) अर्थालंकार – अर्थालंकार में अर्थगत चमत्कार होता है। इसमें वर्ण या शब्दों का चमत्कार प्रधान रूप से नहीं होता है। अर्थालंकार रसानुभूति उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

शब्दालंकार –

1. अनुप्रास – वाक्य में जहाँ कोई वर्ण एक से अधिक बार क्रम में आवे भले स्वर भिन्न हो, व्यंजन समान होते हैं और एक क्रम में हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास दो प्रकार का होता है –

1. छेकानुप्रास 2. वृत्त्यानुप्रास

छेकानुप्रास – शब्द के अन्त या आरम्भ में जहाँ एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति केवल एक बार हो यह वर्ण दुहराया गया हो।

ततआरूणा परिस्पन्दा मन्दी कृतवपुः शशी।
दधे कामयारक्षाम् कामिनी गण्ड पाण्डुताम्।।

यहाँ पर स्पन्द मन्दी में 'न' और 'द' का तथा काम कामिनी में 'का' और 'म' का तथा गण्ड पाण्डु में 'ण' और ड की एक बार आवृत्ति होने से यहाँ घेकानुप्रास अलंकार है।

वृत्त्यानुप्रास – एक अथवा अनेक (वर्णों, व्यंजनों) की अनेक बार सादृश्य (आवृत्ति) होने पर वृत्त्यानुप्रास होता है।

यमक अलंकार – अर्थ के विद्यमान रहते कहीं तो आवर्तन किए गये दोनों शब्द सार्थक रहेंगे, कहीं दोनों निरर्थक हो जावेंगे, कहीं एक सार्थक रहेगा, दूसरा निरर्थक रहेगा, ऐसी स्थिति में भिन्नार्थक स्वर व्यंजन समुदाय के पूर्व विद्यमान के अनुसार ही पुनरूक्ति करना यमकालंकार कहलाता है। यथा –

नव पलाश–पलाश वनं पुरः स्फुट पराग–परागत–पङ्कजम्।
मृदुलतान्त लतान्तमलोकयत्, स सुरभिः सुरभिः सुमनो हरम्।।

अर्थ – उसने (कृष्ण ने) फूलों के गुच्छे से सुगन्धित वसन्त को देखा तो मृदुल और विस्तीर्ण लताओं से व्याप्त था। नये पत्ते वाले पलाश वृक्षों का वन लहलहा रहा था। जहाँ रस वाले कमल व्याप्त है। हाँ पर पलाश तथा सुरभि शब्द सार्थक तो हैं पर भिन्नता भी है। लतान्त तथा पराग में पहला निरर्थक है। मृदुला तथा तान्त हो जाने से दूसरा निरर्थक है।

श्लेष अलंकार – जहाँ अनेक अर्थों से युक्त पदों के अनेक अर्थ कहे गये हों, वहाँ श्लेषालंकार होता है।

अर्थालंकार –

उपमा अलंकार :

उपमा इवसादृश्य, लक्ष्मीसल्लसति द्वयोः।
हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः, स्वर्गङ्गामवगाहते।।

उपमा और उपमेय दोनों का सादृश्य साधारण धर्म जहाँ उपमा वाचक शब्द द्वारा विशद रूप से प्रतीत होता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। ऐसे हैं कृष्ण तुम्हारी, कीर्ति हंसी के समान स्वर्ग गंगा का अवगाहन करती है। सादृश्य अवगाहन (साधारण) धर्म है 'इव' उपमावाचि शब्द है।

रूपक अलंकार :

'उपमेय मयी भित्तिस्तत्र रूपकमिष्यते।

जहाँ उपमान रूपी चित्र से उपमेय रूपी भित्ति चित्राधार स्थली सभी तरह से रंग दी जाये। अभिन्न प्रतीति हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार :

'उत्प्रेक्षोन्नीयते यत्र निहतिं बिना।''

जहॉ बिना छिपाये अर्थात् उपमेय का निराकरण न करे। उपमेय के साथ उपमान का साम्य सिद्ध करने के लिए वस्तु कल्पना की जाये वहॉ उत्प्रेक्षालंकार होता है। वैसे ही कवि कहता है कि उपमेय मुख उपमान चन्द्र के समान है। उसी को घुमा फिराकर कवि कहता है कि चन्द्रमा निश्चय ही तुम्हारी मुख की शोभा प्राप्ति के लिए कमलों से बैर करता है।

छन्द – प्रकरण

छन्द की परिभाषा – जो रचना नियत वर्ण, गति, विराम, निर्वाह एवं चरण सम्बन्धी नियमों के अनुसार होती है, उसे छन्द कहते हैं। वर्ण के दो भेद होते हैं – (1) ह्रस्व (2) दीर्घ छन्द रचना में ह्रस्व को लघु और दीर्घ को गुरू कहते हैं। लघु वर्ण की गणना (1) चिह्न से तथा गुरू वर्ण की गणना (ऽ) चिह्न से होती है। लघु वर्ण यथा – अ, इ, क, कि, कु आदि की एक मात्रा मानी जाती है। संयुक्त वर्ण का पूर्व अक्षर गुरू होता है।

अनुस्वार – (ं) वर्ण भी गुरू होता है, यथा – संहार में 'सं' वर्ण गुरू होता है। हलन्त के पूर्व का अक्षर गुरू होता है, जैसे – श्रीमान् में 'मा' गुरू होगा।

चरण – चरण दो पद या पंक्तियों को कहा जाता है। छन्द दो, चार या छह चरणों में लिखा जाता है।

गण – छन्दों के लक्षण बताने के लिए वर्णों की व्यवस्था है, तीन वर्णों के समूह को 'गण' कहा जाता है। ये समूह आठ हैं, जो निम्न सूत्रों में समाहित हैं – 'यमाताराजभानसलगौ'

गण चिह्न :–

1. यगण – ।ऽऽ
2. मगण – ऽऽऽ
3. तगण – ऽऽ।
4. रगण – ऽ।ऽ
5. जगण – ।ऽ।
6. भगण – ऽ।।
7. नगण – ।।।
8. सगण – ।।ऽ

1. इन्द्रवज्रा – ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः'' – जिसके चारों चरणों में क्रमशः तगण, तगण, जगण दो गुरू वर्ण होते हैं। उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं –

त	त	ज	ग	ग
ऽऽ।	–ऽऽ।	।ऽ।	ऽ	ऽ

यथा – गोष्ठे गिरि सव्यकरेण धृत्वा रूष्टेन्द्र वज्राहित मुक्त वृष्टौ।

2. वसन्त तिलका – ''ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौगः।

अर्थात् जिसके चारों चरणों में तगण, भगण, जगण दो गुरू हों उसे वसन्ततिलका नामक छन्द कहते हैं।

3. द्रुतविलम्बित – ''द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।''

जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, भगण, भगण एवं रगण होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. रसों के स्थायी भाव लिखिए।
2. शब्दशक्ति की परिभाषा लिखते हुए शब्द शक्ति के प्रकार बताइये।
3. इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण लिखिए तथा उसका एक उदाहरण लिखिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. स्थायीभाव – सहृदय या पाठक के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं।

इनकी संख्या 9 है, प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव रहता है।

जैसे –

श्रृंगार	–	रति
हास्य	–	हास
करूण	–	शोक
रौद्र	–	क्रोध
वीर	–	उत्साह
भयानक	–	भय
वीभत्स	–	जुगुप्सा
अद्‌भुत	–	विस्मय
शांत	–	निर्वेद

2. शब्दों के विषय में विचार करने वाले तत्त्वों को शब्द शक्ति कहते हैं। यह अर्थ बोधक व्यापार का मूल कारण भी है।

शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं :

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यंजना

3. लक्षण – 'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।'' अर्थात् जिसके चारों चरणों में क्रमशः तगण, जगण, दो गुरू वर्ण होते हैं, उसको इन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं।

उदाहरण – गोष्ठे गिरि सव्यकरेण धृत्वा रूष्टेन्द्रवज्राहित मुक्तवृष्टौ।

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एजूकेशन परीक्षा

द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – दशम्

विषय – संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसका शिक्षण)

इकाई – अष्टमी

विषयांश – निबंध और पत्र लेखन

प्रिय छात्राध्यापको !

अभी तक आप सात इकाईयाँ पढ़ चुके हैं। यह आठवीं इकाई है। सातवीं इकाई में आपने सन्धि, समास, काव्य तत्त्व तथा हिन्दी एवं संस्कृत भाषा की कुछ समानताएँ एवं असमानताएँ पढ़ी। इस पाठ में रचना से सम्बन्धित जानकारी दी जा रही है।

इस आठवीं इकाई में निबन्ध, वैयक्तिक पत्र और रचना को निम्नलिखित दो उप–इकाइयों में विभक्त किया गया है।

प्रथम उप इकाई –

इस उप इकाई में संस्कृत में संक्षिप्त निबन्ध लिखने के विषय में चर्चा की जायेगी। कक्षा नवीं में संस्कृत में बड़े निबन्ध नहीं लिखे जाते हैं। विषय भी प्रचलित होना चाहिए। इस उप–इकाई में – ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं में निदए गए निबन्धों के कठिन शब्दार्थ, सन्धि विच्छेद तथा हिन्दी दिया जा रहा है।

नोट :– कक्षा नवीं मे दिये गये प्रचलित विषयों पर सरल संस्कृत में 10 – 10 वाक्य दिये जाये तो अति उत्तम है।

प्रथम खण्ड –

मम पाठशाला (विद्यालयः)

मम पाठशाला.....कुर्वन्ति सर्वे।

सन्धि विच्छेद – पुनरप्यध्ययनं = पुनः + अपि + अध्ययनम्।
शब्दार्थ – प्रणमन्ति – प्रणाम करते हैं।
समाप्तौ – समाप्ति पर

अर्थ – मेरी पाठशाला घर के समीप ही है। मैं नवीं कक्षा में पढ़ता/पढ़ती हूँ। पाठशाला जाकर सभी बालक शिक्षकों को नमस्कार करते हैं। फिर प्रार्थना करके पाठ पढ़ते हैं। मध्याह्नकाल में अवकाश होता है। तब सभी स्वल्पाहार करते हैं। अवकाश की समाप्ति पर फिर सभी अध्ययन करते हैं।

मम कक्षायां.....चतुरा वर्तन्ते।

अर्थ – मेरी कक्षा में 45 छात्र हैं। उनमें कुछ छात्राएं भी हैं। पाठशाला में बहुत से अध्यापक हैं। वे सभी अपने–अपने विषय में मर्मज्ञ हैं। मेरे सहपाठी भी परिश्रमी एवं सदाचारी हैं। वे न केवल अध्ययन में अपितु खेलों में, भाषण कला में और अभिनय में भी निपुण हैं।

– उद्यानम् –

मम गृहस्य समीपे.....रक्तानि वा सन्ति।

शब्दार्थ –

शोभनम्	–	सुन्दर
विलोक्य	–	देखकर
पक्वानि	–	पके
आश्रयन्ति	–	आश्रय लेती हैं/लेते हैं

अर्थ – मेरे घर के पास एक अत्यन्त सुन्दर उद्यान है। उद्यान की हरीतिमा देखकर लोग आनन्दित होते हैं। यहाँ (उद्यान में) विभिन्न प्रकार के वृक्ष, विभिन्न प्रकार पुष्प तथा विभिन्न प्रकार की लताएँ है। वृक्ष पत्तों व पुष्पों से शोभायमान होते हैं। पत्तों का रंग हरा एवं पुष्पों का रंग विभिन्न प्रकार का होता है। पके फल वृक्षों के आभूषण होते हैं। लोग वृक्षों के फल खाते हैं। सभी लताएँ वृक्षों को आश्रय बनाये हुए हैं। लताओं के पुष्प श्वेत (सफेद) पीले, नीले, अथवा लाल हैं।

मालाकारः उद्यानात्.....विश्राम्यन्ति।

अर्थ – माली उद्यान से पुष्पों को चुनकर मालाओं का निर्माण करते हैं। मैं प्रतिदिन सायंकाल वहाँ (उद्यान में) घूमने जाता हूँ। उद्यान की शुद्ध वायु मुझे अच्छी लगती है। यहाँ बालकों के लिए खेल का मैदान भी है। उद्यान के वृक्षों की छाया में लोग आराम करते हैं।

नोट – कक्षा नवीं की पुस्तक 'दूर्वा' में 'विद्या', पुस्तकम्, धेनुः, निबन्ध दिये गये हैं। छात्राध्यापक इनका समुचित अध्ययन कर संस्कृत में निबन्ध लिखने का अभ्यास करेंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. यत्र विद्यां गृहणन्ति तत्स्थानं किम् उच्चते?
2. अध्यापकाः विद्यार्थिनः केन मन्यते?
3. वृक्षाणाम् आभूषणानि काः सन्ति?
4. उद्याने के रोहन्ति?

उत्तर

1. यत्र विद्यां गृह्णन्ति तत्स्थानं पाठशाला इति उच्यते।
2. अध्यापकाः विद्यार्थिनः पुत्रवत् मन्यन्ते।
3. वृक्षाणाम् आभूषणानि फलानि सन्ति।
4. उद्याने वृक्षाः रोहन्ति।

द्वितीय खण्ड –

कक्षा नवीं में 'दूर्वा' में दिये गये पत्रों को आधार स्तम्भ बनाकर छात्राध्यापकों को पत्र लेखन का अभ्यास कर लेना चाहिए। 'पत्र लेखन' भावों को संप्रेषित करने का एक अच्छा एवं परम्परागत माध्यम है।

छात्राध्यापकों के अभ्यासार्थ कक्षा 9वीं की संस्कृत पुस्तक 'दूर्वा' से एक पत्र का प्रारूप दिया जा रहा है।

अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्

आदरणीयाः प्राचार्य महोदयाः,
शासकीय कन्या उ. मा. विद्यालय, रवड़ियाहारः
मुरैनामण्डलम् – मध्यप्रदेशः

श्रीमन्तः –

सेवायां सविनयं निवेदनम् इदं यद् अहम् अद्य अकस्मात् ज्वरपीड़ितः अस्मि। अत एव विद्यालयम् आगन्तुं सर्वथा असमर्थः अस्मि। कृपया पञ्च दिवसानां (पञ्चदशात् आरभ्य नवदश दिनाङ्क पर्यन्तम्) अवकाशं स्वीकृत्य मां अनुग्रहीतुम् अर्हन्ति भवन्तः।

दिनांङ्क – 30.12.2009

भवदीया शिष्या
लता
दशम – कक्षायां 'अ' वर्गः

अभ्यास प्रश्न

1. पुस्तक प्राप्त्यर्थ प्रकाशकाय एकं पत्रं लिखत।

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन परीक्षा

(द्वितीय परीक्षा)

प्रथम पत्र – दशम्

इकाई – नवमी

विषय : संस्कृत एवं उसकी शिक्षण विधियाँ

अभी तक आप आठ इकाइयों का अध्ययन कर चुके हैं एक इकाई पर एक पाठ आधारित है। यह नवम् पाठ है। इस पाठ में संस्कृत शिक्षण स्वरोच्चार विधि, अनुकरण विधि, ध्वनिसाम्य विधि तथा सुनो बोलो विधि का वर्णन किया गया है। इस पाठ को निम्नलिखित उप इकाइयों में विभाजित किया गया है।

विषयांश –

प्रथम उप इकाई – स्वरोच्चार विधि
द्वितीय उप इकाई – अनुकरण विधि
तृतीय उप इकाई – ध्वनि साम्य विधि
चतुर्थ उप इकाई – सुनो बोलो विधि
पञ्चमी उप इकाई – अभ्यास विधि
षष्ठी उप इकाई – अनुवाद विधि
सप्तमी उप इकाई – संवाद विधि

संस्कृत शिक्षण विधियाँ

प्रथम उप इकाई

स्वरोच्चार विधि :–

संस्कृत भाषा परम वैज्ञानिक है। ऋषियों ने इसमें प्रयुक्त होने वाले स्वरों एवं वर्णों की उत्पत्ति आदि पर विशद् रूप से विचार किया है। महर्षि पाणिनि ने शिक्षा वेदांग में निम्न प्रकार से विचार किया है।

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तेन तमर्थमाह।
स वाग्विदो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्र शत्रुः स्वरोऽपराधी।।

अर्थात् स्वरों एवं वर्णों के शुद्ध उच्चारण से रहित मन्त्र अर्थ अनर्थ कर देता है। इस प्रकार का अशुद्ध मंत्र यजमान के लिए वज्र की भांति घातक होता है। जैसे – इन्द्र शत्रु पद के गलत प्रयोग से इन्द्रः स्वर के अपराध से वृत्रासुर मारा गया। ''इन्द्रशत्रुः'' इस पद की दो प्रकार से व्युत्पत्ति होती है, जैसे ''इन्द्रःशत्रुः यस्य सः'' इन्द्रः शत्रुः :–

यह एक अर्थ है और ''इन्द्रस्य शत्रुः'' इन्द्र का शत्रु दूसरा अर्थ हैं कहने का अर्थ इतना ही है कि संस्कृत भाषा में उच्चारण का अपना महत्त्व है।

महाभाष्यकार पतंजलि ने शब्द के सुप्रयोग को लोक और परलोक में कामनापूर्ति का कारण बताया है।

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठपुत्र व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलं शकलं स्कृच्छकृत्।।

एक श्लोक में भी उच्चारण भेद से अर्थ का अनर्थ दिखाया गया है प्रायः व्यक्ति श और स के उच्चारण पर ध्यान नहीं देते हैं किन्तु इन दोनों वर्णों से बने शब्दों पर यदि ध्यान दे तो इनका अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। जैसे पहले प्रयुक्त स्वजन शब्द का अर्थ आत्मीयजन होता है और दूसरे का कुत्ता। इसी तरह सकल सम्पूर्ण के अर्थ में और शकल टुकड़े के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

एवं वर्णाः प्रयोक्तव्या नामव्यक्ताः न च पीडिताः

अर्थात् सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं सुस्वर वर्णों और स्वरों का प्रयोग करना चाहिए। महर्षि पाणिनि ने वर्णों के उच्चारण पर निम्नलिखित श्लोक में विचार व्यक्त किये हैं –

व्याघ्री यथा हरेत् पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।

भीता पतन भेदाभ्यां तद्वत् वर्णान् प्रयोजयेत।।

अर्थात् अपने बच्चों को दाँतों से पकड़ते समय गिरने और कटने का ध्यान रखते हुए जो व्याघ्री उसे उस स्थान से अन्यत्र ले जाती है, उसी तरह हमें वर्णों का प्रयोग करना चाहिए। अर्थात् वर्णों का उच्चारण मधुर, व्यक्त (स्पष्ट) हो, व्यक्त होते हुए भी अन्य वर्णों से प्रभावित न हो।

स्वरों एवं वर्णों के उत्पत्ति स्थान पर भी ध्यान देना उच्चारण में सहायक होता है। उदाहरण के लिए –

''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः''

इस सूत्र में अकारक वर्ण है एवं विसर्ग इनका उत्पत्ति स्थान कण्ठ बताया गया है।

''इचुयशानां तालुः''

अर्थात् इकार, च वर्ग यकार और शकार इनका तालु उच्चारण स्थान है। अर्थात् ये वर्ण तालु से उच्चरित होते हैं।

''ऋटुरषाणां मूर्धा''

ऋ ट्वर्ग, र, ष्, इनका मूर्धा स्थान है।

''लृ तु लसानां दन्तः''

लृ त वर्ग, ल एवं स दन्त्य वर्ण है –

''उपूपध्यामानीयानामोष्ठौः''

उकार पवर्ग और उपध्मानीय वर्णों का ओष्ठ स्थान है

व कारस्य दन्तोष्ठम्

व का दन्त और ओष्ठ स्थान है

''ञमङ्णनानां नासिका''

सभी वर्गों के पाँचवे वर्णों का नासिका स्थान हैं

ये वर्ण हैं, ञ्, म्, ङ् तथा न

वर्णों के उच्चारण स्थान को जानकर उनका उच्चारण किया जाएगा तो शुद्ध उच्चारण होगा। इसी तरह उच्चारण के कुछ दोष हैं। उन्हें भी ध्यान में रखना चाहिए। जैसे मुंह के अन्दर बोलना, शीघ्र बोलना, फेकता हुआ बोलना, रूक–रूक कर बोलना, गद्–गद् स्वर में बोलना, तुतलाकर बोलना, बोलते समय कुछ वर्ण या पद छोड़ जाना या जाना, दीनता के स्वर में बोलना और नाक से बोलना, यह सब उच्चारण दोष हैं। पाणिनि ने इन्हें इस प्रकार बताया है –

उपांशुदष्ट्रं त्वरितं निरस्तं,

विलम्बितं गद्गदितं प्रगीतम्।

निष्पीडितं ग्रस्त पदाक्षरं च,

वदेन्नदीनं न तु सानुनास्यम्।।

संस्कृत का सस्वर वाचन अर्थ का बोध कराने में परम सहायक बनता है सस्वर वाचन में शब्दों का उतार–चढ़ाव तथा वर्णों का गुरू – प्रयोग अभिव्यक्ति में महत्त्वपूर्ण माना गया है।

यो अर्थज्ञ इति सकलं भद्रमश्नुते।

अर्थात् जो अर्थ का ज्ञाता है, कल्याण का भागी बनता है – इस तरह स्वरोच्चार विधि है, इसमें कण्ठस्थीकरण भी संस्कृत के विशाल स्वरूप की सुरक्षा का प्रमुख कारण है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1 वर्णों के उच्चारण स्थान कौन–कौन से हैं ?

उत्तर – वर्णों के कण्ठः, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका, ये उच्चारण स्थान हैं।

प्रश्न–2 इन्द्रः शत्रुः इसकी व्युत्पत्ति किस प्रकार होगी ?

उत्तर इन्द्रः शत्रुः यस्य सः ''इन्द्र शत्रुः'' और इन्द्रस्य शत्रुः इन्द्र शत्रुः।

प्रश्न–3 किसी शब्द के सुप्रयुक्त होने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर सुप्रयुक्त शब्द हमारी अपेक्षा को पूर्ण करता है ।

प्रश्न–4 वर्णों का प्रयोग किस तरह करना चाहिए ?

उत्तर जैसे व्याघ्री अपने बच्चों को दाँतों में पकड़ती है पर उसके गिरने एवं कटने के प्रति सावधान रहती है, उसी तरह वर्णों का प्रयोग करना चाहिए।

द्वितीय उप इकाई

अनुकरण विधि :–

संस्कृत भाषा के अध्यापन में अनुकरण विधि का अपना महत्त्व है। इसमें अध्यापक किसी एक वर्ण, पद अथवा अवतरण को छात्रों के समक्ष पढ़कर सुनाता है। बाद में छात्र तदनुसार दोहराता है। यह दोहराना अनुकरण पर आधारित रहता है। छोटी आयु के अविकसित मस्तिष्क वाले बालक ही प्रायः अनुकरण करते हैं। वे अपने बड़ो को जिस तरह बोलते हुए अथवा काम करते हुए देखते हैं, उसी प्रकार बोलने अथवा काम करने का प्रयत्न करते हैं। बाल्यावस्था में प्रायः सभी बच्चे अविकसित रहते हैं। इसलिए वे जो कुछ भी सीखते हैं, अनुकरण द्वारा ही सीखते हैं। उदाहरण के लिए परिवार के बड़े भाई–बहिनों को पढ़ते हुए या विद्यालय जाते हुए देखकर छोटा भाई या बहिन पढ़ने के लिए विद्यालय जाने का अभिनय करता है, यही अनुकरण कहलाता है। बड़ों का, माता–पिता या गुरूओं का उत्तरदायित्व है कि वे बच्चों में संस्कार डालने के लिए उनके सम्मुख कार्य करें। आगे चलकर अर्थात् पढ़ाई करते समय भी बहुत से कार्यों को बच्चों से कराना आवश्यक होता हैं अतः उनके सम्मुख उनका निर्देशन आवश्यक है। बच्चे अनुकरण करके उसे सम्पन्न करने का प्रयास करते हैं। अतः छात्रों को मार्गदर्शन देते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम जो बच्चों को मार्गदर्शन देते हैं। हम जो बच्चों से अनुकरण कराना चाहते हैं, वैसा उदाहरण उनके समक्ष रखें।

संस्कृत भाषा में अध्यापन में अनुकरण विधि का महत्त्वपूर्ण स्थान है, इस भाषा का पद्य साहित्य प्रायः कण्ठस्थ हो जाता है। बच्चे अपने से बड़ों को जिन श्लोकों या सुभाषितों अथवा मंत्रों को पढ़ते हुए देखते या सुनते हैं, उसे वे स्वयं कण्ठस्थ कर डालते हैं। उनका यह कण्ठस्थीकरण मात्र अनुकरण पर आधारित है। शिक्षक अपने छात्र को जो कुछ भी सिखाना चाहता है, उसे छात्र के सम्मुख करके दिखाता है। बाद में उसका अनुकरण करने को कहता है। बाल्यावस्था में लड़कियाँ अपनी माता को भोजन बनाते हुए देखती हैं, कालान्तर में वे भी अपनी खेल सामग्री द्वारा भोजन बनाने का अभिनय करती हैं। ऐसा ही और बहुत सी चीजों का अनुकरण करते हुए देखा जाता है। लड़कियों के गुड्डे गुड़ियों के खेल और लड़कों का बैट–बॉल लेकर खेलना इस अनुकरण के ही उदाहरण हैं।

बड़ी आयु वाले भी इसी मनोवृत्ति के होते हैं, अपनी रूचि के कार्यों को दूसरों के द्वारा करते हुए देखकर उसका अनुकरण करते हैं। यह अनुकरण मानव का स्वभाव है, जो उसे जन्मजात मिला है। गुरू समावर्तन संस्कार के समय अपने शिष्यों से कहता है – यान्यस्माकं

सुचरितानि, तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि यान्यस्माकमनवद्यानि कर्माणि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।''

अर्थात् हमारे सुचरित्रों का तुम अनुकरण करना दुश्चरित्रों का नहीं। हमारे प्रशंसनीय कार्यों का अनुकरण करना निन्दनीय कार्यों का अनुकरण नहीं करना। इस तरह हम देखते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति अनुकरण करता है। यह अनुकरण हमारे जीवन के प्रत्येक रूप में हँसने, बोलने, घूमने, चिन्तन करने, देखने एवं अन्य कार्यों में दृष्टिगोचर होता है।

संस्कृत शिक्षण में अनुकरण विधि का बड़ा महत्त्व है, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में बालक अपने मन से किसी काम को नहीं करना चाहता। इसलिए उसे बड़ों का अनुकरण करने को कहा जाता है। धीरे–धीरे अनुकरण करते–करते उसकी आदत हो जाती है और स्वयं ही उस कार्य को करने लगता है। वह कार्य उसका स्वयं का कार्य बन जाता है और वह कार्य करने लगता है।

अनुकरण विधि के द्वारा ही हम छात्र को जैसा बनाना चाहते हैं, वैसा बना सकते हैं। छात्र भी अनुकरण करके जैसा बनना चाहता है बन सकता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1 अनुकरण विधि के द्वारा बालक क्या सीखता है ?

उत्तर अनुकरण विधि के द्वारा किसी विधि को दोहराता है, अर्थात् वह उस बात को सीखता है जो उसे सीखना है।

प्रश्न–2 बालिकाओं का भोजन बनाने का खेल उनकी किस प्रवृत्ति का परिचायक है ?

उत्तर– बालिकाओं का भोजन बनाने का खेल अनुकरण प्रवृत्ति का परिचायक है।

प्रश्न–3 बड़ों के किन कार्यों, आचरणों का अनुकरण करना चाहिए ?

उत्तर बड़ों के अनिन्दित कार्यो और सुचरितों का अनुकरण करना चाहिए।

प्रश्न–4 अनुकरण के निरन्तर अभ्यास का क्या परिणाम होता है ?

उत्तर अनुकरण के निरन्तर अभ्यास से अपेक्षित विषय अथवा ज्ञान को पुष्ट किया जाता है।

तृतीय उप इकाई

ध्वनि साम्य विधि :–

संस्कृत भाषा के शिक्षण में ध्वनि साम्य विधि का महत्त्वूपर्ण स्थान है। वर्षों के उच्चारण स्थान भी अलग–अलग होते हैं। जैसे कुछ वर्णों का उच्चारण कण्ठ से होता है, कुछ का तालु से, कुछ का मूर्धा से, कुछ का दाँतों से, कुछ का ओष्ठ से, कुछ का नाक से, कुछ का कण्ठ और ओष्ठ से, कुछ का दाँत और ओष्ठ से, कुछ का जिह्वामूल से। इन स्थानों पर उच्चारित हो रहे वर्ण की वायु टकराती है। उससे वर्णों की ध्वनि टकराती है। इस तरह मुख मार्ग से निकलने वाले वर्ण अपने स्थान विशेष के कारण विभिन्न ध्वनियों का रूप लेकर निकलते हैं।

एक स्थान से उच्चरित होने वाले सभी वर्ण एक सी ध्वनि वाले होते हैं। जैसे कवर्ग के वर्ण कण्ठ स्थान से निकलते हैं तो उन सबसे उच्चारण के समय एक सी ध्वनि निकलती है। जैसे – क, ख, ग, घ, अब यहाँ इन वर्णों से प्रारंभ होने वाले पदों को लेते हैं। उनका उच्चारण भी स्थान की प्रधानता को लिए हुए एक सी ध्वनि को जन्म देता है। कमल, खल, गणेश, घट इन शब्दों के प्रारम्भिक वर्ण एक स्थान (कण्ठ) वाले हैं। अतः इनकी ध्वनियों में समानता है। इसी प्रकार अन्य वर्ग जैसे च वर्ग के अक्षरों च, छ, ज, झ इससे बनने वाले शब्द

जैसे चंचल, छदम्, जल, झष, के प्रथमाक्षर तालु स्थान से उच्चरित होते हैं। इसलिए इसकी ध्वनियाँ समान हैं।

ध्वनि साम्य पर विचार करते समय वर्णों के प्रकार पर भी ध्यान देना चाहिए। यहाँ प्रकार से तात्पर्य है, ह्रस्व दीर्घ और प्लुत वर्ण। ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में कम समय लगता है, दीर्घ वर्ण के उच्चारण में ह्रस्व से दुगना लगता है। प्लुत के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुना समय लगता है। इसी कारण ह्रस्व वर्ण की एक मात्रा होती है। दीर्घ वर्ण की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं और प्लुत वर्ण की तीन मात्राएँ गिनी जाती हैं।

ध्वनि सिद्धान्त श्रवणेन्द्रिय पर आधारित है, क्योंकि बालक सर्वप्रथम श्रवणेन्द्रिय द्वारा ध्वनियों को सुनकर ग्रहण करता है।

अतः शिक्षण में मौखिक कार्य पर बल देना चाहिए। श्रवण, स्मृति की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है। श्रवण करके किया गया कार्य शुद्ध होता है। यदि उच्चरित शुद्ध होगा तो श्रवण करके सीखा गया कार्य भी शुद्ध होगा।

समस्त वर्णों की ध्वनियाँ दिव्य और अक्षय हैं, अतः इनके उच्चारण द्वारा इनकी रक्षा की जानी चाहिए। संस्कृत ऐसी भाषा है जिसमे जैसा सुनते हैं, वैसा ही बोलते हैं। इसमें भ्रम का कोई स्थान ही नहीं है। इसमें एक वर्ण में एक निश्चित ध्वनि निकलती है। इसलिए इसका लेखन कार्य व्यवस्थित, निश्चित, भ्रम रहित एवं परिष्कृत होता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1 क वर्ग च वर्ग वर्णों के उच्चारण स्थान कौन–कौन से हैं ?

उत्तर– क वर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है और च वर्ग का उच्चारण स्थान तालु है।

प्रश्न–2 ध्वनि सिद्धान्त किस इन्द्रिय पर आधारित है ?

उत्तर– ध्वनि सिद्धान्त श्रवणेन्द्रिय पर आधारित है।

चतुर्थ उप इकाई

सुनो बोलो विधि :–

इस विधि में शिक्षक शब्द का उच्चारण करता है और छात्र उसका अनुकरण करके बोलता है। इस विधि के द्वारा बाल्यावस्था वाले छात्रों को शिक्षा दी जाती है। इसमें सर्वप्रथम शिक्षक अपने छात्रों को वर्णमाला के अक्षरों का बोध कराता है। वर्णमाला के अक्षरों में स्वर और व्यंजन को सिखाया जाता है। सबकी मात्राओं का ज्ञान, संयुक्ताक्षरों का ज्ञान भी इस विधि के द्वारा दिया जाता है।

देवनागर लिपि एवं संस्कृत की वर्णमाला पूर्णतः वैज्ञानिक है। इसमें वर्ण और ध्वनि एक ही है, अतः निरर्थक नहीं है। जब तक कहा जाता है तब तक उसका प्रतीक लिख जाता है, परन्तु अंग्रेजी में (सी) का भी प्रतीक होता है।

वर्णमाला के अक्षरों के ज्ञान के उपरान्त सुनो–बोलो विधि के द्वारा शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। यहाँ पर शिक्षक अपने छात्रों के समक्ष शब्दों को बोलकर सुनाता है और छात्र से अपेक्षा करता है कि वह शब्द को बोले। यद्यपि शिशु छात्र उन शब्दों को दोहराता है पर उसका उच्चारण अपने शिक्षक की तरह नहीं हो पाता है। वह अपनी बोली में सुनकर किया गया उच्चारण करता है।

कुछ विद्वानों का मत है कि बच्चा अक्षरों का ज्ञान बाद में करता है पहले वह शब्दों को सीखता है। इसलिए कुछ विद्वानों का मत है कि बच्चा अक्षरों का ज्ञान बाद में करता है। पहले वह शब्दों को सीखता है। इसलिए उसे सर्वप्रथम शब्दों की शिक्षा देनी चाहिए। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी और मेडम मॉण्टेसरी द्वारा प्रवर्तित कुछ विधियाँ अनुध्यनित विधि संगीत शब्द शिक्षण विधियाँ ही हैं।

शब्द ज्ञान के उपरांत छात्र को वाक्य शिक्षण दिया जाता है विद्वान वाक्य शिक्षण को सर्वाधिक मानते हैं, क्योंकि भाषा की प्रारम्भिक इकाई वाक्य है न कि शब्द या अक्षर। कुछ लोग कहते हैं कि बालक सर्वप्रथम अपने मुख से शब्दों का उच्चारण करता है वह भूल जाता है कि उसका शब्द भी वाक्य का प्रतिनिधि होकर आता है। जब बालक कहता है कि माम तब उसका तात्पर्य होता है मामा या मामा कहाँ है ? या मामा आओ आदि। इस तरह बालक वाक्यों को सुनकर बोलने का प्रयत्न करता है।

बालक को अक्षर ज्ञान के उपरांत शब्द ज्ञान और अन्त में वाक्य ज्ञान दिया जाता है। पर कुछ विद्वान् पहले वाक्य ज्ञान और अन्त में अक्षर ज्ञान इस क्रम को ठीक मानते हैं। जो दोनो विधियों में शब्द ज्ञान बीच में दिया जाता है, अतः शब्द शिक्षण अन्य दोनों विधियों को जोड़ने वाला हो, अर्थात् सेतु का काम करता हो।

अध्यापन के लिए भाषा की मूल इकाई को स्वीकार करते समय दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। एक, अच्छी शिक्षा में इकाई को सार्थक होना चाहिए। ध्वनियाँ अक्षर या वर्ण सार्थक इकाई नहीं हैं। शब्द वाक्यांश, वाक्य अनुच्छेद, कहानियाँ सार्थक इकाइयाँ है।

अतः इन्हें श्रवण शिक्षण का आधार बनाया जाता है।

इन सम्पूर्ण इकाइयों में शब्द लघुत्तम सार्थक इकाई है। दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि श्रवण शिक्षण हेतु इकाई को अवधान विस्तार की दृष्टि से संभालने योग्य नहीं होना चाहिए। शिक्षकों का प्रायः अनुमान रहता है कि कथाओं, अनुच्छेदों, वाक्यों की अवधान की निश्चित सीमा के अन्दर लाना छह या सात साल के बालक के लिए कठिन होता है। अक्षर, ध्वनि या वर्ण और शब्द का ध्यातव्य बनाना सरल होता है। शब्द महत्तम ध्यातव्य इकाई है। अतः सुनो और बोलो विधि में शब्द शिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है, क्योंकि छोटा बालक सुनकर ही बोलता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1 सुनो और बोलो विधि में शिक्षक और छात्र का क्या कार्य है ?

उत्तर– सुनो और बोलो विधि में शिक्षक बोलने का काम करता है और छात्र सुनने का काम करता है।

प्रश्न–2 देवनागिरी लिपि क्यों वैज्ञानिक मानी गई है ?

उत्तर देवनागिरी लिपि में जिस ध्वनि और प्रतीक स्वरूप उसी वर्ण को लिखा जाता है। अन्य लिपियों में ध्वनि और प्रतीक अलग–अलग रहते हैं।

प्रश्न–3 बच्चा पहले अक्षर सीखता है या शब्द ?

उत्तर बच्चा पहले शब्द सीखता है, अक्षर बाद में।

प्रश्न–4 भाषा की सार्थक मूल इकाई शब्द है या वाक्य है ?

उत्तर भाषा की सार्थक मूल इकाई वाक्य है।

पुनरवलोकन

1. प्रथम उप इकाई स्वरोच्चार विधि –
   प्रस्तुत इकाई में स्वरों एवं वर्णों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ज्ञान दिया गया है।
2. द्वितीय उप इकाई –
   अनुकरण विधि के संबंध में बताया गया है कि छात्र अनुकरण विधि द्वारा कैसे सीखता है।
3. तृतीय उप इकाई –
   संस्कृत भाषा शिक्षण में ध्वनि साम्य विधि का स्थान।
4. चतुर्थ उप इकाई –
   सुनो और बोलो के संबंध में शिक्षक और छात्र का कार्य बताया गया है।

आत्म परीक्षण प्रश्न

1. अजन्त एवं हलन्त शब्द से क्या अभिप्राय है ?
2. अलंकार की परिभाषा देकर प्रकार लिखिए।
3. देवनागरी लिपि वैज्ञानिक क्यों कही गई है ?

पञ्चम उप इकाई

अभ्यास विधि –

भाषा एक कला है। केवल विज्ञान नहीं है। प्रत्येक कला में अभ्यास की आवश्यकता होती है। संस्कृत भाषा में भी अभ्यास तथा पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती हैं संस्कृत भाषा की शिक्षा देने के लिए बालक को पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास परम आवश्यक है।

1. छात्रों को कठिन ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण सहित वाचन करने का अभ्यास करवाना चाहिए।
2. पाठगत शब्दों एवं कठिन वाक्यों के उच्चारण का अभ्यास कराया जाए।
3. छात्रों को संस्कृत की सूक्तियों एवं मुहावरों का ज्ञान करवाया जाए। अधिक अच्छा हो कि सूक्तियों को छात्र कण्ठस्थ कर लेवें।
4. छात्रों को ऐसे अवसर प्रदान किये जायें कि वे व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध करें।
5. छात्रों को उत्साहित करना चाहिए कि वे संस्कृत के अक्षर विन्यास संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध करने का अभ्यास करें।
6. छात्रों को इतना अभ्यास दे दिया जाये कि वे इतने सक्षम हो जायें कि अपने भावों की अभिव्यक्ति संस्कृत भाषा में कर सकें।
7. अभ्यास विधि की प्रमुख विशेषता है कि यह छात्रों को संस्कृत पद्य खण्डों, श्लोकों, गद्य खण्डों, तथा सूक्तियों को समुचित आरोह तथा अवरोह के साथ शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने का अभ्यास देते हैं। अतएव प्राचीनकाल में प्रतिदिन वेदों की सूक्तियाँ प्रातः काल में इसी विधि के अन्तर्गत पाठ की जाती थी। तथा उनकी गति एवं विराम पर विशेष ध्यान दिया जाता था। अस्तु आज भी यह विधि संस्कृत शिक्षण में महत्त्वपूर्ण है।

   इस विधि को अभ्यास विधि भी कहते हैं। छात्र दिये गये ज्ञान को बार–बार दुहराता है और इस ज्ञान को इतना आत्मसात् कर लेता है कि भविष्य में

आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त उसके स्मृति पटल पर उस ज्ञान की आवृत्ति हो जाती है। यही कारण है कि संस्कृत भाषा का ज्ञान कण्ठ में विराजमान ज्ञान कह सकते हैं। संस्कृत में ब्रह्मचारी छात्र स्नान करके संध्या वंदना के पश्चात् पाठ को बार–बार दुहराते थे और उस निर्धारित पाठ को कण्ठगत कर लिया करते थे। अतएव हमें भी पाठशालाओं में संस्कृत भाषा के ज्ञान को देने के लिए अभ्यास विधि को अपनाना चाहिए और इसका उपयोग करना होगा।

अतएव आज भी यह पद्धति उपयोगी है इसके लिए शिक्षक कक्षा में छात्रों को पुनः–पुनः प्रश्न पूछ करके शिशुओं के मानसिक पटल पर संस्कृत के कठिन ज्ञान को भर देते हैं और यह कठिन विषय छात्रों के लिए सरल बना दिया जाता है संस्कृत के कठिन शब्दों को कई बार अभ्यास के रूप में लिखने को कहा जाता है तथा उसे करवाया जाता है। इससे छोटा सा शिशु संस्कृत के कठिन शब्दों का शुद्ध शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना सीख जाता है।

संस्कृत भाषा के शुद्ध पठन का प्रभाव हिन्दी भाषा के अध्ययन पर पड़ता है। छात्र की हिन्दी भी अच्छी हो जाती है। प्रस्तुत पाठ में आगे संस्कृत पाठ का उदाहरण प्रस्तुत करके इसे और समझाया गया है।

कर्त्तव्यपालनम्

पाठ्य वस्तु–कर्त्तव्यपालनस्य महत्त्वं।

प्रश्न –1 जनाः वञ्चनया किं कर्तुं कामयन्ते ?

उत्तर – जनाः वञ्चनया स्वार्थसाधनम् कर्तुं कामयन्ते

प्रश्न –2 आत्मनः देशस्य वा समुन्नतेः मूलमन्त्रः कः ?

उत्तर – आत्मनः देशस्य व समुन्नतेः मूलमन्त्रः स्वकर्त्तव्यपालनम्।

प्रश्न –3 जीवने किम् आवश्यकम् ?

उत्तर – जीवने स्वकर्त्तव्यपालनम् आवश्यकम्।

प्रश्न –4 कर्त्तव्यपरायणानां गणना कुत्र भवति ?

उत्तर – कर्त्तव्यपरायणानां गणना श्रेष्ठपुरूषेषु भवति

प्रश्न –5 यस्य बुद्धिः व्यापन्ना अस्ति सः कर्त्तव्यपालनम् करोति न वा ?

उत्तर – यस्य बुद्धिः व्यापन्ना अस्ति सः कर्त्तव्यपालनम् न करोति।

प्रश्न –6 कृषकाः देशस्य उन्नतिं कथं कुर्वन्ति ?

उत्तर – कृषकाः देशस्य उन्नतिं कृषिकार्येषु स्वकर्त्तव्यपालनैः स्करमैः विविधैः कार्याणि कुर्वन्ति।

प्रश्न –7 कर्त्तव्यपालनम् किमर्थम् आवश्यकं वर्तते

उत्तर – कर्त्तव्यपालनम् स्वस्य, देशस्य वा समुन्नतेः मूलमन्त्रः अस्ति। अस्मिन्नैव स्वहितं सर्वहितञ्च निहितमस्ति, अतः तद् आवश्यकमस्ति ?

प्रश्न –8 यदि जनाः स्वकर्त्तव्यपालनम् न कुर्वन्ति तर्हि किं भविष्यति ?

उत्तर – यदि जनाः स्वकर्त्तव्यपालनम् न कुर्वन्ति तर्हि समाजस्य कापि व्यवस्था भवितुं न अर्हति।

प्रश्न –9 जनाः देशस्य हितसाधनं कथं कुर्वन्ति ?

उत्तर – जनाः स्वकर्त्तव्यानां समुचित पेण पालनं कुर्वन्तः स्वहितैः सह देशस्यापि हितसाधनं कुर्वन्ति।

प्रश्न –10 ये कर्त्तव्यपालनं कुर्वन्ति ते केषां हितसाधनं कुर्वन्ति ?

उत्तर – ये कर्त्तव्यपालनं कुर्वन्ति ते न केवलं आत्मनः एव प्रत्युत् सम्पूर्णस्यापि देशस्य हितसाधनं कुर्वन्ति ?

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न –1 अभ्यास विधि छात्रों को कठिन ध्वनियों को शुद्ध उच्चारण करने में किस तरह सहायक होती है ?

उत्तर – अभ्यास विधि छात्रों को कठिन ध्वनियों को शुद्ध उच्चारण करने में निम्न रूप में सहायक होती है –

अ) ध्वनियों का बार–बार उच्चारण करना।

ब) ध्वनियों का शिक्षण के साथ अनुकरण करना।

स) शब्दों को ध्वनियों के बिना शिक्षक के निर्देशन पर उच्चारण करना।

प्रश्न –2 अभ्यास विधि से रटने की प्रवृत्ति को बल मिलता है या नहीं ?

उत्तर – अभ्यास विधि से रटने की प्रवृत्ति को बल मिलता है ।

प्रश्न –3 संस्कृत भाषा के शुद्ध पठन का प्रभाव हिन्दी परिमार्जन पर भी पड़ता है या नहीं?

उत्तर – संस्कृत भाषा के शुद्ध पठन का प्रभाव हिन्दी परिमार्जन पर भी पड़ता है।

षष्ठी उप इकाई

अनुवाद विधि का परिचय –

कुछ लोगों के अनुसार मातृभाषा के अतिरिक्त जब किसी भाषा को सीखा जाए तो उसे अनुवाद पद्धति के द्वारा ही सीखा जाये, क्योंकि यह निर्विवाद सत्य है कि बालक मातृभाषा में अपने विचारों को अधिक सुगमता, सरलता एवं स्पष्टता से व्यक्त कर सकता है। मातृभाषा के माध्यम से विषय को ग्रहण करना भी सरल होता है। इसी आधार पर कुछ लोगों का कहना है कि बालक के मन में जो कुछ भी आये वह मातृभाषा के रूप में आये तो अधिक अच्छा होगा। संस्कृत भाषा का अध्ययन द्वितीय भाषा के रूप में होता है, अतः संस्कृत को यदि मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाया जाये तो अधिक अच्छी बात होगी। मातृभाषा के वाक्यों, अनुच्छेदों आदि का संस्कृत में अनुवाद करना अलग बात है, किन्तु अनुवाद पद्धति से संस्कृत का ज्ञान देना अलग बात है इस पद्धति की विशेषताओं पर चर्चा करना समीचीन होगा।

1. इस पद्धति के द्वारा छात्रों को विषय की सरलता एवं सुगमता से ज्ञान होता है।
2. इस पद्धति द्वारा मातृभाषा तथा संस्कृत भाषा के शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों एवं विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है इससे छात्र के शब्द भण्डार की वृद्धि होती है।
3. इस पद्धति से ज्ञात से अज्ञात, सरल से कठिन इत्यादि सिद्धान्तों का अनुकरण किया जाता है।
4. अनुवाद द्वारा वाक्य रचना ठीक से समझी जा सकती है।
5. इस पद्धति के द्वारा अनुमान तथा निराकरण का अभ्यास डाला जाय।

अनुवाद के नियम :–
अनुवाद करते समय कुछ नियमों को स्मरण रखना चाहिए –

1. जैसे – सह, साकम्, सार्धम् के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
   उदाहरण – मोहन, रामेण सह पाठशालाम् अगच्छत्।
2. गमनार्थक धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
   उदाहरण – सतीशः गृहं गच्छति।
3. नमः के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।
   उदाहरण – श्री गणेशाय नमः।
4. 'रूच्'' धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।
   उदाहरण – विनोदाय दुग्धं रोचते।

अनुवाद पद्धति द्वारा पाठ परिचय –
शीर्षक – सुविज्ञातमेव विश्वसेत्

पाठ्य वस्तु का अनुवाद –

गद्य खण्ड – अस्ति भागीरथीतीरे गृधकूट नाम्नि पर्वते महान् पर्कटीवृक्षः। तस्य कोटरे दैवदुर्विपाकात् गलितनखनयने जरद्गवनामा गृध्रः प्रतिवसति। अथ कृपया तज्जवीनाय तद्वृक्षवासिनः पक्षिणः स्वाहारात् किञ्चित्–किञ्चिदुद्धृत्य ददति। तेन असौ जीवति। अथ कदाचित् दीर्घकर्णनामा मार्जारः पक्षिशावकान्भक्षितुं तत्रागतः। ततस्तमायान्तं दृष्ट्वा

पक्षिशावकैर्भयार्तैः कोलाहलः कृतः। तच्छ्रुत्वा जरद्गवेनोवत्तम् कोऽयमायाति ? दीर्घकर्णो गृधमवलोक्य सभयमाह – ''हा हतोऽस्मि''

गद्य खण्ड का अनुवाद –

भागीरथी के किनारे गृध्रकूट नामक पर्वत पर एक बहुत बड़ा पाकड़ का वृक्ष है। उस कोटर में दुर्भाग्य से नख एवं नयनविहीन (एक) जरद्गव नामक गिद्ध रहता था। उसको जीवित रहने के लिए उस वृक्ष पर निवास करने वाले पक्षी दया से अपने आहार से थोड़ा–थोड़ा निकालकर देते थे। उसके द्वारा वह जीवित रहता था। इसके बाद कभी दीर्घकर्ण नामक बिलाव पक्षियों के बच्चों को खाने के लिए वहाँ आया। तब उसके आते हुए देखकर पक्षियों के बच्चे डरकर चिल्लाने लगे। वह सुनकर जरद्गव ने कहा – यह कौन आया है ? दीर्घकर्ण गिद्ध को देखकर भयभीत होकर बोला – ''हाय! मैं मारा गया।''

अनुवाद पद्धति की अनेक विशेषताओं के बाद भी अनेक शिक्षाविदों ने माना है कि यदि संस्कृत या किसी भी अन्य भाषा को यदि अन्य भाषा के सहयोग से पढ़ाया जाये तो मूल भाषा अपनी गरिमा खो देती हैअतः बच्चों की मूल भाषा से दूरी बनी रहेगी। अतः संस्कृत को हिन्दी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाना उचित नहीं है। संस्कृत को संस्कृत माध्यम से ही पढ़ाना चाहिए, अतः वर्तमान समय में अनुवाद पद्धति को लागू नहीं किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1 अनुवाद विधि का अर्थ समझाइए ?

उत्तर– अनुवाद विधि ''कठिन से सरल'' की ओर की पद्धति है।

प्रश्न–2 अनुवाद विधि से छात्र के शब्द भण्डार की वृद्धि होती है या नहीं ?

उत्तर– अनुवाद विधि से छात्र के शब्द भण्डार की वृद्धि होती है ।

प्रश्न–3 अनुवाद विधि से छात्र से वाक्य रचना की प्रवृत्ति जागृत होती है या नहीं ?

उत्तर– अनुवाद विधि से छात्र से वाक्य रचना की प्रवृत्ति जागृत होती है ।

सप्तमी उप इकाई

संवाद पाठों के शिक्षण की मुख्यतः तीन विधियाँ है :–

1. आदर्श शब्द विधि – इस विधि में अध्यापक स्वयं की कक्षा में पूरे पाठ को पढ़ता है। इससे पाठ के भाव एवं अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। शिक्षक एक प्रकार से अभिनय करता है। यह विधि शिक्षक केन्द्रित है।
2. अभिनय विधि :– इस विधि से नाटक की शिक्षा में नाटक या संवाद द्वारा पाठों का वास्तविक अभिनय किया जाता है, यह अभिनय दो प्रकार से होता है। 1. रगमंच पर नाटक विधि पूर्वक अभिनय किया जाता है। जिससे छात्र नाटक के पात्र एवं दृश्यों से पूर्ण परिचित हो जाये। 2. कक्षा में छात्र द्वारा पाठ का अभिनय किया जाये। इसमें छात्र वेशभूषा पर ध्यान नहीं देते केवल पात्रानुसार अभिनय हो जायेगा। इसमें रंगमंच नहीं होगा।
3. व्याख्या विधि – इसमें शिक्षक पात्रों के भावों की व्याख्या करते हैं, कठिन शब्दों की व्याख्या शिक्षक स्वयं करता है। शिक्षक नाटक का कार्य करता है।

संवाद विधि द्वारा छात्रों को निम्न ज्ञान दिया जाता है –

1. छात्रों को उचित भाव–भंगिमा के साथ संवाद द्वारा अभिनय करने का ज्ञान करना है।
2. मानव स्वभाव एवं मानव चरित्र का अध्ययन करने की प्रवृत्ति डालना।
3. अवसरों के अनुसार छात्रों को चरित्रवान् बनने की क्षमता प्रदान करना।
4. छात्रों के भाषा ज्ञान में वृद्धि करना।
5. छात्रों से प्रश्नोत्तर करना एवं वार्तालाप करना सिखाना।
6. छात्रों को व्यवहार कुशलता प्रदान करना।
7. छात्रों को सार्वजनिक जीवन में सफल बनने की प्रेरणा देना।
8. छात्रों के शब्द ज्ञान की वृद्धि करना।

अन्त में संवाद विधि छात्रों को निर्भीक एवं वक्ता बनाने के लिए एक उपयोगी विधि है।

संवाद विधि द्वारा शिक्षण :–

शीर्षक – पितृभक्तः श्रवणकुमारः

पाठ्यवस्तु – संवाद के माध्यम से श्रवणकुमार क माता–पिता के प्रति भक्ति का वर्णन।

आचार्यः – ईशभक्तिः, गुरूभक्ति, मातृपितृभक्तिश्च भरतीयसंस्कृतेः मूलम्। अद्य वय पितृभक्ति विषये विमृशामः। नरेन्द्र! मातृपितृभक्ति विषये त्वं किम् जानासि ?

नरेन्द्रः – गुरूवर्य! त्यते श्रवणकुमारः मातापितृभक्तः आसीत् इत्येव जानामि नाधिकम्।

आचार्यः – श्रृणोतु श्रवणस्य पितरौ वृद्धौ जन्मान्धौ चास्ताम्।

भरतः – गुरूदेव! श्रवणस्य पित्रोः नाम किम् ? श्रवणेन किञ्च कृतम् ?

आचार्य :– श्रवणस्य मातुः नाम भाग्यवती पितुः नाम शान्तनुः च आस्ताम् ।

अभ्यास

प्रश्न–1 संवाद विधि की कौन सी विधि कक्षा में शिक्षण हेतु अपनाई जा सकती है ?

उत्तर संवाद विधि से कक्षा में शिक्षण निम्न तीन प्रकार से होता है

1. आदर्श नाट्य विधि
2. अभिनय विधि

3. व्याख्या विधि

प्रश्न–2 संवाद विधियों द्वारा छात्रों को भावनानुसार भावनाओं के निर्माण की शिक्षा दी जाती है, सही या गलत है ?

उत्तर संवाद विधियों द्वारा छात्रों को भावनानुसार भावनाओं के निर्माण की शिक्षा दी जाती है, सही है।

प्रश्न–3 संवाद विधि द्वारा छात्र को भविष्य के सामाजिक जीवन के लिए किस प्रकार तैयार किया जाता है ?

उत्तर
1. मानव चरित्र का अध्ययन उपलब्ध है।
2. छात्रों को चरित्र ढालने की क्षमता प्रदान करता है।
3. छात्रों के भाषा ज्ञान में वृद्धि करता है।
4. छात्रों को व्यवहार कुशलता प्रदान करता है।
5. सार्वजनिक जीवन में सफल बनने की प्रेरणा देता है।
6. छात्रों को निर्भीक बनाता है।

पुनरवलोकन

प्रस्तुत पाठ में छात्रों के अध्ययन हेतु संस्कृत शिक्षण की तीन विधियां –

1. अभ्यास विधि संस्कृत भाषा में अभ्यास तथा पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है। संस्कृत भाषा की शिक्षा देने के लिए बोलने पढ़ने तथा लिखने में अभ्यास कराना आवश्यक है, अतः अभ्यास विधि है।
2. अनुवाद विधि :– अनुवाद विधि अर्थात् वह विधि जिसमें लोगों के द्वारा मातृभाषा के अतिरिक्त जब किसी भाषा को सीखा जाय तब अनुवाद पद्धति के द्वारा ही सीखा जाय।
3. संवाद विधि को हम तीन प्रकार से जानते हैं :–
   1. आदर्श नाट्य विधि
   2. अभिनय विधि
   3. व्याख्या विधि

आत्म निरीक्षण प्रश्न

प्रश्न–1 अभ्यास विधि के अध्यापन के कोई भी लाभ लिखिए –

उत्तर अभ्यास विधि द्वारा छात्रों को संस्कृत श्लोकों एवं सूक्तियों को शुद्ध–शुद्ध पढ़ने की क्षमता प्राप्त होती है।

छात्र इस विधि द्वारा पाठों को पुनः–पुनः पढ़कर ज्ञान को आत्मसात् कर लेते हैं।

प्रश्न–2 संस्कृत की अनुवाद पद्धति पर आज के परिप्रेक्ष्य में उसकी योग्यता के दो बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर इस पद्धति द्वारा संस्कृत का मातृभाषा में अनुवाद करके विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। भाषा के शब्द भण्डार की अभिवृद्धि होती है।

प्रश्न–3 संवाद पद्धति द्वारा शिक्षक एवं शिक्षार्थी की सहभागिता अध्यापन में अधिक रहती है, टिप्पणी लिखिए –

उत्तर इस पद्धति द्वारा शिक्षक के मार्गदर्शन में छात्रगण एवं संवाद द्वारा विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त करते हैं इस विधि द्वारा छात्र के भविष्य के सामाजिक जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी जा सकती है, उदाहरणार्थ छात्र को अच्छा वक्ता बनाया जा सकता है।

प्रश्न पत्र – भाषा एवं उसकी शिक्षण विधि प्रश्न पत्र – दशम्

इकाई – दशमी

विषय – 1. विषयांश – भाषा एवं उसकी शिक्षण विधि

2. मूल्यांकन एवं उसके गुण दोष

3. संस्कृत भाषा का महत्त्व

प्रिय छात्राध्यापको !

इस पाठ में संस्कृत शिक्षण विधियों की निम्नलिखित विधियों का ज्ञान दिया जा रहा है।

1. कहानी कथन विधि।
2. चित्र वर्णन विधि।
3. प्रत्यक्ष विधि

इस इकाई को चार उप इकाइयों में विभक्त किया जा रहा है –

1. कहानी कथन विधि
2. चित्र वर्णन विधि
3. शब्दपूर्ति
4. विधि – वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली – गुण दोष, नवीन मूल्यांकन विधियाँ। राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत भाषा का महत्त्व।

उप इकाई – 1

कहानी कथन विधि

संस्कृत में कथा के कथन में अन्य विषयों जैसे – भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र का ज्ञान दिया जाता है।

संभवतः संस्कृत में ही सर्वप्रथम कथा साहित्य का विकास हुआ। संस्कृत का कथा साहित्य विपुल है, कथाएँ मनोहारी तथा कौतूहल पूर्ण है। संस्कृत साहित्य के कथा ग्रंथ में से कुछ के नाम हैं :–

पञ्चतंत्र, हितोपदेश, बृहत्कथामञ्जरी, कथासरित्सागर, द्वात्रिंशत् पुत्तलिकाः, बेताल पञ्चविंशति।

संस्कृत की कथाओं का कथानक क्रमबद्ध, भाषा सरल और प्रवाहयुक्त होती है।

कक्षाशिक्षण से बालक की कल्पना शक्ति का विकास होना चाहिए उसे तर्क शक्ति की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

उनके चरित्र निर्माण में सहयोग होना चाहिए और बालक को अनभीष्ट मनोरंजन से विलग रखने में सक्षम होना चाहिए।

अध्यापक को ध्यान देने योग्य बातें –

1. कथा कण्ठस्थ कर नहीं सुनानी चाहिए, इससे कथा की स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है।
2. अध्यापक को स्वयं कथा सुनाने में रूचि लेनी चाहिए।
3. प्रत्येक कथा में कोई न कोई उद्देश्य होता है, अध्यापक को उसके अनुसार चलना चाहिए।
4. स्वर में आरोह, अवरोह का ध्यान रखना चाहिए।

कहानी – कथन –पाठ की योजना

सामान्य उद्देश्य –

1. छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना।
2. शक्ति में वृद्धि करना।
3. उनके विवेक को जागृत करके अच्छाई की ओर मोड़ना।
4. कथा–रचना की प्रवृत्ति को उद्‌बुद्ध करना।

विशिष्ट उद्देश्य –

1. स्वावलम्बन के प्रति आदर उत्पन्न करना।
2. कर्तव्यनिष्ठ बनाना।

सहायक सामग्री – कक्षोपयोगी उपकरण।

पूर्वज्ञान – सामान्यतः छात्र स्वावलम्बन शब्द अर्थ जानते हैं और उसके महत्त्व से भी परिचित हैं।

कथावस्तु –

अस्ति उत्तरापथे काशी नाम नगरी। तत्र विद्यालये सुधीर विवेकश्च द्वौ छात्रौ अपठताम्। तयोः सुधीरः धनिकः, विवकः तु निर्धनः।

अथ एकदा विवकः सुधीरेण निमंत्रितः तस्य गृहं गतवान्। तत्र द्वौ अपि सहपाठिनौ सम्भाषणमाणौ आस्ताम्। सुधीरः अकथयत् सखे! त्वम् ईदृशीम् अवस्थां दृष्टवा भृशं अनुतप्ये। त्वं गृहस्य सर्वं करोषि। पुनः पदाति एव अध्वानः चलित्वा विद्यालयं आगच्छति। मम गृहे बहवः भृत्याः सन्ति इति। विवेकः प्रत्यवदत् – ''अहं भृत्यहीनः। ममापि अष्टौ भृत्याः सन्ति इति। ततः सः उवाच–भद्र। कथं एतत् इति।

प्रस्तावाना –

1. कुछ अच्छे गुणों के नाम बताइए ?
2. क्या हमें अपना काम स्वयं करना चाहिए ?
3. अपने आप पर निर्भर रहने वाले को क्या कहते हैं?

उद्देश्य कथन –

स्वावलम्बन से जीवन अनुशासित होता है। आत्मविश्वास बढ़ता है और मितव्ययिता होती है।

(प्रस्तुत कथा को एक अन्विति में पढ़ाया जायेगा।)

प्रशंस्याः भृत्याः

कथा – उत्तर भारत में काशी नाम की नगरी थी। वहाँ विद्यालय में सुधीर और विवेक नामक दो छात्र पढ़ते थे। उनमें सुधीर धनिक और विवेक निर्धन था। एक दिन सुधीर के निमंत्रण पर विवेक घर गया। वहाँ दोनों सहपाठी बातें करने लगे। सुधीर ने कहा – मित्र! तुम्हारी अवस्था पर मुझे दुःख होता है। घर का सब काम तुम करते हो, फिर पैदल मार्ग चलकर विद्यालय आते हो। मेरे घर में बहुत से नौकर हैं। विवेक ने उत्तर दिया – मैं भृत्यहीन नहीं हूँ। मेरे भी नौकर हैं। तब सुधीर ने कहा– प्रिय! यह कैसे?

काठिन्य निवारण – शिक्षक निम्नलिखित पदों का अर्थ स्पष्ट करेगा –

पद	अर्थ	विधि
1. उत्तरापथे	उत्तर भारत में	निर्णय बताकर, दक्षिण पथे
2. पदातिः	पैदल	अर्थ बताकर
3. अध्वानम्	मार्ग से	पर्याय बताकर, मार्गम्
4. भृशम्	बहुत	अर्थ बताकर
5. चमत्कृतम्	चकित हुआ	पर्याय बताकर, चकितो ऽभवत्
6. प्रशस्याः	प्रशंसनीयाः	पर्याय बताकर, प्रशंसनीयाः

बोध प्रश्न –

1. उत्तरा पथे का नाम्नी नगरी आसीत्?
2. तव विद्यालये कौ द्वौ छात्रौ अपठताम्?
3. तयोः कः धनिकः आसीत्?
4. तयोः कः निर्धनः आसीत्?
5. विवेकः केन निमन्त्रितः?
6. विवेकस्य गृहे के न आसन्?
7. विवेकस्य गृहे कति भृत्याः उक्ताः?

अध्यापकः अकथयत् – उत्तरापथे काशी नाम नगरी आसीत्। काश्यां विद्यालये द्वे मित्रे अपठताम्। तयोः एकः सुधीरः आसीत् यः धनिकः आसीत् अन्यः विवेकः निर्धनः आसीत्। एकदा सुधीरेण विवेकः स्वगृहं निमंत्रितः। सुधीरः विवेकस्य निर्धनतां प्रति अनुतापं कृतवान्। कथितम् यत् मम गृहे बहवः भृत्याः सन्ति। एतत् श्रुत्वा विवेकस्य सत्वरं अवदत् मित्र! म अपि भृत्याः सन्ति। तेन कथिंत ते द्वौ पादौ, द्वे नेत्रे, कर्णौ। अनेन कथनेन विवेकः स्वावलम्बनस्य महत्वं प्रदर्शितवान्।

प्रश्नाः –	**उत्तरणि**
1. काशीनाम नगरी कुत्र आसीत्?	उत्तरापथे काशी नाम नगरी आसीत्।

2. तस्मिन विद्यालये के मित्रे पठतः स्म?	तत्र विद्यालये सुधीरः विवेकश्च द्वे मित्रे पठतः स्म।
3. तयोः कः धनिकः कश्च निर्धनः?	तयोः सुधीरः धनिकः विवेकश्च निर्धनः आसीत्।
4. केन कः निमंत्रितः?	सुधीरेण विवेकः निमंत्रितः।
5. के नाम विवेकस्य भृत्याः आसन्?	ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे, द्वौ कर्णौ च।

छात्रों से श्यामपट पर लिखे शब्दों के आधार पर कथा लिखने को कहें।
गृहकार्य – संस्कृत भाषायां संक्षेपेण काचित् अन्याः स्वावलम्बिनः जीवनकथा लिखत।

दूसरी उप इकाई – चित्र वर्णन विधि –

चित्रवर्णन विधि शिक्षण का भाग है। इस विधि में अध्यापक कोई चित्र जैसे पशु–पक्षी, पुष्प, बाजार, विद्यालय दिखाकर उस चित्र के अंक निर्धारित छोटे–छोटे सरल वाक्य बनाकर प्रश्न करना है।

छात्र इन प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में देते हैं। इस प्रकार छात्र को विभक्ति का प्रयोग प्रत्यय लगाकर नए शब्दों को बनाना तथा इससे उपसर्गों का भी ज्ञान प्रदान किया जाता है, इससे छात्रों का शब्द भण्डार भी बढ़ता है।

पाठ योजना

विषय – संस्कृत रचना उपविषय – हस्ती (हाथी)
सामान्य उद्देश्य –

1. संस्कृत में सरल वाक्यों के उत्तर देने की क्षमता उत्पन्न करना।
2. अपने भावों को उपयुक्त शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य – छात्रों को हाथी का वर्णन संस्कृत भाषा में करने की क्षमता उत्पन्न करना।
सहायक सामग्री – हाथी का चित्र।
पूर्वज्ञान – छात्र हाथी को कई बार देख चुके हैं और वे मातृभाषा में वर्णन कर सकते हैं।

प्रस्तावना –

1. कौन से पशुओं पर हम सवारी करते हैं?
2. इनमें सूंड किस पशु की है?
3. (चित्र देखकर) यह चित्र किस पशु का है? आज हम हाथी के विषय में कुछ वाक्य बोलने का और लिखने का अभ्यास करेंगे।

प्रस्तुतीकरण छात्राध्यापक श्यामपट पर अधोलिखित शब्द लिखकर उनके अर्थ स्पष्ट करेगा। अर्थ स्पष्ट करते समय पर्याय बताकर, वाक्य में प्रयोग कर, विपरीतार्थ बताकर छात्रों को हृदयगम – करायेगा।

हस्ती नखाः नरवाः, श्रोत्रे, शुण्ड्या।

छात्राध्यापक – अब छात्रों से कहेगा कि मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछता हूँ तो तुम संस्कृत में उत्तर दो।

यदि न दे सको तो हिन्दी में उत्तर देने पर छात्राध्यापक संस्कृत वाक्य बना देगा।

(प्रश्न)	(उत्तर)
प्र.1– एषः पशुः कः ?	एषः हस्ती अस्ति।
प्र.2– हस्तिनः पर्यायवाचिशब्दं वद!	हस्तिनः पर्यायवाची गजः अस्ति।
प्र.3– कीदृशः अयं पशुः अस्ति?	अयं दीर्घाकारः पशुः अस्ति।
प्र.4– अस्य नेत्रे कीदृशे भवतः?	अस्य नेत्रे हृस्वे भवतः।
प्र.5– अस्य कति पादाः सन्ति?	अस्य चत्वारः पादाः सन्ति।

प्र.6 अस्य पदान्तेषु शफाः भवन्ति किम् ?
उत्तर अस्य शफाः न भवन्ति।
प्र.7 पदान्तेषुशफा स्थानेषु किं भवन्ति ?
उत्तर पदान्तेषु शफा स्थानेषु नखाः भवन्ति।
प्र.8 अस्य चत्वारः पादाः कीदृशः भवन्ति ?
उत्तर अस्य चत्वारः पादाः स्तंभवत् भवन्ति।
प्र.9 अस्य श्रोत्रे कीदृशे विशाले भवतः ?
उत्तर अस्य दीर्घे श्रोते शूर्पवत् विशाले भवतः।
प्र.10 अस्य द्वौ दीर्घो दन्तौ कुत्र स्थितौ ?
उत्तर अस्य दीर्घो दन्तौ मुखाद् बहिः स्थितौ।
प्र.11 सः शुण्ड्या किं करोति ?
उत्तर सः शुण्डया मुखे वस्तूनि निक्षिपति जलं पिबाति जिघ्रति च।

छात्राध्यापकः सः हस्तस्य सर्वकार्यं शुण्ड्या एव करोति। अमं दर्शनीयः श्रेष्ठः भारतस्य पशुः अस्ति। अस्य विशालं शरीरम् गम्भीरः स्वभावः मन्थरगतिः, अनुशासनपालनं, मानापमान विवेकः।

इसके पश्चात् छात्राध्यापक कक्षा कार्य, संशोधन तथा गृहकार्य कराये। गृहकार्य में किसी विषय से सम्बन्धित कुछ शब्द देकर अन्य शब्दों का प्रयोग कर कुछ वाक्य संस्कृत में लिखने के लिए दिए जाये।

तृतीय उप इकाई शब्द पूर्ति विधि

शब्द पूर्ति विधि का ही दूसरा नाम पूर्ति या रिक्त पूर्ति है।
यह विधि भी रचना शिक्षण के अन्तर्गत है। इस विधि में तैयार शब्द दिए जाते हैं, जिन्हें वाक्य का अर्थ समझकर रिक्त स्थान पर उपयुक्त शब्द छाँटकर लिख दिया जाता है। दूसरा तरीका यह है कि मूल शब्द देकर रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द, प्रत्यय, विभक्ति, उपसर्ग आदि लगाकर बनाया जाये और उस बने शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति की जाए। दोनों विधियों के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।

1. तैयार शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर भरना।
   शास्त्र विमुखान्, महादानी, काँची, आसीत् ।
2. दक्षिणपथे जनपदे नाम नगरम् आसीत्।
3. राजा स्वपुत्रान् शास्त्रविमुखान् अवलोक्य सचिवान् प्रोवाच।
4. शैशव एव अयं साधुचरितः सत्यवादी चासीत्।
   इस विधि में मूल शब्द दिया जा रहा है। रिक्त स्थान की

आवश्यकता के अनुसार पद बनाकर प्रयोग करना।

(क) स्वदेश, मद्य, गम्, (गच्छ्) पितृ

1. ..... अध्ययनं समाप्य विदेशं गतः (स्वेदशं)
2. अहं कदापि ..... न सेविष्ये (मद्यं)
3. सा गृहं ..... (गच्छति)
4. ..... सेवया तुष्यति (पिता)

इस प्रकार कथा कथन संस्कृत भाषा के लिए महत्त्वपूर्ण विधि है। चित्रवर्णन विधि और शब्द पूर्ति विधि रचना शिक्षण के अन्तर्गत आते हैं।

चतुर्थ उप इकाई

विषयांश – मूल्यांकन एवं उसके गुण दोष

शिक्षा और परीक्षा का अटूट सम्बन्ध है, क्योंकि कोई भी क्षमता कितनी ग्रहण की गई है, यह सब जानकारी परिपुष्ट प्रदान करना परीक्षा के द्वारा ही संभव है।

वर्तमान में मूल्यांकन दो प्रकार का होता है।

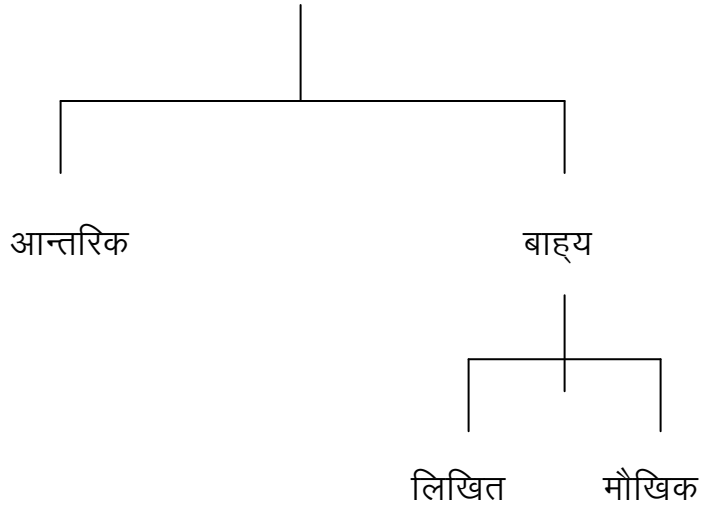

परीक्षा प्रणाली – वर्तमान परीक्षा प्रणाली में एक लिखित प्रश्न पत्र के आधार पर छाय की प्रगति का आंकलन किया जाता है।

इसके गुण–दोष इस प्रकार हैं –

गुण –

1. इससे छात्र की अभिव्यक्ति की जाँच हो सकती है।
2. विषयवस्तु के ज्ञान की गहराई का मापन किया जा सकता है।
3. शैक्षणिक सत्र को एक व्यवस्था और आधार प्रदान किया जा सकता है।

दोष–

1. संस्कृत में केवल लेखन कौशल की जाँच की जाती है।
2. वर्तमान परीक्षा व्यवस्था रटने पर बल देती है।
3. निबन्धात्मक प्रश्नों में सभी इकाइयों से प्रश्न नहीं दिए जाते हैं।
4. आत्मनिष्ठता का प्रभाव पड़ता है।

संस्कृत में मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण –

संस्कृत में मूल्याकंन की नवीन प्रविधि प्रस्तावित है, क्योंकि परीक्षा दोष रहित होगी तभी शैक्षिणक स्तर उन्नत होगा। नवीन प्रणाली के अन्तर्गत दो प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

1. प्रबन्धात्मक
2. वस्तुपरक

1. प्रबन्धात्मक प्रश्न निम्नांकित तथ्यों को मूल्यांकित कर सकते हैं –
    1. अक्षर विन्यास
    2. लिखित अभिव्यक्ति
    3. रसानुभूति
    4. विषयवस्तु ज्ञान
    5. सार तथा भाव लेखन
    6. पत्र व निबंध रचना
2. वस्तु परक प्रश्न निम्नांकित तथ्यों के सम्बन्ध में हो सकते हैं –
    1. शब्दावली का ज्ञान और प्रयोग
    2. अक्षर विन्यास
    3. सैद्धान्तिक व्याकरण
    4. प्रयोगात्मक व्याकरण
    5. विषय वस्तु का ज्ञान
    6. छन्द अलंकार
3. **मौखिक परीक्षाएँ –** सभी तथ्यों का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षा की व्यवस्था में सापेक्षिक परिवर्तन के साथ ही अधिक प्रयास की आवश्यकता है। बाह्य एवं आंतरिक दोनों प्रकार के मूल्यांकन का स्वरूप इस प्रकार का वास्तविक हो कि हमारी परीक्षा का वासवितक मापन हो सके। मूल्याकंन में निम्नलिखित गुण होने चाहिए –
    1. यथार्थता
    2. विश्वसनीयता
    3. जाँच की सुगमता
    4. वस्तुनिष्ठता

5. व्यावहारिकता

6. वैज्ञानिकता

7. तार्किकता

8. सतत मूल्यांकन

पुनरवलोकन

1. मूल्यांकन बाह्य व आंतरिक दो प्रकार से होता है।

2. रसानुभूति एवं अभिव्यक्ति कौशल का मापन प्रबन्धात्मक प्रश्नों से ही हो सकता है।

3. बहुविकल्पीय जोड़ी बनाना, रिक्त स्थान पूर्ति आदि प्रश्न वस्तुपरक होते हैं।

4. यथार्थता और विश्वसनीयता मूल्यांकन के प्रमुख गुण हैं।

अभ्यास के प्रश्न

प्र.1 भाषा में मौखिक परीक्षा लेना क्यों अनिवार्य है।

प्र.2 प्रयोगात्मक व्याकरण के ज्ञान का मूल्यांकन किस प्रकार के प्रश्नों से किया जा सकता है।

प्र.3 मूल्यांकन के किन्हीं तीन गुणो के नाम लिखिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उ.1 उच्चारण सम्बन्धी ज्ञान को मापन हेतु।

उ.2 वस्तुपरक प्रश्नों द्वारा

उ.3 यथार्थता विश्वसनीयता और वस्तुनिष्ठता

उपइकाई पञ्चम – संस्कृत भाषा का महत्व

चतुर्मुख ब्रह्माजी के मुख से जो वाणी निःसृत हुई उपने वेदों का रूप धारण किया। ये सभी वेद संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं –

अनादि निधना नित्या वागुतसृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः।।

समस्त विश्व जिस समय संकेतों का आदान प्रदान कर रहा था, उस समय संस्कृत भाषा विश्व में ब्रह्मज्ञान के प्रसार में सहायक हो रही थी। विश्व की प्राचीनतम रचना ऋग्वेद मानी जाती है, जिसका रचना काल 2500 ई. पू. माना जाता है। चीन देश की रचनाएँ ऋग्वेद के बाद की हैं।

संस्कृत साहित्य के इतिहास को दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग को वैदिक संस्कृत काल तथा द्वितीय भाग को लौकिक संस्कृत काल कहा जाता है। वैदिक संस्कृत का रूप वेदों तथा अन्य ग्रंथों में उपलब्ध है। वेदोत्तर कालीन रचनाएँ लेकिक संस्कृत के अन्तर्गत आयी हैं। जिनमें काव्य रचना के अतिरिक्त धर्मशास्त्र अलंकार कोश, गणित तथा ज्योतिष आदि विषयों पर लिखा गया है।

यह धारणा गलत है कि संस्कृत में केवल साहित्य सृजन इसके आस–पास मिलता है। तब से लेकर आज 2000 ई. तक संस्कृत भाषा के रूप में विद्यमान रही है। इसके इतिहास को तीन कालों में बाटाँ जा सकता है।

प्राचीनकाल	–	वेदों का रचना काल
मध्यवर्ती आर्य भाषा काल	–	उच्चवर्ग की बोलचाल की भाषा
आधुनिक काल	–	साहित्य एवं अध्ययन का विषय

संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाएँ –

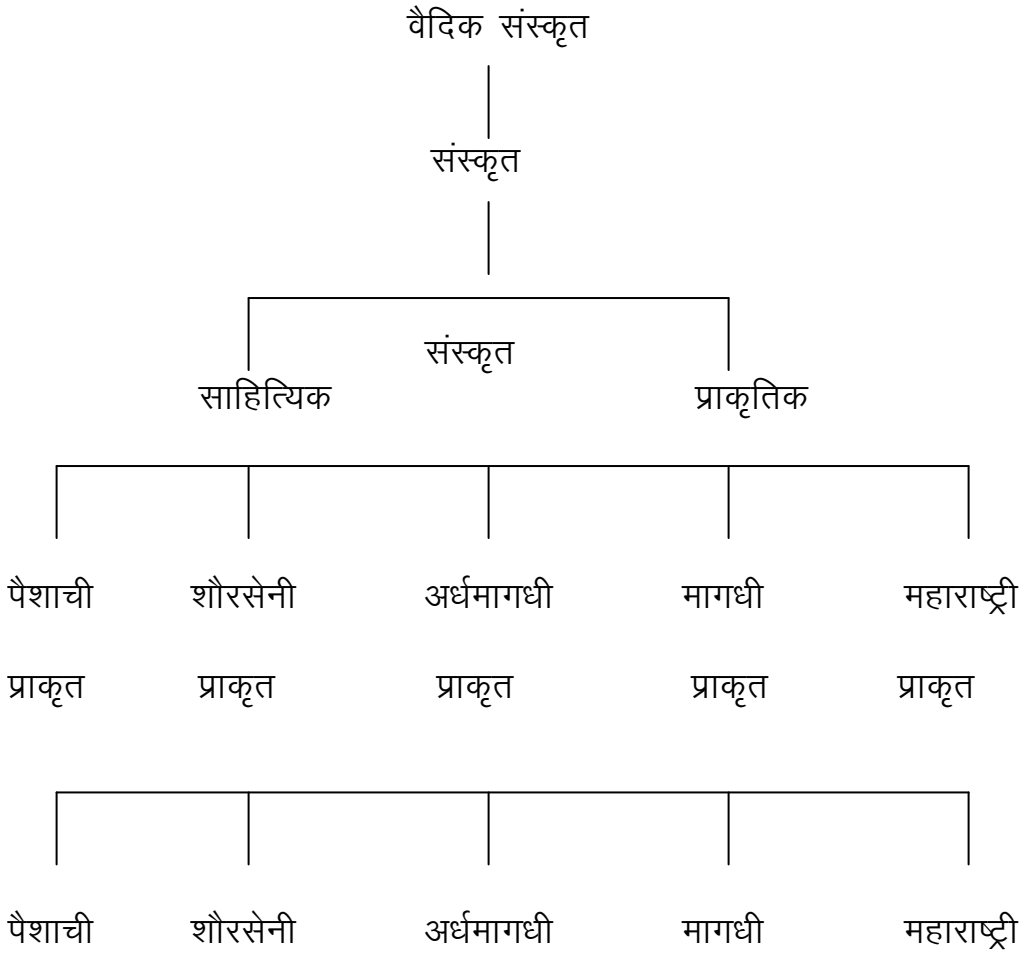

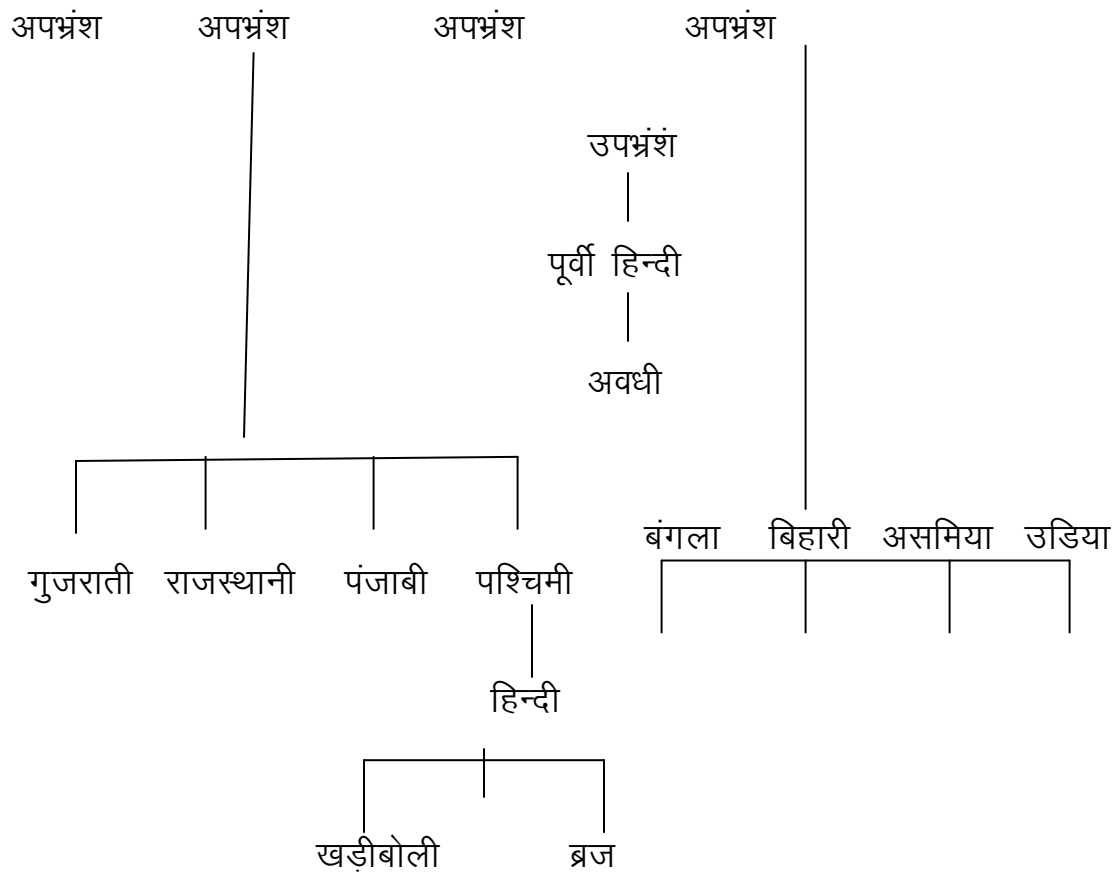

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हमारी सभी भाषाओं का मूल संस्कृत में है। अतएव भाषा के परिमार्जन तथा तकनीकी शब्दावली के विस्तार के लिए हमें संस्कृत के मूल में झांकना ही होगा।

अभ्यास के प्रश्न –

1. ''संस्कृत भाषा सबसे प्राचीन है'' सिद्ध कीजिए।
2. संस्कृत का अन्य भारतीय भाषाओं से संबंध निरूपित कीजिए ।
3. संस्कृत भाषा के तीन काल कौन–कौन से हैं ?
4. प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं से आप क्या समझते हैं ?

विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में संस्कृत भाषा का महत्त्व –

संस्कृत भारत की एक अनुपम तथा अमूल्य निधि है। भारतीय संस्कृत भाषा के माध्यम से ही अमर है। भारत की आर्येतर भाषाएँ संस्कृत से ही जन्मी हैं। इतने पर भी इसे मातृभाषा कहकर सम्बोधित किया जाता है। ऐसे लोग इस भाषा के महत्त्व से परिचित हैं जिस भाषा का पठन–पाठन हो रहा है, आज भी जिसमें साहित्य सृजन हो रहा है उसे मृत किस आधार पर कहा जा सकता है ? संस्कृत भाषा– भाषी भले ही अल्पसंख्यक हों किन्तु इसका महत्त्व किसी अन्य भाषा से कम नहीं है।

1. ऐतिहासिक महत्व :–

संस्कृत भाषा का इतिहास भारत का प्राचीन इतिहास है। वेद जहाँ धर्म संस्कृति और राजनीतिक इतिहास के प्रणेता है वहीं पुराण और उपनिषद् रामायण और महाभारत जैसे संस्कृत महाकाव्य हमारे इतिहास की सबसे बड़ी पूंजी है। इसी प्रकार कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुस्मृति आदि ग्रन्थ संस्कृत के ही प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ हैं।

सांस्कृतिक महत्व :–

संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति की अपराजेयता प्रदान करती है। अब ही हमारे जातकर्म, नामकरण, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण आदि संस्कार संस्कृत भाषा से ही किये जाते हैं। पूजा–पाठ, हवन–यज्ञ, आदि संस्कृत मंत्रों से ही होते हैं।

मूल के बिना वृक्ष के फल नहीं होते हैं। हमें अपनी संस्कृति को सरस बनाए रखने के लिए संस्कृत भाषा का अवलम्बन करना होगा।

धार्मिक महत्त्व :–

आस्तिकत्व भारतवासियों के मूल में है जिसे संस्कृत ने पल्लवित और पुष्पित किया है। हमारे संस्कृत भाषा के ग्रंथ ही हमारे धर्म–ग्रंथ है।

राष्ट्रीय महत्त्व :–

संस्कृत सभी आर्य भाषाओं की जननी ही नहीं है वरन् सभी भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने की श्रृंखला है। हमारे भावों में, हमारी क्रियाओं में संस्कृत का प्रभाव है। जो समूचे भारतवर्ष को एकसूत्रता में बांधे हुए है।

अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व :–

''उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्''

यह हमारा आत्मवाक्य है जो विश्व बंधुत्व की भावना जगाता है।

संस्कृत और विज्ञान :–

संस्कृत भाषा में विज्ञान विषयों पर ग्रंथ उपलब्ध हैं। वैदिक साहित्य में आयत, वृत्त, समबाहु, त्रिभुज आदि संरचनाओं का उल्लेख है। भास्कराचार्य ब्रह्मगुप्त तथा श्रीपति जैसे विद्वान् बीजगणितज्ञ थे। आर्यभट्ट का आर्यभट्टीय प्रामाणिक है। वराहमिहिर और भास्कराचार्य के ज्योतिष सिद्धान्त आज भी प्रख्यात हैं।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक, वाग्भट्ट तथा भावमिश्र के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। रसायन विज्ञान पर नागार्जुन का ''रसरत्नाकर'' भी प्रसिद्ध है।

अभ्यासगत प्रश्न –

प्र.1 – संस्कृत का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है?

प्र.2 – ''संस्कृत राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने में सहायक है –'' सिद्ध कीजिए।

प्र.3 – संस्कृत का धार्मिक महत्त्व लिखिए।

प्र.4 – संस्कृत साहित्य में किन–किन गणितज्ञों का उल्लेख है?

प्र.5 – आर्यभट्टीय ग्रंथ किस सिद्धान्त का है?

अभ्यास प्रश्न

छात्र का नाम .....

छात्र का पंजीयन .....

विषय – संस्कृत

पूर्णांक –

कुल प्राप्तांक –

कुल पूर्णांक –

मूल्यांकनकर्ता के हस्ताक्षर

नाम व पता

.....

.....

.....

नोट – इन प्रश्नों के उत्तर आंतरिक मूल्यांकन के समय संबंधित संस्था में प्रस्तुत करें। इन्हें मण्डल कार्यालय में भेजने की आवश्यकता नहीं है। प्रश्न क्रमांक–1 से 3 तक अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। इनके उत्तर दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए। मूल्यांकनकर्ता की टिप्पणी ...

.....

.....

प्रश्न–1 सन्धि विच्छेद कर नाम लिखिए – दुश्चरित्र, वाग्दानम् 2 अंक

उत्तर – .....

प्रश्न–2 समास पहचाने – यथाशक्तिः, राजपुरूषः 2 अंक

उत्तर – .....

प्रश्न–3 काव्य के कितने भेद हैं ? काव्य की परिभाषा लिखिए। 2 अंक

उत्तर – .....

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन

द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – 10

तृतीय भाषा संस्कृत एवं उसकी शिक्षण विधि

इकाई 6 से 10

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन

प्रिय छात्राध्यापको!

व्यवहार का प्रमुख साधन भाषा है। संसार की प्राचीनतम भाषा संस्कृत है अधिकांश भारतीय भाषाओं का मूल स्त्रोत संस्कृत ही है। भावनात्मक एकता, समता, सहयोग एवं राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण देवभाषा ''संस्कृत–भाषा'' ही है।

प्रत्येक भाषा के अध्ययन के दो पक्ष होते हैं। एक यांत्रिक और दूसरा वैचारिक। भाषा का यांत्रिक पक्ष उसकी संरचना से सम्बन्ध रखता है। इसमें ध्वनि, बलाघात, अनुपात, श्रवण आदि भाषायी सामग्री होती है तथा भाषा शब्द का भण्डार और वाक्य संरचना आदि के भी स्पष्ट नियम होते है, वैचारिक पक्ष में भावों तथा विचारों का युक्तियुक्त संप्रेषण होता है।

संस्कृत भाषा में शिक्षक को उक्त दोनों पक्षों से भली–भांति परिचित होना चाहिए। संस्कृत शिक्षकों को भाषा का सामान्य ज्ञान कराने के साथ–साथ अपनी प्राचीनतम संस्कृति से परिचित कराना ही इन पाठों को लिखने का उद्देश्य है।

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा प्रकाशित तथा माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक 'दूर्वा' संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9वीं को आधार बनाकर यह प्रश्न पत्र दशम् (पाठ्यपुस्तक डी.एड. द्वितीय वर्ष) तैयार किया गया है। जिसमें वर्तमान प्रश्न पत्र प्रणाली के अनुसार अभ्यास प्रश्न/उत्तर/व्याकरणांश एवं शिक्षण विधियां आदि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का वर्णन किया गया है।

उद्देश्य :–

निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राध्यापकों को निम्नलिखित उपलब्धियाँ होंगी :–

1. संस्कृत अध्ययन के प्रति रूचि जागृत करना।
2. शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध लेखन की क्षमता उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य एवं भारतीय संस्कृति से अवगत कराना।
4. अनुवाद करने की क्षमता उत्पन्न करना।
5. सस्वर पाठ एवं प्रभाव पूर्ण वाचन की क्षमता उत्पन्न करना।
6. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।
7. भावात्मक एकता का विकास करना।
8. समता एवं सहयोग की भावनाऐ जागृत कर राष्ट्रीय एकता का विकास करना।

इकाईवार पाठ्यक्रम का विभाजन

इकाई–1

1. जयतु मे माता
2. सुभाषितानि
3. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
4. ध्वनि और उच्चारण
5. वर्ण, शब्द एवं वाक्य संरचना

इकाई–2

1. नीतिश्लोकाः
2. गीतादर्शनम्
3. पुरूषोत्तमः
4. प्रचलित सूक्तियाँ

इकाई–3

1. अलसस्य स्वप्नः
2. पितृसेवा परं ज्ञानम्
3. सुविज्ञातमेव विश्वसेत्
4. संसर्गजाः दोषगुणाः
5. पर्यायवाची एवं विलोमशब्द

इकाई–4

1. श्रेष्ठतमं कार्यम्
2. उपायैः सर्वं शक्यम्
3. सर्वदमनः भरतः
4. दशपुरीया अष्टमूर्तिः
5. पितृभक्तः श्रवणकुमारः

इकाई–5

1. कर्त्तव्यपालनम्
2. वीरबाला
3. अध्ययने प्रत्यूहः
4. गुरूभक्तः आरूणिः
5. वेधशाला

इकाई–6

व्याकरण

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, वचन एवं लिंग का सामान्य परिचय।

इकाई–7

1. संधि, समास का सामान्य परिचय
2. काव्यतत्त्वों की सामान्य जानकारी
3. हिन्दी व संस्कृत भाषा संबंधी समानताएँ एवं असमानताएँ।

इकाई–8

1. सामान्य विषयों पर निबन्ध
2. वैयक्तिक पत्र व प्रार्थना पत्र लेखन

इकाई–9

1. संस्कृत शिक्षण की विधियाँ
2. स्वरोच्चारणविधि
3. ध्वनिसाम्यविधि
4. सुनो बोलो विधि
5. अनुकरण विधि
6. अभ्यास विधि
7. अनुवाद विधि
8. संवादविधि

इकाई–10

1. चित्रवर्णन विधि
2. कहानी कथन विधि
3. शब्दपूर्ति विधि

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
डिप्लोमा इन एज्युकेशन परीक्षा

विषय : संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधियाँ)

इकाई – प्रथम

प्रश्न पत्र – दशम्

विषयांश –

1. जयतु मे माता
2. सुभाषितानि
3. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
4. ध्वनि और उच्चारण
5. वर्ण, शब्द एवं वाक्य संरचना

प्रिय छात्राध्यापको !

हम इस पाठ से अध्ययन प्रारंभ करते हैं। प्रथम उप इकाई के अंतर्गत हम ''जयतु में माता'' गीत का अध्ययन करेंगे।

उप इकाई प्रथम

जयतु मे माता

1. जयतु जयतु ..... गीतायाः गाता।।
2. ज्ञान–भानु ..... सीम्नां त्राता।।
3. कालिदास ..... यशसां गाता।।
4. सावहितः ..... जयतु मे माता।।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक 'दूर्वा' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9 वीं से करें)

शमयतु = शान्त कराये, दुर्दैवम् = दुर्भाग्य को, उदितः = उदय हुआ, तनयः = पुत्र,
नन्दिता = प्रसन्न की गई, त्राता = रक्षक,
चतुर्दिगन्तवहः = चारों दिशाओं में बहने वाला, गाता = गाने वाला,
सावहितः = सावधान, दंशति = डसता है।

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखित पद्यांशम् पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

''सावहितः सीमान्तरक्षकः
येन न दंशति कोऽपि तक्षकः
निष्कारण विद्वेषकरस्तव कालमुखं प्रतियाता।।
जयतु जयतु मे माता
जयतु जयतु मे माता

क) सावहितः कः ?

ख) कालमुखं कः प्रतियाता ?

ग) का जयतु ?

घ) येन कः न दंशति ?

ड.) 'येन' इत्यत्र का विभक्तिः ?

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

क) गीतायाः गाता कः?

ख) भारतमाता कैः वन्दिता ?

ग) भारतमाता कैः नन्दिता ?

घ) वेदोपनिषज्जनयित्री का ?

ड.) आदौ ज्ञानभानुः कुत्र उदितः ?

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क) सावहितः सीमान्तरक्षकः।

   ख) निष्कारण विद्वेषकरस्तव कालमुखं प्रतियाता।

   ग) मे माता जयतु।

   घ) येन न दंशति कोऽपि तक्षकः।

   ङ) तृतीया विभक्तिः ।

2. क) अजनिष्ठाः कृष्णं गोपालं यो गीतायाः गाता।

   ख) भारतमाता हर्ष –भोज–शिवराज वन्दिता।

   ग) भारतमाता मौर्य–शुङ्ग गुप्ताभिनन्दिता।

   घ) भारतमाता।

   ङ) भारतमातरि।

उप इकाई द्वितीय

सुभाषितानि

1. उद्योगिनं पुरूष ..... कोऽत्र दोषः।।
2. रूपयौवन ..... किंशुकाः।।
3. गुणा गुणज्ञेषु ..... भवन्त्यपेयाः।।
4. प्रथमे नार्जिता ..... किं करिष्यति।
5. मातेव रक्षति ..... कल्पलतेव विद्या।।
6. बुद्धेः फलं ..... नराणाम्।।
7. न चौरहार्यं ..... प्रधानम्।।
8. अङ्गेन गात्रं ..... विना निशा।।
9. परिवर्तिनि संसारे ..... समुन्नतिम्।।
10. मनसि वचसि ..... सन्तः कियन्तः।।

निर्देश : (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक 'दूर्वा' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9 वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

उद्योगिनम् = प्रयत्न करने वाले को, कापुरूषाः = कायर, किंशुकाः = टेसू/ढाक के फूल, आसाद्य = पहुँचकर/पाकर, तनोति = फैलाती है, अपनीय = दूर करके, गात्रं = शरीर, वक्त्रम् = मुख, प्रीणयन्तः = प्रसन्न करते हुए, पर्वतीकृत्य = पर्वत के समान बनाकर, कियन्तः = कितने, दिक्षु = दिशाओं में, अभिरमयति = आनंदित करती है।

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखित पद्यांशान् पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

अ) ''उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति कापुरूषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरू पौरूषमात्मशक्त्या

यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्रदोषः।।

क) लक्ष्मीः कम् उपैति ?

ख) कापुरूषाः किं वदन्ति ?

ग) दैवं निहत्य किं कुरू ?

घ) कदा अत्र दोषः न ?

ड.) 'दैवेन' अस्मिन् पदे का विभक्तिः ?

ब) बुद्धे फलं तत्वविचारणा च, देहस्य सारं व्रत धारणं च।

अर्थस्य सारं किल पात्रदानं, वाचः फलं प्रीतिकरं नराणाम्।।

क) बुद्धेः फलं किम् ?

ख) व्रतधारणं कस्य सारम् ?

ग) अर्थस्य सारं किम् ?

घ) वाचः फलं कीदृशम् ?

ड.) 'नराणाम्' अस्मिन् पदे किं वचनम् ?

स) न चौरहार्यं न च राजहार्यम्।

न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यम् ।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानाम्।।

क) चौरहार्यं किं न ?

ख) भ्रातृभाज्यं किं न ?

ग) विधाधनं व्यये कृते किं भवति ?

घ) विद्याधनं कीदृशम् ?

ड.) 'वर्धते' अस्मिन् पदे धातुः कः ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

क) प्रथमे का अर्जनीया ?

ख) विद्या कां तनोति ?

ग) गुणाः कं प्राप्य दोषाः भवन्ति ?

घ) सन्तः केन पूर्णाः भवन्ति ?

ङ.) माता इव का रक्षति ?

3) युग्ममेलनं कुरूत –

	(अ)	(ब)
क)	किंशुकाः	कल्पलतेव
ख)	नद्यः	निर्गन्धाः
ग)	तृतीये	आस्वाद्यतोयाः
घ)	विद्या	न्यायेन
ङ.)	राज्यम्	नार्जितं पुण्यम्

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) क) उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।
ख) दैवेन देयमिति कापुरूषाः वदन्ति।
ग) दैवं निहत्य आत्मशक्त्या पौरूषं कुरू ।
घ) यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः ।
ङ) तृतीया विभक्तिः।

(ब) क) बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणा।
ख) व्रतधारणं देहस्य सारम्।
ग) अर्थस्य सारं पात्रदानम्।
घ) वाचः फलं प्रीतिकरं।
ङ) बहुवचनम्।

(स) क) विद्याधनं चौरहार्यं न ।
ख) विद्याधनं भ्रातृभाज्यं न ।
ग) विद्याधनं व्यये कृते वर्धते।
घ) विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।
ङ) 'वृध्' धातुः।

(2) क) प्रथमे विद्या अर्जनीया ।

ख) विद्या कीर्तिं तनोति।

ग) गुणाः निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति।

घ) सन्तः पुण्यपीयूषपूर्णाः भवन्ति।

ङ) माता इव विद्या रक्षति।

(3)

	(अ)	(ब)
क)	किंशुकाः	निर्गन्धाः
ख)	नद्यः	आस्वाद्यतोयाः
ग)	तृतीये	नार्जितं पुण्यम्
घ)	विद्या	कल्पलतेव
ड.)	राज्यम्	न्यायेन

उप इकाई तृतीय

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

1. नैर्मल्यं भावशुद्धिश्च ..... विधीयते।।
2. शुकवद् ..... माचरेत् ।
3. प्राणायामै ..... सम्मतम् ।।
4. प्राणायामेन युक्तेन ..... सम्भवः।।
5. अत्यम्बु ..... पिबेदभूरि।।
6. न रागान्ना ..... सम्भवः।।
7. दीपो ..... प्रजा।।
8. नास्ति क्षुधा ..... रिपुः।।
9. उपानहौ च ..... च ।।
10. आत्मानमेव ..... त्रसेत्।।
11. सर्वमेव ..... विनश्यति।

निर्देश :– (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक 'दूर्वा' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9 वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

नैर्मल्यं = निर्मलता, अजवत् = बकरे की तरह, प्रशुष्यन्ति = सूख जाते हैं/नष्ट हो जाते हैं, अम्बु = जल, पानात् = पीने से, मुहुर्मुहुः = बार–बार, ध्वान्तम् = अंधकार, रिपुः = शत्रु उपानहौ = जूते, उपवीतम् = जनेऊ, वारि = जल, स्रजम् = माला, करकम् = लोटा/कुल्हड़

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखित पद्यांशौ् पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

अ) शुकवद् भाषणं कुर्याद्, बकवद् ध्यानमाचरेत्।
अजवच्चर्वणं कुर्याद्, गजवत्स्नानमाचरेत्।।

क) भाषणं कथं कुर्यात् ?

ख) ध्यानं कथम् आचरेत् ?

ग) चर्वणं कथं कुर्यात् ?

घ) गजवत् किम् आचरेत् ?

ड.) कुर्यात् अस्मिन् पदे कः धातुः ?

ब) नास्ति क्षुधासमं दुःखं, नास्ति रोगः क्षुधासमः।
नास्त्याहारसमं सौख्यं, नास्ति क्रोधसमो रिपुः।।

क) क्षुधासमं किं नास्ति ?

ख) कस्य समः रोगः नास्ति ?

ग) कस्य समं सौख्यं नास्ति ?

घ) क्रोधसमः कः नास्ति ?

ड.) 'अस्ति' अस्मिन् पदे किं वचनम् ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

क) दीपः किं प्रसूयते ?

ख) सर्वं परित्यज्य कम् अनुपालयेत् ?

ग) अन्यैर्धृतं किं किं न धारयेत् ?

घ) युक्तेन प्राणायामेन किं भवति ?

ङ) कार्यविशुद्धयर्थम् आदौ किं विधीयते ?

3. प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(प्रणष्टस्य, विपच्यते, तादृशी, स्नानम्, आत्मानमेव

क) जायते ..... प्रजा।

ख) गजवत् ..... आचरेत् ।

ग) ..... मन्येत कर्त्तारं सुखदुःखयोः।

घ) शरीरस्य .....सर्वमेव विनश्यति।

ङ) अत्यम्बुपानान्न ..... अन्नम् ।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. अ) क) शुकवद् भाषणं कुर्यात् ।

ख) बकवत् ध्यानम् आचरेत्।

ग) अजवत् चर्वणं कुर्यात्।

घ) गजवत् स्नानम् आचरेत् ।

ड.) 'कृ' धातुः।

ब) क) क्षुधासमं दुःखं नास्ति।

ख) क्षुधासमः रोगः नास्ति।

ग) आहारसमं सौख्यं नास्ति।

घ) क्रोधसमः रिपुः नास्ति।

ड.) एकवचनम् ।

2. क) दीपः कज्जलं प्रसूयते।

ख) सर्वं परित्यज्य शरीरम् अनुपालयेत् ।

ग) अन्यैधृतं उपानहौ, वासः उपवीतम् अलङ्कारं, स्रजं, करकं च न धारयेत्।

घ) युक्तेन प्राणायामेन सर्वरोगक्षयो भवेत।

ड.) कार्यविशुद्धयर्थम् स्नानम् आदौ विधीयते।

3. क) तादृशी ख) स्नानम् ग) आत्मानमेव

घ) प्रणष्टस्य ङ) विपच्यते।

उप इकाई – चतुर्थ

ध्वनि और उच्चारण

भाषा का निर्माण ध्वनियों से ही होता है प्रत्येक भाषा ध्वनि से निर्मित होती है। संस्कृत भाषा ध्वन्यात्मक भाषा है, पूर्णतया क्रमबद्ध है। कण्ठस्थ वर्णों के उपरान्त ओष्ठ्य् वर्ण नहीं आए हैं।

''पाणिनि'' के अनुसार संस्कृत की मूल ध्वनियाँ 63 हैं, ध्वनियों के लिखित रूप को ''वर्ण'' कहते है। वर्ण ही ध्वनिचिह्न है।

''अक्षर'' शब्द का सामान्य अर्थ है जो नष्ट न हो। जिन ध्वनियों के विभाग या खण्ड नहीं हो सकते उन्हें अक्षर कहते हैं। जैसे अ, ई, व, च। वर्ण हमारी उच्चरित भाषा की सर्वाधिक छोटी इकाई है, इन्हीं इकाइयों को मिलाकर शब्द समूह और वाक्यों की रचना होती है।

लौकिक संस्कृत की वर्णमाला इस प्रकार है :–

स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन – 'क' वर्ग – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

'च' वर्ग – च्, छ्, ज्, झ, ञ्

'त' वर्ग – त्, थ्, द्, ध्, न्

'प' वर्ग – प्, फ्, ब्, भ्, म्

– य्, र्, ल्, व्

– श्, ष्, स्, ह्

(.)

(:)

(ँ)

संयुक्त वर्ण – क्ष, त्र, ज्ञ

क् + ष् = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ् = ज्ञ

उपर्यक्त वर्ण व्यवस्था वैज्ञानिक है, प्रत्येक वर्ण का उच्चारण स्थान निश्चित है।

क वर्ग – कण्ठ्य

च वर्ग – तालव्य

ट वर्ग – मूर्धन्य

त वर्ग – दन्त्य

प वर्ग – ओष्ठय

य र ल व – अंतस्थ

श ष स ह – ऊष्म

क्ष त्र श्र ज्ञ – संयुक्त व्यंजन

ड़ ढ़ – द्विगुण (वर्ण) व्यंजन

प्रत्येक वर्ग का अंतिम वर्ण अनुनासिक है, अर्थात् नासिका से उच्चारित होता है।

मूल स्वर हैं – अ, इ, उ, ऋ, लृ।

इन्हीं के दीर्घ स्वर इस प्रकार हैं – आ, ई, ऊ, ॠ

संस्कृत में स्वर तीन प्रकार के होते है ।

1. ह्रस्व – अ, इ, उ, ऋ
2. दीर्घ – आ, ई, ऊ, ॠ
3. प्लुत – आ ऽ ऽ ऽ

स्वरों का प्रयोग मात्राओं के रूप में होता है।

उच्चारण में कालावधि के आधार पर ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत मात्राएँ निर्धारित की हैं।

संस्कृत में उच्चारण के आधार पर अर्थ निश्चित होता है। अशुद्ध उच्चारण अर्थ का अनर्थ कर देता है।

अशुद्ध उच्चारण के प्रकार :–

1. अशुद्ध वर्णलोप – साप्ताहिक का सप्ताहिक
2. अशुद्ध स्वर – प्रेम – परेम
3. अशुद्ध आगम – सती – स्ती

4.	अशुद्ध वर्ण विपर्यय	–	प्रहलाद – प्रल्हाद
			ब्राह्मण – ब्राम्हण
5.	अशुद्ध मात्रा	–	गुरू – गुरू
			कवि – कवी
6.	अनुनासिक दोष	–	ङ् ..... ण, न, म
7.	व, ब प्रयोग	–	वचन – बचन
			विकास – बिकास
8.	श, ष, स	–	पाषाण – पासाण

उच्चारण शिक्षण विधियाँ

1. अनुकरण विधि – अध्यापक के आदर्श उच्चारण के साथ उच्चारण कराया जाए।
2. आवृत्ति विधि – कठिन ध्वनियों की बार–बार आवृत्ति कराई जाए।
3. परिवर्तन विधि – उच्चारण की अशुद्धियों को शुद्ध रूप से परिवर्तित कर सुधार कराया जाए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 संस्कृत में ध्वनि का क्या महत्त्व है ? वर्ण और अक्षर के भेद बताते हुए स्वरों की व्याख्या करें।

प्रश्न 2 कण्ठ से उच्चारित होने वाले वर्ण का नाम क्या है ?

प्रश्न 3 अन्तस्थ वर्ण कौन कौन से हैं ?

प्रश्न 4 ऊष्म वर्ण क्या हैं ?

प्रश्न 5 ड़, ढ़ कौन से वर्ण हैं ?

प्रश्न 6 उच्चारण में होने वाली अशुद्धियों की व्याख्या करें।

प्रश्न 7 उच्चारण दोष दूर करने के लिए कौन सी शिक्षण विधियों का प्रयोग करेंगे?

उप इकाई पञ्चमी

अर्थ शब्द एवं वाक्य संरचना

वाक्यों का संयोजन ही भाषा है, वस्तुतः भाषा का आधार वाक्य होते हैं तथा छोटे और बड़े दोनों प्रकार के वाक्य सुसम्बद्ध होते हैं।

वाक्य शब्दों का समूह होता है, प्रत्येक शब्द में एक अथवा अनेक वर्ण होते हैं जिन्हें अक्षर भी कहते हैं। 'अक्षर' का अर्थ है जिसका कभी क्षरण अर्थात् नाश न हो। वर्ण को यह नाम इसलिए दिया जाता है, क्योंकि प्रत्येक वर्ण का नाद अनश्वर है। यदि किसी शब्द का उच्चारण करें तो उच्चारण काल में उसके अक्षर नाद कहलाएंगे और उस स्थिति में शब्द नादों का समूह होगा। नाद और ध्वनि का प्रायः एक ही अर्थ है।

संस्कृत भाषा में जिन अक्षरों (वर्णों) का प्रयोग होता है, वे हैं :–

अ, इ, उ, ऋ, लृ	–	ह्रस्व
आ, ई, ऊ, ॠ	–	दीर्घ
ए, ऐ, ओ, औ	–	मिश्र (संयुक्त)
क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	–	'क' वर्ग
च्, छ्, ज्, झ	–	'च' वर्ग
ट् ठ् ड् ढ् ण्	–	'ट' वर्ग
त्, थ्, द्, ध्, न्	–	'त' वर्ग
प्, फ्, ब्, भ्, म्	–	'प' वर्ग
य्, र्, ल्, व्	–	अन्तस्थ
श्, ष्, स्, ह्	–	ऊष्म वर्ण
(.)	–	अनुस्वार
ङ् ..... ण् न् म्	–	अनुनासिक
(:)	–	विसर्ग

ऊपर कहा जा चुका है कि वाक्य शब्दों का समूह है जैसे – ''छात्रः पुस्तकं पठति''। यह वाक्य इस प्रकार भी हो सकते हैं

1. बालकः पुस्तकानि पठति।
2. बालकाः पुस्तकानि पठन्ति।

उक्त वाक्यों पर दृष्टिपात करने से परिज्ञान होता है कि कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनके रूप हमेशा एक से रहते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके रूपों में परिवर्तन हो जाता है, जैसे – ''छात्रः पुस्तकं पठति'' के रूपों में परिवर्तन हो गया।

जिन शब्दों के रूपों में किसी भी स्थिति में परिवर्तन या विकास नहीं होता है। वे अव्यय कहलाते हैं। जिन शब्दों के रूपों में परिवर्तन हो जाता है वे विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्द अनेक प्रकार के होते हैं, उदाहरणार्थ 'राष्ट्रपतिः तुभ्यं सुन्दरं पारितोषिकं अददात्'' इस वाक्य में ''राष्ट्रपति'' शब्द संज्ञा है। तुभ्यं (तुझे) संज्ञा के स्थान पर आया है। अतः सर्वनाम है। ''सुन्दरम्'' शब्द ''पारितोषिकं'' की विशेषता बतलाता है अतः विशेषण हैं ''अददात्'' (दिया) क्रिया है।

शब्दों के भेद

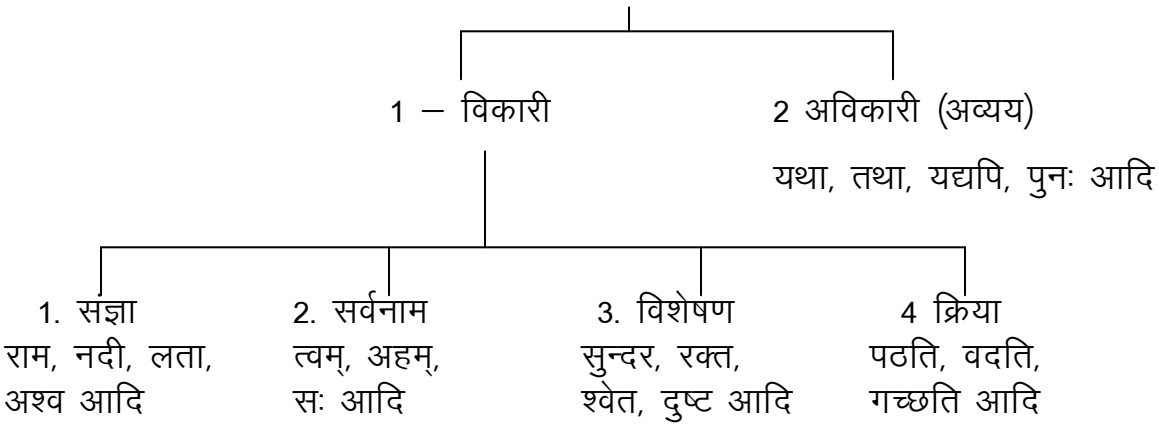

वाक्य संरचना

रामः सीतां अपर्णयत्। (राम ने सीता से विवाह किया) इस वाक्य में कर्त्ता (राम) फिर कर्म सीता और अन्त में क्रिया (अपर्णयत्) आई है। संस्कृत में वाक्यों में शब्दों को रखने का क्रम हिन्दी के समान निश्चित नहीं हैं संस्कृत में हम इस वाक्य को इस प्रकार भी लिख सकते है।

सीतां रामः अपर्णयत् ।

अपर्णयत् सीतां रामः।

अथवा

अपर्णयत् रामः सीताम्।

इन वाक्यों में शब्दों का क्रम चाहे जैसा हो ''रामः'' कर्त्ता ''सीताम्'' कर्म और अपर्णयत् क्रिया ही रहती है, क्योंकि जिन शब्दों में चिह्न प्रत्यय होते हैं, उन शब्दों में स्थान परिवर्तन होने पर भी ये विभक्ति चिन्हों से पहचाने जाते है।

अभ्यास प्रश्न

1. अव्यय किसे कहते हैं ?
2. वाक्य की परिभाषा दीजिए। संस्कृत में स्वर और व्यंजन कितने–कितने हैं?
3. विकारी शब्द और अविकारी शब्दों में क्या अन्तर है ?

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
डिप्लोमा इन एज्युकेशन परीक्षा

विषय : संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधियाँ)

इकाई – द्वितीय
प्रश्न पत्र – दशम्
विषयांश –

- नीतिश्लोकाः
- गीतादर्शनम्
- पुरूषोत्तमः
- सूक्तयः

प्रिय छात्राध्यापको !

पिछली इकाई में आपने तीन पाठों तथा ध्वनि और उच्चारण, वर्ण, शब्द एवं वाक्य संरचना के विषय में जानकारी प्राप्त की। इस इकाई में तीन पद्य पाठों तथा कतिपय सूक्तियों का अध्ययन करेंगे।

उप इकाई प्रथम – नीतिश्लोकाः

1. यस्मिन्देशे ..... परिवर्जयेत् ।।
2. षड्दोषाः ..... दीर्घसूत्रता।।
3. विपदि ..... महात्मनाम् ।।
4. न कश्चित् ..... रिपवस्तथा ।।
5. उत्सवे ..... स बान्धवः।।

(7) दुर्जनः ..... हालाहलं विषम्।।

(8) पापन्निवारयति ..... प्रवदन्ति सन्तः।।

(9) जाड्यं धियो ..... करोति पुंसाम्।।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9 वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

वृत्तिः = आजीविका, बान्धवः = कुटुम्बीजन, तन्द्रा = अर्ध निद्रा, कुलस्यार्थे = वंश के लिए, विपदि = आपत्ति में, अभ्युदये = उन्नति में, रिपुः = शत्रु, राष्ट्रविप्लवे = राष्ट्र विद्रोह होने पर मधु = शहद/मीठा, गुह्यम् = गुप्त बात कोन, जहाति = नहीं छोड़ता है, धियः जाड्यम = बुद्धि की जड़ता को,

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखित पद्यांशान् पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(अ) त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।

ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।

(क) ग्रामस्यार्थे किं त्यजेत् ?

(ख) कस्य अर्थे एकं त्यजेत् ?

(ग) जनपदस्यार्थे कं त्यजेत् ?

(घ) आत्मार्थे कां त्यजेत् ?

(ड) ग्रामस्य पदे का विभक्तिः ?

(ब) विपदि धैर्यमथाम्युदये क्षमा,

सदसि वार्क्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाभिरूचिव्यर्सनं श्रुतौ,

प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

(क) वाक्पटुता कुत्र आवश्य की ?

(ख) यशसि का आवश्य की ?

ग) व्यसनं कुत्र आवश्यकम् ?

घ) विपदि किम् आवश्यकम् ?

ड.) अभ्युदये का आवश्य की ?

(स) पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्तिं सन्तः।।

क) सन्मित्रं कस्मै योजयते ?

ख) सन्मित्रं किं निगूहति ?

ग) सन्मित्रलक्षणं के प्रवदन्ति ?

घ) सन्मित्रं कस्मात् निवारयति ?

ड.) सन्मित्रं कान् प्रकटी करोति ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

क) मित्राणि रिपवः च कथं जायन्ते ?

ख) सत्सङ्गतिः पापं किं करोति ?

ग) धियः जाड्यं का हरति ?

घ) सदसि किम् अपेक्षते ?

ड.) के षड्दोषाः पुरूषेण हातव्याः ?

3) युग्ममेलनं कुरूत –

	(अ)		(ब)
क)	युधि	–	व्यवहारेण जायन्ते
ख)	मित्राणि	–	हालाहलं विषम्
ग)	दुर्जनस्य हृदि	–	चेतः प्रसादयति
घ)	सत्सङ्गतिः	–	विक्रमः

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (अ) (क) ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।

(ख) कुलस्य अर्थे एकं त्यजेत्।

(ग) जनपदस्यार्थे ग्रामं त्यजेत्।

(घ) आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।

(ड) ग्रामस्य पदे षष्ठी विभक्तिः।

(ब) (क) वाक्पटुता सदसि आवश्य की।

(ख) यशसि अभिरूचिः आवश्य की।

(ग) व्यसनं श्रुतौ आवश्यकम्।

(घ) विपदि धैर्यम् आवश्यकम्।

(ड) अभ्युदये क्षमा आवश्य की।

(स) (क) सन्मित्रं हिताय योजयते।

(ख) सन्मित्रं गुह्यं निगूहति।

(ग) सन्मित्र लक्षणं सन्तः प्रवदन्ति।

(घ) सन्मित्रं पापात् निवारयति।

(ड) सन्मित्रं गुणान् प्रकटी करोति।

(2) (क) मित्राणि रिपवः च व्यवहारेण जायन्ते।

(ख) सत्संगतिः पापम् अपाकरोति।

(ग) धियः जाड्यं सत्संगतिः हरति।

(घ) सदसि वाक्पटुता अपेक्षते।

(3)

	अ		ब
(क)	युधि	–	विक्रमः
(ख)	मित्राणि	–	व्यवहारेण जायन्ते
(ग)	दुर्जनस्य हृदि	–	हालाहलं विषम्
(घ)	सत्संगतिः	–	चेतः प्रसादयति

उप इकाई द्वितीय – गीतादर्शनम्

(1) यदा यदा ..... सृजाम्यहम्।।

(2) परित्राणाय ..... युगे युगे।।

(3) कर्मण्येवाधिकारस्ते ..... कर्मणि।।

(4) जातस्य ..... शोचितुमर्हसि।।

(5) अन्नाद्भवन्ति ..... समुद्भवः।।

(6) ध्यायतो ..... जायते।।

(7) क्रोधाद्भवति ..... प्रणश्यति।।

(8) तद्विद्धि ..... ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः।।

(9) यतो यतो ..... वशं नयेत्।।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक ''दूर्वा' संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9 वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

ग्लानिः = हानि, दुष्कृताम् = दूषित कर्म करने वालों का/दुष्टों का, संगः = प्रीति/आसक्ति, ध्रुवम् = निश्चित, अपरिहार्य = अटल, भूतानि = सम्पूर्ण प्राणी, पर्जन्य = वृष्टि, ध्यायतः = चिन्तन करने वाले, सम्मोहः = अविवेक, प्रणिपातेन = प्रणाम के द्वारा, नियम्य = रोकर, नयेत् = ले जावें।

अभ्यास प्रश्न

(1) अघोलिखितपद्यांशौ पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(अ) अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्नसंभवः।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।

(क) कस्मात् अन्नसंभवः ?

(ख) यज्ञात् कः भवति ?

(ग) अन्नात् कानि भवन्ति ?

(घ) कर्म समुद्भवः कः ?

(ङ) 'पर्जन्यात्' पदे का विभक्तिः ?

(ब) क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

(क) कस्माद् बुद्धिनाशः भवति ?

(ख) क्रोधात् कः भवति ?

(ग) कस्मात् स्मृतिविभ्रमः भवति ?

(घ) कस्मात् प्रणश्यति ?

(ङ) 'क्रोधात्' पदे किं वचनम् ?

(2) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) ते अधिकारः कुत्र ?

(ख) जातस्य ध्रुवं किम् ?

(ग) कामात् कः अभिजायते ?

(घ) तत्त्वदर्शिन, किम् उपदेक्ष्यन्ति ?

(ङ) त्वं कस्मिन्नर्थे न शोचितुमर्हसि ?

(3) प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(जातस्य, विषयान्, धर्मस्य, कर्मणि)

(क) यदा यदा हि ..... ग्लानिः भवति।

(ख) ते ..... एव अधिकारः।

(ग) ..... हि ध्रुवो मृत्युः।

(घ) ध्यायतो ..... पुंसः।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (अ) (क) पर्जन्यात् अन्नसंभवः।

(ख) यज्ञात् पर्जन्यः भवति।

(ग) अन्नात् भूतानि भवन्ति।

(घ) कर्म समुद्भवः यज्ञः।

(ड) 'पर्यन्यात्' पदे पञ्चमी विभक्तिः।

(ब)

(क) स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः, भवति।

(ख) क्रोधात् संमोह, भवति।

(ग) संमोहात् स्मृतिविभ्रमः भवति।

(घ) बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।

(ड) 'क्रोधात्' पदे एकवचनम्।

(2)

(क) ते अधिकारः कर्मणि एव।

(ख) जातस्य ध्रुवं मृत्युः।

(ग) कामात् क्रोधः अभिजायते।

(घ) तत्त्वदर्शिनः ज्ञानम् उपदेक्ष्यन्ति।

(ड) त्वम् अपरिहार्येऽर्थे न शोचितुमर्हसि।

(3)

(क) धर्मस्य

(ख) कर्मणि

(ग) जातस्य

(घ) विषयान्

उप इकाई तृतीय – पुरूषोत्तमः

(1) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो ..... धृतिमान् वशी।।

(2) स च ..... हिमवानिव।।

(3) स जगाम ..... प्रियकारणात्।।

(4) तं व्रजन्तं ..... सुमित्रानन्दवर्धनः।।

(5) सीताप्यनुगता ..... दशरथेन च।।

(6) चित्रकूटं ..... विलपन् सुतम्।।

(7) ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान् ..... पदानुगान्।।

(8) वने तस्मिन् ..... क्रोधमूर्च्छितः।।

(9) तेन मायाविना ..... जटायुषम्।।

(10) पम्पातीरे ..... समागतः।।

(11) ततः सुग्रीववचनाद्वत्वा ..... प्रत्यपादयत्।।

(12) ततो दग्ध्वा ..... पुनरायान्महाकपिः।।

(13) सोभिगम्य ..... सीतेति तत्वतः।।

(14) तेन गत्वा ..... व्रीडामुपागमत्।।

(15) नन्दिग्रामे ..... पुनरवाप्तवान्।।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक दूर्वा संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9 वीं से करें)।

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

नियतात्मा = मन को वश में रखने वाले, द्युतिमान् = कान्तिमान्, सर्वगुणोपेतः = सम्पूर्ण गुणों से युक्त, अनुजगाम = अनुसरण किया, गते = चले जाने पर, उद्युक्तान् = तत्पर रहने वाले, पदानुगान = अनुगमन करने वालों को, ज्ञातिवधम् = जाति वालों के वध को, अपवाह्य = ले जाकर, संगतः = मेल हुआ, आहवे = युद्ध में, ऋते = बिना, अमेयात्मा = अपरिमित बुद्धिशाली, तत्त्वतः = यथार्थ रूप से, व्रीडाम् = लज्जा को, अनघः = निष्पाप

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) नियतात्मा महावीर्यः कः ?

(ख) सुग्रीववचनात् रामः के हतवान् ?

(ग) सीता लक्ष्मणश्च केन सह वनम् अगच्छताम् ?

(घ) रामः कस्मिन् वंशे उत्पन्नः अभूत् ?

(ङ) महाकपिः कां दग्धवान् ?

(2) युग्ममेलनं कुरूत –

	अ		ब
(क)	कौसल्यानन्दवर्धनः	–	हनुमान् कृतवान्
(ख)	पुत्रशोकेन	–	राक्षसान् हतवान्
(ग)	लंकादहनम्	–	रामायणं रचितवान्
(घ)	वने रामः	–	श्रीरामः
(ङ)	वाल्मीकिः	–	दशरथमरणम्

(3) शुद्धवाक्यानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धवाक्यानां समक्षं ''न'' इति लिखत –

यथा – श्रीरामः धैर्येण हिमवान् इत अस्ति। (आम्)

सुग्रीवेण सह रामः मित्रतां न कृतवान्। (न)

(क) कैकेय्याः प्रियकारणात् रामः वनं गतः। ( )

(ख) सुमित्रानन्दनवर्धनः लक्ष्मणः वनं न गतः। ( )

(ग) रामः चतुर्दश सहस्त्रराक्षसान् हतवान्। ( )

(घ) सुग्रीवः वालिनं हतवान्। ( )

(ङ) रामः रावणं न हतवान्। ( )

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) नियतात्मा महावीर्यः रामः।

(ख) सुग्रीववचनात् रामः वालिने हतवान्।

(ग) सीता लक्ष्मणश्च रामेण सह वनम् अगच्छताम्।

(घ) रामः इक्ष्वाकुवंशे उत्यन्नः अभूत्।

(ङ) महाकपिः लंकां दग्घवान्।

(2)

	अ		ब
(क)	कौसल्यानन्दवर्धनः	–	श्रीरामः
(ख)	पुत्रशोकेन	–	दशरथमरणम्
(ग)	लंकादहनम्	–	हनुमान् कृतवान्
(घ)	वने रामः	–	राक्षसान् हतवान्
(ङ)	वाल्मीकिः	–	रामायणं रचितवान्

(3) (क) (आम्)

(ख) (न)

(ग) (आम्)

(घ) (न)

(ङ) (न)

उप इकाई चतुर्थ

सूक्तयः

'' सुष्ठु उक्तिः'' इति सूक्तिः या सु उक्तिः सूक्तिः। संस्कृत में सूक्ति या सुभाषित शीर्षक के अंतर्गत विद्वानों ने संस्कृत साहित्य में कुछ वाक्य या वाक्यांश पृथक् कर लिए हैं ये वाक्यांश सुत्रात्मक शैली में होते है अथवा किसी श्लोक के बाद के अंश होते है। इन सूक्तियों का उपयोग व्यक्ति कम शब्दों में अपनी बात समझाने के लिए करता है। नीचे कुछ सूक्तियाँ एवं उनके भाव दिये जा रहे हैं।

(1) मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

(मम मनः शुभं कल्याण प्रदञ्च भवतु)

(2) सत्यश्रमाभ्याम् सकलार्थः सिद्धिः।

(सत्येन श्रमेण च सकलानि कार्यणि सिद्धयन्ति)

(3) सा विद्या या विमुक्तये।

(मुक्ति प्रदायिनी विद्या उत्तमा)

(4) योगः कर्मसु कौशलम्।

(कार्येषु कौशलम् एव योगः)

(5) स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

(स्वाध्यायः करणीयः)

(6) दैवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।

(देवकार्यम् पितृकार्यम् च करणीयम्)

(7) धर्मो रक्षति रक्षितः।

(रक्षितः धर्मः अस्मान् रक्षति)

(8) मन्त्रमूलाः सर्वारम्भाः।

(कार्याणि मन्त्रणामूलानि सन्ति)

(9) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

(आहारे व्यवहारे च लज्जः न करणीयः)

(10) सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करण प्रवृत्तयः।

(सज्जनानाम् अन्तः करण प्रकृत्तयः सन्देहेषु प्रमाणं भवन्ति)

(11) सकलं कष्टं निखिलं नष्टं यदि आचरणं मलिनं भ्रष्टम्।

(आचरणं शुद्ध भवितव्यम्)

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) मे मनः शिवसड़कल्पमस्तु ?

(ख) कर्मसु कौशलं किम् ?

(ग) कः रक्षितः रक्षति ?

(घ) सत्यश्रमाभ्यां कस्य सिद्धिः ?

(ड) सकलं कदा नष्टं भवति ?

(2) सूक्तिपूर्तिं कुरूत –

(क) मे मनः .....।

(ख) धर्मो ..... रक्षितः।

(ग) योग ..... कौशलम्।

(घ) ..... प्रमदः।

(ड) मन्त्रमूलाः .....।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

(ख) कर्मसु कौशलं योगः।

(ग) धर्मः रक्षितः रक्षति।

(घ) सत्यश्रमाम्यां सकलार्थस्य सिद्धिः।

(ड) यदा आचरणं मलिनं तदा सकलं नष्ट। भवति।

(2) (क) शिवसंड़कल्पमस्तु

(ख) रक्षति

(ग) कर्मसु

(घ) स्वाध्यायान्मा

(ड) सर्वारम्भाः

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित डिप्लोमा इन एज्यूकेशन

परीक्षा

विषय – संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधियाँ)

इकाई – तृतीय प्रश्नपत्र – दशम्

विषयांश – 1. अलसस्य स्वप्नः

2. पितृसेवा परं ज्ञानम्

3. सुविज्ञातमेव विश्वसेत्

4. संसर्गजाः दोषगुणाः

5. पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

प्रिय छात्राध्यापको !

पिछली इकाई में आपने तीन पद्य पाठ एवं सूक्तियों का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में हम चार गद्य पाठ एवं पर्यायवाची तथा विलोम शब्दों का अध्ययन करेंगे।

उप इकाई प्रथम

अलसस्य स्वप्नः

''कस्मिंश्चिन्नगरे ..... सोमशर्मपिता यथा।।''

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा नवीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

कृपणः कंजूस, भुक्तशेषैः = खाने से बचे हुए,

सक्तुभिः = सत्तू से, नागदन्ते = खूँटी पर, खट्वाम् =

खाट को, दुर्भिक्षम् = अकाल, अजाद्वयम् = दो बकरियॉ

षाण्मासिकात् = छह महीने में होने वाली, यूथम् = झुण्ड।

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(अ) अथ कदाचिद्रात्रौ सुप्तश्चिन्तयामास – यत् अयं घटः सक्तुभिः परिपूर्णः वर्तते। तद्यपि दुभिक्षं भवति, तदनेन रूप्यकाणां शतमुत्पत्स्यते। ततस्तेन मया अजाद्वयं ग्रहीतत्यम्। ततः षाण्मासिकात् आप्रसव – वशात् ताभ्यां यूथं भविष्यति।

(क) कदाचिद्रात्रौ किं कृतवान् ?

(ख) घटः कैः परिपूर्णः वर्तते ?

(ग) कदा रूप्यकाणां शतमुत्पत्स्यते ?

(घ) मया किं ग्रहीतव्यम् ?

(ङ) भविष्यति अस्मिन् पदे कः लकारः ?

(ब) ततोऽजाभिः प्रभूता गाः ग्रहीष्यामि। गोभिर्महिषीः। महिषीभिर्वडवा। वडवाप्रसभूताः अश्वाः भविष्यन्ति। तेषां विक्रयात् प्रभूतं सुवर्णं भविष्यति। सुवर्णेन चतुःशालं गृहं सम्पत्स्यते।

(क) अजाभिः काः ग्रहीष्यामि ?

(ख) महिषीभिः का ?

(ग) अश्वाः कथं भविष्यन्ति ?

(घ) सुवर्णेन किं सम्पत्स्यते ?

(ड) गोभिः अस्मिन् पदे का विभक्तिः ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणिं संस्कृतेन लिखत –

(क) अश्वानां विक्रयात् किं भवति ?

(ख) विप्रः कं सततम् अवलोकयति ?

(ग) विप्रस्य प्रहारेण कः भग्न ?

(घ) सोमशर्मा कुतः विप्रसमीपम् आगच्छति ?

(ङ) विप्रः पुत्रम् कुतः अवधारयिष्यति ?

3. शुद्धवाक्यानां समक्षं ''आम्'' अशुद्धवाक्यानां समक्षं ''न'' इति लिखत –

(क) अजाभिः माहिषीः भविष्यन्ति। ( )

(ख) विप्रः घटं सततमेकदृष्ट्या अवलोकयति। ( )

(ग) वडवाप्रसवतः अश्वा भविष्यन्ति। ( )

(घ) कलशः सक्तुभिः सम्पूरितः। ( )

(ङ) अश्वानां विक्रयात् गृहं सम्पत्स्यते। ( )

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) (क) कदाचिद्रात्रौ सुप्तश्चिन्तयामास।

(ख) घटः सक्तुभिः परिपूर्णः वर्तते।

(ग) यदि दुर्भिक्षं भवति तदा रूप्यकाणां शतमुत्पत्स्यते।

(घ) मया अजाद्वयं ग्रहीतव्यम्।

(ङ) लट्लकारः।

(ब) (क) अजाभिः गाः ग्रहीष्यामि।

(ख) महिषीभिः वडवा।

(ग) वडवा प्रसवतः अश्वाः भविष्यन्ति।

(घ) सुवर्णेन चतुःशालं गृहं सम्पत्स्यते।

(ङ) तृतीया।

2. (क) अश्वानां विक्रयात् प्रभूतं सुवर्णं भविष्यति।

(ख) विप्रः घटं सततम् अवलोकयति।

(ग) विप्रस्य प्रहारेण घटः भग्नः।

(घ) सोमशर्मा जनन्युत्सुसंगात् विप्रसमीपम् आगच्छति।

(ङ) विप्रः पुत्रम् अश्वशालायाः पृष्ठदेशे अवधारयिष्यति।

3. (क) न

(ख) आम्

(ग) आम्

(घ) आम्

(ङ) न

उप इकाई द्वितीय

पितृसेवा परं ज्ञानम्

चन्द्रपुरनाम्नि ..... गतो देशान्तरम्।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक दूर्वा संस्कृत (सामान्य) कक्षा – 9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

अधीतविद्यः = पढा लिखा, पितृछन्नवृत्त्या = पिता को बताकर, बलाकया = बगुली से, पुरीषोत्सर्गः = मल का त्याग, सत्पक्षिहा = निरीह पक्षी को मारने वाला, रक्ताक्तहस्तम् = खून से रंगे हाथ वाले को, यमप्रतिमम् = यमराज के समान भयंकर, निजान्वयप्रणीतम् = कुल के द्वारा किया गया, जल्पितः = कहा गया।

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखित गद्यांश पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

''एकदा स तपस्वी गंगातीरे जपार्थमुपविष्टः। तस्मिन्काले कयाचित् बलाकया उड्डीयमान या तड़गोपरि पुरीषोत्सर्गः कृतः। स च तपस्वी क्रोधाकुलितनेत्रः यावदूर्ध्वं पश्यति तावत् तत्क्रोधाग्निना भस्मीभूतां बलाकां भूमौ पतितां दृष्ट्वा नारायाणद्विजगृहे भिक्षार्थं ययौ।

(क) स तपस्वी कुत्र जपार्थमुपविष्टः ?

(ख) बलाकया उड्डीयमानया कः कृतः ?

(ग) क्रोधाकुलितनेत्रः कः ?

(घ) नारायणद्विजगृहे किमर्थ ययौ ?

(ड) गड्डातीरे अस्मिन् पदे का विभक्तिः ?

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) मदनविनोदः कस्य पुत्रः आसीत् ?

(ख) देवशर्मा कुत्र तपः अकरोत् ?

(ग) मदनविनोदस्य आसक्तिः केषु आसीत् ?

(घ) द्विजपत्नी देवशर्माणं किम् उक्तवती ?

(ङ) देवशर्मा विस्मितः कथं सञ्जातः ?

3. युग्ममेलनं कुरूत –

	अ		ब
(क)	अतीव विषयासक्तः	–	जपार्थमुपविष्टः
(ख)	मदन विनोदेन शयन मन्दिरे	–	सम्यग्धर्मं निषेवते
(ग)	तपस्वी गंड़गातीरे	–	स्वर्णपञ्जरस्थः स्थापितः
(घ)	निजान्वयं प्रणीतं यः	–	परतः कीर्तिभाजनम्
(ङ)	अभवत् कीतिमान् लोके	–	पितुः शिक्षां न श्रृणोति

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) स तपस्वी गंड़गातीरे जपार्थमुपविष्टः।

(ख) बलाकया उड्डीयमानया तदंड़गोपरि पुरीषोत्सर्गः कृतः।

(ग) तपस्वी क्रोधाकुलितनेत्रः।

(घ) नारायणद्विजगृहे भिक्षार्थं ययो।

(ङ) सप्तमी विभक्तिः।

2. (क) मदनविनोदः श्रेष्ठिनः हरदत्तस्य पुत्रः आसीत्।

(ख) देवशर्मा भागीरथीतीरे तपः कृतवान्।

(ग) मदन विनोदस्य आसक्तिः द्यूतमृगयावेश्यामद्यादिषु आसीत्।

(घ) द्विजपत्नी देवशर्माणम् उक्तवती – नाहं बलाकेव त्वत्कोपस्थानम्।

(ङ) देवशर्मा प्रच्छन्नपातकज्ञानाद्भीतः विस्मितः सन्जातः।

3.

	अ		ब
(क)	अतीव विषयासक्तः	–	पितुः शिक्षां न श्रृणोति।
(ख)	मदन विनोदेन शयन मन्दिरे	–	स्वर्णपञ्जरस्थः स्थापितः
(ग)	तपस्वी गंड़गातीरे	–	जपार्थमुपविष्टः
(घ)	निजान्वयं प्रणीतं यः	–	सम्यग्धर्मं निषेवते।
(ङ)	अभवत् कीर्तिमान् लोके	–	परतः कीर्तिभाजनम्

उप इकाई तृतीय

सुविज्ञातमेव विश्वसेत्

अस्ति भागीरथीतीरे ..... ग्रध्रो जरद्गवः।।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा. शि. मं. म. प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9 वी से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

पर्कटीवृक्षः = पाकड़ का वृक्ष, दैवदुर्विपाकात् = दुर्भाग्य से, किच्चिदुद्धृत्य = कुछ कुछ निकालकर, निरामिषाशी = शाकाहारी, वीतरागेण = राग द्वेष से रहित व्यक्ति द्वारा, दुष्करम् = कठिन चान्द्रायणव्रतम् = चन्द्रमा का व्रत

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखितगंद्यांश पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

''अस्ति भागीरथीतीरे गृध्रकूटनाम्नि पर्वते महान् पर्कटीवृक्षः। तस्य कोटरे दैवदुर्विपाकाद् गलितनख नयने जरद्गवनाम गृध्रः प्रतिवसति। अथ कृपया तज्जीवनाय तदवृक्षवासिनः पक्षिणः स्वाहरत किञ्चित किच्चिदुद्धृत्य ददति। तेन असौ जीवति। अथ कदाचिद् दीर्धकर्णनामा मार्जारः पक्षिशावकान्भक्षितुं तत्रागतः।

(क) भागीरथीतीरे कः वृक्षः ?

(ख) गृध्रः कुत्र प्रतिवसति ?

(ग) पक्षिणः किं ददति ?

(घ) मार्जारः किमर्थं तत्रागत ?

(ङ) ''पर्वते'' इति पदे का विभक्तिः ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) विश्वास्य मार्जारः कुत्र स्थितः ?

(ख) गृध्रः कैः हतः ?

(ग) जनः वध्यः पूज्यः वा कथं भवति ?

(घ) कस्मै वासो न देयः ?

(ङ) हितोपदेशस्य रचनाकारः कः ?

3. प्रदत्तैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) गृध्रकूटनाम्नि ..... पर्कटीवृक्षः अस्ति। (पर्वते / गृहे)

(ख) वृक्षस्य कोटरे जरद्गवनामा ..... प्रतिवसति। (सिंहः / गृध्रः)

(ग) मार्जारः प्रतिदिनंम ..... खादति। (पशुशावकम् / पक्षिशावकम्)

(घ) गृध्रः पक्षिशावकान् .....। (रक्षति / भक्षति)

(ङ) पक्षिभिः ..... हतः (मार्जारः / गृध्रः)

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1 (क) भागीरथीतीरे पर्कटीवृक्षः।

(ख) गृध्रः वृक्षस्य कोटरे प्रतिवसति।

(ग) पक्षिणः स्वाहारात् किञ्चिद्– किञ्चिद् उद्धृत्य ददति।

(घ) मार्जारः पक्षिशावकान्भक्षितुं तत्रागतः।

(ङ) सप्तमी विभक्तिः।

2 (क) विश्वास्य मार्जारः तरूकोटरे स्थितः।

(ख) गृध्रः सर्वैः पक्षिभिः हतः।

(ग) जनः वध्यः पूज्यः वा व्यवहारं परिज्ञाय भवति।

(घ) अज्ञातकुलशीलस्य वासो न देयः।

(ङ) हितोपदेशस्य रचनाकारः नारायणपण्डितः।

3 (क) पर्वते (ख) गृध्रः (ग) पक्षिशावकम्

(घ) रक्षति (ङ) गृध्रः।

उप इकाई चतुर्थ

संसर्गजाः दोषगुणाः

कश्चित् एकः ..... सुप्रतिष्ठितः।

निर्देश– (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा 9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

संसर्गजाः = साथ में रहने से उत्पन्न होने वाले, अहर्निशं, रातदिन, शुकः = तोता, गवाशनानाम् = गाय को मारने या खाने वालों के, मारयतु कुट्टयतु = मारो–कूटो, कीटः = कीड़ा, पिपीलिका = चींटी अश्मा = पत्थर

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

''कश्चित् एकः महान् तपस्वी ऋषिः आसीत्। सः लोककल्याणार्थम् अहर्निशं भूतले भ्रमति स्म। एकदा सः परिभ्रमन् एकं ग्रामम् अगच्छत्। ग्रामस्य एकस्मिन् गृहे एकः शुकः पालितः आसीत्। सः शुकः ऋषिं दृष्ट्वा ''मारयतु कुट्टयतु'' इति वारं वारम् उच्चैः उक्तवान्।

(क) एकः महान् कः आसीत् ?

(ख) सः किमर्थं भूतले भ्रमति स्म ?

(ग) शुकः कुत्र पालितः आसीत् ?

(घ) सः शुकः किम् उक्तवान् ?

(ङ) 'अगच्छत्' अस्मिन् पदे कः धातुः अस्ति ?

2. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) प्रथमः शुकः किं वदति स्म ?

(ख) महर्षिः वाल्मीकिः किं रचितवान् ?

(ग) महर्षिः वाल्मीकिः कथं तपस्वी जातः ?

(घ) अश्मा कथं देवत्वं प्राप्नोति ?

(ङ) केषां संगः करणीयः?

3. शुद्ध वाक्यानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धवाक्यानां समक्षं 'न' इति लिखत –

यथा – संसर्गात् स्वभावपरिवर्तनं भवति। आम्

दुर्जनानां संगः करणीयः। न

(क) द्वितीयः शुकः ''सीताराम'' इति वदति स्म। ☐

(ख) ऋषिः लोककल्याणार्थं न भ्रमति स्म। ☐

(ग) दुर्जनानां संगात् लाभः भवति। ☐

(घ) सज्जनानां संगति करणीया। ☐

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) एकः महान् तपस्वी ऋषिः आसीत् ।

(ख) सः लोककल्याणार्थं ''भूतले भ्रमति स्म ।

(ग) शुकः एकस्मिन् गृहे पालितः आसीत् ।

(घ) सः शुकः ''मारयतु कुट्टयतु इति उक्तवान् !

(ङ) गम् (गच्छ्) धातुः।

2. (क) प्रथमः शुकः ऋषिं दृष्टवा मारयतु कुट्टयतु इति वदति स्म।

(ख) महर्षिः वाल्मीकिः रामायणमहाकाव्यं रचितवान्।

(ग) महर्षिः वाल्मीकिः सप्तर्षीणां सत्संगः प्रभावात् तपस्वी जातः।

(घ) अश्मा महद्भिः सुप्रतिष्ठितः देवत्वं याति।

(ङ) सज्जनानां संगः करणीयः।

3 (क) आम् (ख) न

(ग) न (घ) आम्

उप इकाई – पञ्चमी

पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

उद्देश्य – इस उप इकाई के माध्यम से संस्कृत के शब्दों को आत्मसात कराया जा रहा है। इसमें छात्र को कुछ शब्द दिये जाते हैं और उनका अर्थ पूछा जाता है। इस पद्धति में सुधार कर नवीन पद्धति से छात्रों से अर्थ न पूछकर उन्हें शब्द के पर्याय, विलोम शब्द पूछे जाते हैं। इस पद्धति से छात्र मूल शब्द के अर्थ को हृदयंगम कर लेता है तथा उसका शब्द भण्डार भी बढ़ता है। वह इन शब्दों को भविष्य में उपयोग करने की क्षमता भी प्राप्त कर लेता है। नीचे कुछ पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं –

1. रामः – राघवः, रघुनंदनः, कौशलेन्द्रः
2. तमः – अन्धकारः, तिमिरः।
3. पृथ्वी – भूमिः, वसुंधरा, रत्नगर्भा
4. इन्द्रः – मघवा, शक्रः
5. कृष्णः – गोपालः, देवकीनन्दनः
6. बुधः – पण्डितः, विद्वान्, ज्ञानवान्
7. कमलम्– जलजम्, पंकजम्, नीरजम्
8. सूर्यः – दिनकरः, भास्करः, भानुः
9. हरिः – विष्णुः, पीताम्बरः, लक्ष्मीपतिः
10. देवता – अमरः, सुरः, देवः
11. सीता – जानकी, मैथिली, वैदेहि
12. प्रकाशः – आलोकः, ज्योतिः, देवः

पर्यायवाची शब्दों के पाठन के जो उद्देश्य हैं वही उद्देश्य विलोम शब्दों के पाठन के हैं। नीचे विलोम (विपरीत अर्थ वाले) शब्द दिये जा रहे हैं :–

1. सरलः – कठिनः

2. कोमलः – कठोरः

3. धर्मः – अधर्मः

4. सत्यम् – असत्यम्

5. कृष्णः – शुक्लः, उज्ज्वलः

6. पण्डितः– मूर्खः, अज्ञः

7. शत्रुः – मित्रम्, सखा

8. प्रकाशः – तिमिर, अन्धकारः

9. अमरः – मरणधर्मा, क्षयी, नश्वर

10. दिवसः – रात्रिः, राका, रजनी

11. शुष्कः – आर्द्रः, जलयुक्तः

12. स्वदेशः – विदेशः, परदेशः

13. परित्राणः– विनाशः

14. अन्यः – अनन्यः

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत –

(क) दिवसः –

(ख) अमरः –

(ग) प्रातः –

(घ) प्रकाशः –

(ङ) सत्यम् –

2) अधोलिखितपदानां पर्यायवाचिपदानि लिखत –

(क) इन्द्रः

(ख) कृष्णः

(ग) पृथ्वी

(घ) नीलकण्ठः

(ङ) कमलम्

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

विषय – संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधियाँ)

इकाई – चतुर्थी

विषयांश – 0 श्रेष्ठतमं कार्यम्
0 उपायैः सर्वं शक्यम्
0 सर्वदमनः भरतः
0 दशपुरीया अष्टमूर्तिः
0 पितृभक्तः श्रवणकुमारः

प्रिय छात्राध्यापको !

पिछली इकाई मे चार गद्य पाठों तथा पर्यावाची एवं विलोम शब्द के विषय में जानकारी प्राप्त की। इस इकाई में पाँच गद्य पाठों का अध्ययन किया जावेगा।

उप इकाई प्रथम

(श्रेष्ठतमं कार्यम्)

''कुण्डलः कश्चन.....सः विनय शीलः सञ्जातः''।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ मे आए कठिन शब्दों के अर्थ

वेदशास्त्रम् = वेदशास्त्र का नाम, सकाशात् = पास से, जातिवैरम् = जातिगत शत्रुता भाव, पाकं कृत्वा = पकाकर, परिवेसयति = परोसता है, सेवमानः = सेवन करते हुए, व्ययितः = व्यतीत होता था, अशेषम् = सम्पूर्ण ।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

सुकर्मा 'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव' इति वचनम् अव्यवधानेन पालयति स्म। प्रतिदिनं नदीतः जलम् आनीय पित्रोः स्नानं कारयति। समये रूचिकरं पाकं कृत्वा परिवेषयति। ग्रीष्मकाले तौ व्यजनेन वीजयति। रातौ जागरितः सन् एव तयोः सेवां करोति। एवं च पित्रोः सेवायामेव तस्य सर्वः समयः व्ययितः भवति स्म।

(क) सुकर्मा ग्रीष्मकाले तौ केन वीजयति?

(ख) नदीतः जलम् आनीय सुकर्मा कयोः स्नानं कारयति?

(ग) सुकर्मा किं वचनं पालयति स्म?

(घ) सुकर्मणः सर्वः समयः कथं व्ययितः भवति स्म?

(ङ) कीदृशं पाकं कृत्वां सुकर्मा परिवेषयति?

(2) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) सुकर्मणः पितुः नाम किम् ?

(ख) कः महान् पितृभक्तः आसीत्?

(ग) वरं प्राप्य पिप्पलः कीदृशः जातः?

(घ) पिप्पलः कं वरं याचितवान्?

(ङ) कस्य उपरि देवाः पुष्पवृष्टिं कृतवन्तः?

(3) शुद्धवाक्यानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धवाक्यानां समक्षं ''न'' इति लिखत –

(क) कुण्डलः वेदशास्त्रज्ञः आसीत् ☐

(ख) पिप्पलः वरप्राप्त्या निरभिमानी जातः। ☐

(ग) इंद्रः सारसरूपं धृत्वा पिप्पलस्य समीपं गतवान्। ☐

(घ) सेवायाः श्रेष्ठतमम् अन्यत्र कार्यं न अस्ति। ☐

(ङ) सुकर्मा आश्रमे तिष्ठन् घोरं तपः आचरति। ☐

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) सुकर्मा ग्रीष्मकाले तौ व्यजनेन वीजयति।

   (ख) नदीतः जलम् आनीय सुकर्मा कयोः स्नानं कारयति।

   (ग) सुकर्मा 'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव इति वचनं पालयति स्म।

   (घ) सुकर्मणः सर्वः समयः पित्रो, सेवायामेव व्ययितः भवति स्म।

   (ङ) रूचिकरं पाकं कृत्वा सुकर्मा परिवेषयति।

2. (क) सुकर्मणः पितुः नाम कुण्डलः आसीत्।

   (ख) सुकर्मा महान् पितृभक्तः आसीत्।

   (ग) वरं प्राप्य पिप्पलः अहंकारी जातः।

   (घ) पिप्पलः वरं याचितवान् यत् अशेषं विश्वं मम अधीनं भवतु।

   (ङ) पिप्पलस्य उपरि देवाः पुष्पवृष्टिं कृतवन्तः।

3. (क) (आम्)

   (ख) (न)

   (ग) (न)

   (घ) (आम्)

   (ङ) (न)

उप इकाई द्वितीय

''अस्ति ब्रह्मारण्ये.....गच्छता पंखवर्त्मना''।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

प्रतिज्ञातम् = प्रतिज्ञा की, व†चकः = धूर्त/कपटी, विन्देत् = प्राप्त करे, म्रिये = मरता हूँ, अटवी = जंगल, परावृत्य = लौटकर, निपतितः = गिरा हुआ, अभिषेक्तुम् = अभिषेक करने के लिए, प्रत्ययः = विश्वास।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

अस्ति ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती। तमवलोक्य सर्वे श्रृगालश्चिन्तयन्ति स्म – 'यद्ययं केनाप्युपायेन म्रियते तदा अस्माकम् एतद्देहेन मासचतुष्टयस्य भोजनं भविष्यति। तत्रैकेन वृद्धश्रृगालेन प्रतिज्ञातम्–' मया बुद्धिप्रभावादस्य मरणं साधयितव्यम्। अन्तरं स व†चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वां साष्टङ्गपातं प्रणम्य उवाच – देव! दृष्टिप्रसादं कुरू। हस्ती ब्रूते–कस्त्वम्, कुतः समायातः?

सोऽवदत् जम्बुकोऽहम्।

(क) वृद्धश्रृगालेन किं प्रतिज्ञातम्?

(ख) कुत्र कर्पूरतिलको नाम हस्ती अस्ति?

(ग) हस्तिनम् अवलोक्य सर्वे श्रृगालाः किं चिन्तयन्ति स्म?

(घ) हस्ती किं ब्रूते?

(ङ) व†चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा किम् उवाच?

(2) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) हस्ती कुत्र निपतितः?

(ख) प्रथमं कं विन्देत्?

(ग) राज्ञा विना किं न युक्तम्?

(घ) कर्पूरतिलकः केन लोभेन धावति?

(ङ) श्रृगालैः कः भक्षितः?

(3) उचितमेलनं कुरूत –

अ		ब
(क) कर्पूरतिलकः	–	भोजनम्
(ख) वृद्धश्रृगालेन	–	हस्ती
(ग) हस्तिदेहेन	–	प्रतिज्ञातम्
(घ) महापंके	–	हस्तीभक्षितः
(ङ) श्रृगालैः	–	निमग्नः

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) वृद्धश्रृगालेन प्रतिज्ञानं यत् मया बुद्धिप्रभावादस्य मरणं साधयितव्यम्।

(ख) ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती अस्ति।

(ग) हस्तिनम् अवलोक्य सर्वे श्रृगालाश्चियन्ति स्म यत् अयं केनाप्युपायेन म्रियते तदा अस्माकम् एतद्देहेन मासचतुष्टयस्म भोजनं भविष्यति।

(घ) हस्ती ब्रूते यत् कस्त्वय्, कुतः समायातः?

(ङ) वञ्चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा उवाच यत् देव! दृष्टिप्रसादं कुरू।

2. (क) हस्ती महापंके निपतितः।

(ख) प्रथमं राजानं विन्देत्।

(ग) राज्ञा विना अवस्थातुं न युक्तम्।

(घ) कर्पूरतिलकः राज्यलोभेन धावति।

(ङ) श्रृगालैः हस्ती भक्षितः।

3.

अ		ब
(क) कर्पूरतिलकः	–	हस्ती
(ख) वृद्धश्रृगालेन	–	प्रतिज्ञातम्
(ग) हस्तिदेहेन	–	भोजनम्
(घ) महापंके	–	निमग्नः
(ङ) श्रृगालैः	–	हस्ती भक्षितः

उप इकाई द्वितीय

(सर्वदमनः भरतः)

''बालः – जृम्भस्व.....स्मृतिरूपरब्धा''।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

जृम्भस्व = जम्हाई लो, पौरव = पुरूवंश का, अविनीत = उद्दण्ड, अन्वयः = कुल, संरम्भ = उद्वेग, प्रेक्षस्व = देखो, मणिबन्धे = कलाई पर, डिम्भकेन = बालक के द्वारा, परिष्वजते = आलिंगन करता है, अंगुलीयकम् = अंगूठी, रक्षाकरण्डकम् = रक्षासूत्र/ताबीज ।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) ऋषिजनेन बालस्य नाम किं कृतम्?

(ख) राजा बालस्य हस्ते कं लक्षणम् अपश्यत्?

(ग) रक्षाकरण्डकं केन दत्तम्?

(घ) एकां वेणीं का धृतवती?

(ङ) राज्ञा स्मृतिः कथम् उपलब्धा?

(2) शुद्धवाक्यानां समक्षम् 'आम्' अशुद्ध वाक्यानां समक्षं 'न' इति लिखत –

(क) बालः सिंहशावकेन सह क्रीडति? ( )

(ख) राजा बालं न लालयति? ( )

(ग) राज्ञः बालस्य च आकृतिः समाना वर्तते? ( )

(घ) अपराजिता औषधिः भगवता कण्वेन दत्ता? ( )

(3) युग्ममेलनं कृरूत –

अ		ब
(क) चक्रवर्तिलक्षणम्	–	बालस्य पिता
(ख) शकुन्तला	–	अंगुलीयकम्
(ग) वर्णचित्रितः	–	बाले
(घ) राजा	–	बालस्य माता
(ङ) नाम मुद्रितम्	–	मृन्तिकामयूरः

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) ऋषिजनेन बालस्य नाम सर्वदमन 'इति कृतम्।

(ख) राजा बालस्य हस्ते चक्रवर्तिलक्षणम् अपश्यत्।

(ग) रक्षाकरण्डकं भगवता मारीचेन दन्तम्।

(घ) एकां वेणीं शकुन्तला धृतवती?

(ङ) राज्ञा स्मृतिः अंगुलीयकोपलम्भात् उपलब्धा।

2. (क) बालः सिंहशावकेन सह क्रीडति। (आम्)

(ख) राजा बालं न लालयति। (न)

(ग) राज्ञः बालस्य च आकृतिः समाना वर्तेते। (आम्)

(घ) अपराजिता औषधिः भगवता कण्वेन दत्ता। (न)

3.

अ		ब
(क) चक्रवर्तिलक्षणम्	–	बाले
(ख) शकुन्तला	–	बालस्य माता
(ग) वर्णचित्रितः	–	मृत्तिकामयूरः
(घ) राजा	–	बालस्य पिता
(ङ) नाम मुद्रितम्	–	अंगुलीयकम्

उप इकाई चतुर्थी

(दशपुरीया अष्टमूर्तिः)

''मध्यप्रदेशस्य पश्चिमे भागे.....दर्शनीया च अस्ति''।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

मालवाञ्चले – मालवा क्षेत्र मे, शिवनानद्यास्तीरे – शिवना नदी के किनारे, स्वकीये – स्वयं के, प्रख्यातः – विख्यात है, अष्टमुखाङ्कितम् – उत्कीर्ण आठ मुख वाली, पाषाणिलिग्ङे – पत्थर के लिंग पर, अर्धांशत – आधी (पचास प्रतिशत), गोपिता – छिपा दी गई, मध्यमणिः – बीच की मणि

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

शैवदर्शनदृष्ट्या शैवकलादृष्ट्या च दशपुरीया अष्टमूर्तिः शैवमूर्तिषु अद्वितीया अस्ति। अद्यावधि शैवप्रतिमाः केवलं तिस्रः सन्ति। प्रथमा–प्रथमशताब्द्याः मथुरायाः अर्धनारीश्वरः। द्वितीया–दशमशताब्द्याः चिदम्बरस्य नटराजः।

(क) शैवप्रतिमाः कति प्रसिद्धा?

(ख) दशमशताब्द्याः कः प्रसिद्धः?

(ग) दशपुरीया अष्टमूर्तिः कया दृष्ट्या अद्वितीया अस्ति?

(घ) द्वितीया शैवप्रतिमा का प्रसिद्धा?

(ङ) प्रथमशताब्द्याः कः प्रसिद्ध?

(2) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) अष्टमूर्तिः कुत्र प्रतिष्ठापिता अस्ति?

(ख) पूर्वमुखे कः रसः विद्यते?

(ग) कस्य मुखस्य शिला लोहितवर्णा वर्तते?

(घ) ऐतिहासिकैः अर्धनारीश्वरस्य कः कालः निर्धारितः?

(ङ) अष्टमूर्तिः इदानीं केन नाम्ना प्रख्याता?

(3) युग्ममेलनं कुरूत –

अ		ब
(क) उत्तरमुखे	–	नटराजः
(ख) 1940 ईशवीये	–	दुर्लभवरस्य
(ग) चिदम्बरस्य	–	भक्तैः दृष्टा
(घ) दक्षिणमुखशिल्पे	–	विजयामत्त इव

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (क) शैवप्रतिमाः तिस्रः प्रसिद्धाः।

(ख) दशमशताब्द्याः चिदम्बरस्य नटराजः प्रसिद्धः।

(ग) दशपुरीया अष्टमूर्तिः शैवदर्शनदृष्ट्या शैवकलादृष्ट्या च अद्वितीया अस्ति।

(घ) द्वितीया शैवप्रतिमा एलीफैण्टायाः त्रिमूर्तिः प्रसिद्धा।

(ङ) प्रथमशताब्द्याः मथुरायाः अर्धनारीश्वरः प्रसिद्धः।

2. (क) अष्टमूर्तिः मालवाञ्चले शिवनानद्यास्तीरे प्रतिष्ठापिता अस्ति।

(ख) पूर्वमुखे शान्तरसः विद्यते।

(ग) पश्चिममुखस्य शिला लोहितवर्णा वर्तते।

(घ) अष्टमूर्तिः इदानीं पशुपतिनाथः इति नाम्ना प्रख्याता?

3.

अ		ब
(क) उत्तरमुखे	–	विजयामत्त इव
(ख) 1940 ईशवीये	–	भक्तैः दृष्टा
(ग) चिदम्बरस्य	–	नटराजः
(घ) दक्षिणमुखशिल्पे	–	दुर्लभवरस्य

उप इकाई पंचमी

(पितृभक्तः श्रवणकुमारः)

''आचार्य–ईशभक्तिः गुरूभक्तिः ..... जगतीतले प्रसिद्धम्''।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

विहगि्ङका – कॉवर, अनुमीय – अनुमान करके, आखेटकम् – शिकार,

वियुक्तः – अलग, पिपासा – व्यास, शप्तः – शाप दिया, शरः – बाण,

अभिलाषः – इच्छा ।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) पितृभक्तः कः आसीत्?

(ख) श्रवणकुमारः किमर्थं प्रख्यातः?

(ग) श्रवणकुमार पितरौ कीदृशौ आस्ताम्?

(घ) दशरथः किमर्थं वनं गतवान्?

(ङ) श्रवणः जलार्थं कुत्र गतः?

(2) युग्ममेलनं कुरूत –

अ		ब
(क) पितरौ	–	महाराजः
(ख) श्रवण कुमारः	–	नदी
(ग) दशरथः	–	वृद्धौ
(घ) तमसा	–	पितृभक्तः

3 सन्धिविच्छेदं कुरूत –

(क) तीर्थाटनाय।

(ख) नरेन्द्रः।

(ग) जन्मान्धौ।

(घ) किञ्च।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर –

1 (क) पितृभक्तः श्रवणकुमारः आसीत्।

(ख) श्रवणकुमारः पितृभक्तः आसीत् एतदर्थं सः प्रख्यातः।

(ग) श्रवणस्य पितरौ वृद्धौ जन्मान्धौ च आस्ताम्।

(घ) दशरथः आखेटं कर्तुं वनं गतवान्

(ङ) श्रवणः जलार्थं तमसातीरं गतः।

2

	अ	ब
(क)	पितरौ	वृद्धौ
(ख)	श्रवणकुमारः	पितृभक्तः
(ग)	दशरथः	महाराजः
(घ)	तमसा	नदी

3. (क) तीर्थ + अटनाय

(ख) नर + इन्द्रः

(ग) जन्म + अन्धौ

(घ) किम् + च

पत्राचार पाठ्यक्रम
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

विषय – संस्कृत (तृतीय भाषा एवं उसकी शिक्षण विधियाँ)

इकाई – पञ्चम्

प्रश्नपत्र – दशम्

विषयांश –

- कर्त्तव्यपालनम्
- वीरबाला
- अध्ययने प्रत्यूहः
- गुरूभक्तः आरूणिः
- वेधशाला

प्रिय छात्राध्यापको !

पिछली इकाई में पाँच गद्य पाठों के विषय में जानकारी प्राप्त की। इस इकाई में पाँच गद्य पाठों का अध्ययन किया जायेगा।

उप इकाई प्रथम

(कर्त्तव्यपालनम्)

शिक्षकः– जीवने किम् .....
समुन्नतेः मूलमन्त्रः

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मण्डल, म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक 'दूर्वा' (संस्कृत सामान्य) कक्षा – नवमीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

यापनार्थम् – बिताने के लिए, व्यापन्ना – नष्ट,
बिगड़ी हुई, विकल, तावती–उतनी, राजकीया–सरकारी
आत्मानः – स्वयं का, महतः – बहुत बड़ा,
वञ्चनया – छल से, कपट से, वाञ्छन्ति – चाहते हैं,
कलहम् – लड़ाई, यावान् – जितना, ददति – देती है,
अस्माभिः – हमारे द्वारा, करणीयम् – करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

देशस्य कृते महतः दुर्भाग्यस्य अयं विषयः वर्तते यत्
साम्प्रतिकेषु जनेषु कर्त्तव्यपालनं प्रति महती शिथिलता।
समागता वर्तते। नैकाः जनाः श्रमेण, सत्येन, निष्ठया च कार्यं कर्तुं न वाञ्छन्ति, वञ्चनया एवं स्वार्थसाधनं कर्तुं कामयन्ते। अधिकारार्थं सर्वे कलहं कुर्वन्ति परं कर्त्तव्यपालने ध्यानं न ददति।

1. (क) कर्त्तव्यपालनं प्रति महती शिथिलता केषु समागता ?
   (ख) कस्य कृते दुर्भाग्यस्य अयं विषयः ?
   (ग) श्रमेण, सत्येन, निष्ठया च कार्यं कर्तुं के न वाञ्छन्ति ?
   (घ) जनाः वञ्चनया किं कर्तुं कामयन्ते ?
   (ङ) किमर्थं सर्वे कलहं कुर्वन्ति ?

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

   (क) जनाः वञ्चनया किं कर्तुं कामयन्ते ?
   (ख) जीवने किम् आवश्यकम् ?
   (ग) कृषकाः देशस्य उन्नतिं कथं कुर्वन्ति ?
   (घ) यदि जनाः स्वकर्त्तव्यपालनं न कुर्वन्ति तर्हि किं भविष्यति ?
   (ङ) कर्त्तव्यपरायणानां गणना कुत्र भवति ?

(3) यथायोग्यं योजयत –

	अ		ब
(क)	अध्यापकाः	–	कर्माणि
(ख)	न्यायाधीशाः	–	कृषिकार्यम्
(ग)	कर्मकराः	–	अध्यापनम्
(घ)	कृषकाः	–	पठनम्
(ङ)	विद्यार्थिनः	–	न्यायम्

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) कर्त्तव्यपालनं प्रति महती शिथिलता साम्प्रतिकेषु जनेषु समागता।

(ख) देशस्य कृते दुर्भाग्यस्य अयं विषयः।

(ग) नैके जनाः श्रमेण, सत्येन, निष्ठया च कार्यं कर्तुं न वाञ्छन्ति।

(घ) जनाः वञ्चनया एव स्वार्थसाधनं कर्तुं कामयन्ते।

(ङ) अधिकारार्थं सर्वे कलहं कुर्वन्ति।

(2) (क) जनाः कञ्चनया एव स्वार्थसाधनं कर्तुं कामयन्ते।

(ख) जीवने कार्यम् आवश्यकम्।

(ग) कृषकाः कृषिकार्यं कृत्वा देशस्य उन्नतिं कुर्वन्ति।

(घ) यदि जनाः स्वकर्त्तव्यपालनं न कुर्वन्ति।
तर्हि समाजस्य कापि व्यवस्था भवितुं न अर्हति।

(ङ) कर्त्तव्यपरायणानां गणना श्रेष्ठपुरूषेषु भवति।

(3) यथायोग्यं योजयत –

	अ		ब
(क)	अध्यापकाः	–	अध्यापनम्
(ख)	न्यायाधीशाः	–	न्यायम्
(ग)	कर्मकराः	–	कर्माणि
(घ)	कृषकाः	–	कृषिकार्यम्
(ङ)	विद्यार्थिनः	–	पठनम्

उप इकाई द्वितीय

(वीरबाला)

शिक्षकः – भो छात्राः । अस्माकं भारतदेशे ..... रक्षणमति विहितम्।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

बहव्यः = अनेक, वृत्तम् = घटना, ह्यः = बीता हुआ कल,

उद्वेलितः = क्षुब्ध हुआ, उत्सर्गः = त्याग, विस्तरेणः = विस्तार से,

अनश्नन् = बिना खाए, बुभुक्षा = भूख, प्राणानुत्सृजामः = हम प्राणों को छोड़ देंगे,

गौरवरक्षार्थम् = सम्मान रक्षा के लिये, क्षुत्क्षामा= भूख से दुबली, अवलोक्य = देखकर।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित गद्यांशौ पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(अ) एकदा राजकुमारः चम्पा च नदीतटे क्रीडतः आस्ताम्। तदैव राजकुमारः क्षुधापीड़ितः अभवत्। सः रोटिकां याचमानः रोदितवान्। सः न जानाति स्म यत् रोटिकायाः ग्रासमेकमपि नास्ति। चम्पा तं कथां श्रावयित्वा विनोदयामास। राजकुमारः बुभुक्षितः एव सुप्तवान्।

(क) कः क्षुधापीड़ितः अभवत् ?

(ख) एकदा राजकुमारः चम्पा च कुत्र क्रीड़तः आस्ताम् ?

(ग) रोटिकां याचमानः कः रोदितवान् ?

(घ) राजकुमारः किं न जानाति स्म ?

(ङ) राजकुमारः बुभुक्षितः एव किं कृतवान् ?

(ब) अनेन कारणेन क्षुत्क्षामा वीरबाला चम्पा अति दुर्बलतां प्राप्ता। एकदा दौर्बल्यात् सा मूर्च्छिता जाता। तदा महाराणाप्रतापः ताम् अङ्के उत्थाय रूदन्नवदत् – पुत्रि। इतोप्यधिकम् दुःखम् त्वां न दास्यामि। मया अकबरस्य कृते पत्रं लिखितम्।

(क) सा कस्मात् मूर्च्छिता जाता ?

(ख) का दुर्बलतां प्राप्ता ?

(ग) कः रूदन् अवदत् ?

(घ) वीरबालायाः नाम किम् आसीत् ?

(ङ) अकबरस्य कृते पत्रं केन लिखितम् ?

(2) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) चम्पायाः पितुः नाम किम् ?

(ख) रोटिकाद्वयम् कुत्र स्थापितम् ?

(ग) उद्वेलितः प्रतापः किं कर्तुमुद्यतः अभवत् ?

(घ) चम्पा केन कारणेन मूर्च्छिता जाता ?

(ङ) प्रतापेन का प्रतिज्ञा कृता ?

(3) उचित विकल्पेन वाक्यानि पूरयत –

(क) अरावलीपर्वतस्य ..... कष्टमनुभूतम् । (गुहायाम्/उपत्याकाम्)

(ख) पाषाणतले ..... संरक्षिता आसीत् । (रोटिका/रोटिकाद्वयम्)

(ग) चम्पामूर्च्छिता जाता .....। (अश्नन्/अनश्नन्)

(घ) कष्टान् अवलोक्य महाराणाप्रतापः उद्वेलितः ..... । (जाता/जातः)

(ङ) राजकुमारः ..... पीडितः सुप्तवान् । (बुभुक्षया/पिपासया)

(4) यथायोग्यं योजयत –

	अ		**ब**
(क)	महाराणा प्रतापः	–	पाषाणतले
(ख)	चम्पा	–	उपत्यकायाम्
(ग)	राजकुमारः	–	प्रतापस्य पुत्री
(घ)	अरावली पर्वतस्य	–	क्षुधापीडितः
(ङ)	रोटिकाद्वयम्	–	वीरः साहसी च

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) अ. (क) राजकुमारः क्षुधापीड़ितः अभवत्।

(ख) एकदा राजकुमारः चम्पा च नदीतटे क्रीड़तः आस्ताम् ।

(ग) रोटिकां याचमानः राजकुमारः रोदितवान्।

(घ) राजकुमारः न जानाति स्म यत् रोटिकायाः ग्रासमेमपि नास्ति।

(ङ) राजकुमारः बुभुक्षितः एव सुप्तवान् ।

(ब) (क) सा दौर्बल्यात् मूर्च्छिता जाता।

(ख) चम्पा अति दुर्बलतां प्राप्ता।

(ग) महाराणाप्रतापः रूदन् अवदत्।

(घ) वीरबालायाः नाम चम्पा आसीत्।

(ङ) अकबरस्य कृते पत्रं महाराणाप्रतापेन लिखितम्।

(2) अ. (क) चम्पायाः पितुः नाम महाराणाप्रतापः आसीत् ।

(ख) रोटिकाद्वयम् पाषाणतले स्थापितम्।

(ग) उद्वेलितः प्रतापः अकबरस्य अधीनतां कर्तुं उद्यतः अभवत्।

(घ) चम्पा दौर्बल्यात् मूर्च्छिता जाता।

(ङ) प्रतापेन प्रतिज्ञा कृता यदहम् अकबरं पराजित्य यावत् चित्तौड दुर्गं न जेष्यामि तावत् पर्णे भोजनं भूमौ च शयनं करिष्यामि।

(3) (क) उपत्यकायाम्

(ख) रोटिकाद्वयम्

(ग) अनश्नन्

(घ) जातः

(ङ) बुभुक्षया

(4) यथायोग्यं योजयत –

	<u>अ</u>		<u>ब</u>
(क)	महाराणा प्रतापः	–	वीरः साहसी च
(ख)	चम्पा	–	प्रतापस्य पुत्री
(ग)	राजकुमारः	–	क्षुधापीडितः
(घ)	अरावली पर्वतस्य	–	उपत्यकायाम्
(ङ)	रोटिकाद्वयम्	–	पाषाणतले

उप इकाई तृतीय

(अध्यने प्रत्यूहः)

तपसी – अये, वनदेवता ..... गोदावरी तीरेण।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

अध्वगवेषा = पथिक वेश वाली, तोयम = जल, पल्लवार्ध्येण = पत्र रूपी अर्ध्य से, विनयमधुरः = विनय के कारण ह्रदयाकर्षक, अनवगीतः = अनिन्दित, अधिगन्तुम् = जानने के लिये, अनुपधि = छल–कपट से रहित, प्रज्ञा = बुद्धिमान शिष्य को, जड़े = बुद्धिहीन शिष्य को, त्वम् मा अगमः = तुम नहीं प्राप्त करो, प्राचेतसः = वाल्मीकि ने, प्रणिनाय = निर्माण किया, महानध्ययनप्रत्यूहः = अध्ययन में बड़ी बाधा, शुचिबिम्बग्राहे = प्रतिबिम्ब के ग्रहण में, कः = कौन, जृम्भकास्त्राणि = जृम्भक नामक अस्त्र, निर्वृतचौलकर्मणोः = चूड़ाकर्म संस्कार हो जाने पर, युज्यते = ठीक है।

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) दण्डकारण्यप्रदेशे के प्रमुखाः वसन्ति ?

(ख) देवताविशेषेण अद्भुतं किम् उपनीतम् ?

(ग) दारकौ केन पोषितौ रक्षितौ च ?

(घ) तयोः कानि जन्मसिद्धानि ?

(ङ) गुरू विद्यां कथं वितरति ?

(ब) शुद्धवाक्यानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धवाक्यानां समक्षं ''न'' इति लिखत –

(क) गुरूः यथा प्राज्ञे तथैव जडे विद्यां वितरति ।

(ख) जृम्भकास्त्राणि जन्मसिद्धानि आसन्।

(ग) लवकुशौ त्रयी विद्यां न अधीतवन्तौ।

(घ) वाल्मीकिः आदिकविः अस्ति।

(ङ) वाल्मीकिः रामायणं न लिखितवान्।

(3) उचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(निगमान्तविद्याम्, पुण्येन, प्रतिष्ठाम्, विशुद्धम्, माध्यन्दिनसवनाय)

(क) सतां सद्भिः सङ्गः ..... भवति।

(ख) आत्रेयी ..... अध्येतुम् पर्यटति।

(ग) महर्षिः ..... तमसामनुप्रपन्नः।

(घ) मा! निषाद ..... त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

(ङ) रहस्यं साधूनामनुपधि ..... विजयते।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) दण्डकारण्ये अगस्त्यप्रमुखाः वसन्ति।

(ख) देवताविशेषेण अद्भुत दारकद्वयम् उपनीतम्।

(ग) दारकौ वाल्मीकिना पोषितौ रक्षितौ च।

(घ) तयोः जृम्भकास्त्राणि जन्मसिद्धानि।

(ङ) गुरूः विद्यां यथा प्राज्ञे तथैव जडे वितरति।

(2) (क) क – आम्

(ख) ख – आम्

(ग) ग – न

(घ) घ – आम्

(ङ) ड. – न

(3) (क) क – पुण्येन

(ख) ख – निगमान्तविद्याम्

(ग) ग – माध्यन्दिनसवनाय

(घ) घ – प्रतिष्ठां

(ङ) ड. – विशुद्धं

उप इकाई चतुर्थ

(गुरूभक्तः आरूणिः)

शिक्षकः – (छात्रान् प्रति) श्वः किम् ..... अवश्यमेव ।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

केदारखण्डम् = खेत की क्यारी को, उदकम् = जल को,

अन्वेषणाय = खोजने के लिये, विदार्य = तोड़कर, तदा = तब,

उच्चैः = जोर से, श्रृणोतु = सुनो, श्वः = आने वाला कल,

पर्व = त्यौहार, चकार = किया, क्व = कहॉ, नाम्ना = नाम से,

सर्वाणि = सारे, सहसोत्थाय = अचानक उठकर न = नहीं

अभ्यास प्रश्न

(1) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

(क) आरूणेः गुरोः नाम किम् ?

(ख) गुरूपूर्णिमायां किं भवति ?

(ग) आरूणिः गुरोः शब्दं श्रुत्वा किं कृतवान् ?

(घ) गुरोः आदेशेन आरूणिः किमकरोत् ?

(ङ) धौम्यः आरूणिं कुत्र प्रेषयति ?

(2) उचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) तस्य शिष्यः आरूणिः ..... । (आसन्/आसीत्)

(ख) उपाध्यायः धौम्यः ..... अपृच्छत्। (शिष्यान्/शिष्यैः)

(ग) भवान् उद्दालक इति नाम्ना .....। (भविष्यति/भविष्यसि)

(घ) अहमभिवादये ..... । (भवान्/सर्वान्)

(ङ) ते ..... वेदाः प्रतिभास्यन्ति। (सर्वे/सर्वान्)

(3) शुद्धकथनानां समक्षम् ''आम्'' अशुद्धकथनानां समक्षं ''न' इति लिखत –

(क) आरूणिः महान् पितृभक्तः आसीत् ( )

(ख) गुरूपूर्णिमायां गुरूजनानां पूजनं सम्मानं च भवति। ( )

(ग) धौम्यः आरूणिम् आह्वनाय शब्दं चकार। ( )

(घ) आरूणिः गुरोः आज्ञया केदारखण्डं प्रति गतवान् ( )

(ङ) एकलव्यः अपि गुरूभक्तः आसीत्। ( )

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) आरूणेः गुरोः नाम आयोद धौम्यः आसीत् ।

(ख) गुरूपूर्णिमायां गुरूजनानां पूजनं सम्मानं च भवति।

(ग) आरूणिः गुरोः शब्दं श्रुत्वा केदारखण्डात् उत्थाय ऋषिसमीपं प्रत्यागच्छत्।

(घ) गुरोः आदेशेन आरूणिः केदारखण्डं बन्धनार्थं गतवान्।

(ङ) धौम्यः आरूणिं केदारखण्डे प्रेषयति।

(2) (क) क – आसीत्

(ख) ख – शिष्यान्

(ग) ग – भविष्यति

(घ) घ – भवन्तम्

(ङ) ड. – सर्वे

(3) (क) न

(ख) आम्

(ग) आम्

(घ) आम्

(ङ) आम्

उप इकाई पञ्चम

(वेधशाला)

प्रिय मित्र! तपन! : – (छात्रान् प्रति) श्वः किम् ..... अवश्यमेव ।

निर्देश – (सम्पूर्ण पाठ का अवलोकन मा.शि.मं.म.प्र., भोपाल द्वारा संचालित पाठ्यपुस्तक ''दूर्वा'' संस्कृत (सामान्य) कक्षा–9वीं से करें)

पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ

कुशली = कुशलपूर्वक, कामये = कामना करता हूँ, सम्यक् = ठीक प्रकार से,

शास्त्रेषु = शास्त्रों में , मनसि = मन में, दृष्ट्वा = देखकर,

इतः = यहाँ से, सञ्जाताः = हो गए, क्षिप्रायाः = क्षिप्रा नदी के,

उन्नत भूभागे = धरती के ऊँचे भाग पर, जातः = हुआ, वेधनाय = परिज्ञान के लिये

श्रूयते = सुना जाता है, प्राप्यते = प्राप्त होता है, वीक्ष्य = देखकर,

इदानीम् = अब, इस समय, पुरीयम् = यह नगरी, दृष्टव्या = देखनी चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

(1) अ. आङ्ग्लभाषायां वेधशालाम् ''अब्ज़र्वेटरी'' इति वदन्ति। जानाः वेधशालां ''यन्त्रभवनम्'' अपि वदन्ति। एषा वेधशाला उज्जयिन्याः दक्षिणभागे क्षिप्रायाः दक्षिणतटे उन्नत–भू–भागे स्थिता अस्ति। प्राचीनकालात्, एव उज्जयिनी ज्यौतिषविद्यायाः प्रमुखं केन्द्रम्। कर्करेखा इतः एव निर्गता। इदं स्थानं गणितस्यापि आधारस्थलम् अस्ति।

(क) आङ्ग्लभाषायां वेधशालां किं वदन्ति ?
(ख) जनाः वेधशालां किं वदन्ति ?
(ग) उज्जयिनी कस्याः विद्यायाः प्रमुखं केन्द्रम् ?
(घ) वेधशाला कुत्र स्थिता अस्ति ?
(ङ) कर्करेखा कुतः निर्गता ?

(2) अष्टादशशताब्द्यां राज्ञा जयसिंहेन ज्यौतिषानुराग–वशात् वेधशालानिर्माणं कारितम्। ग्रहाणां प्रत्यक्षवेधनाय जयसिंहः उज्जयिन्यां, काश्यां, देहल्यां, जयपुरे च वेधशालानां निर्माणं कृत्वान्। सः वेधज्यौतिषमधिकृत्य एकं ग्रन्थम् अपि रचितवान् इति श्रूयते। तेन अत्र एकम् उपनगरम् अपि निर्मितम् ।

(क) वेधशालानिर्माणं केन कारितम् ?
(ख) वेधशालानिर्माणं कदा अभवत् ?

(ग) वेधशालाः कुत्र–कुत्र सन्ति ?
(घ) राजा जयसिंहः केषां प्रत्यक्षवेधनाय वेधशालानां निर्माणं कृतवान् ?
(ङ) जयसिंहः कं अधिकृत्य ग्रन्थं रचितवान् ?

(2) अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –
(क) उज्जयिन्यां कानि–कानि स्थलानि दर्शनीयानि सन्ति ?
(ख) केन यन्त्रेण दिगंशः ज्ञायते ?
(ग) सम्राटयन्त्रेण कः लभ्यते ?
(घ) नाडिवलय यन्त्रेण कः ज्ञायते ?
(ङ) पलभायन्त्रेण कस्य ज्ञानं भवति ?

(3) रिक्त स्थानानि पूरयत –
(क) राज्ञा ..... वेधशालानिर्माणं कारितम्
(ख) आङ्ग्लभाषायां वेधशालां ..... इति वदन्ति।
(ग) एषा ..... नाम्नापि शास्त्रेषु वर्णिता अस्ति।
(घ) ..... इतः एव निर्गता।
(ङ) एतद् ..... विज्ञानस्य उत्तमम् उदाहरणम् अस्ति।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (क) आङ्ग्लभाषायां वेधशालां 'अब्ज़र्वेटरी' इति वदन्ति।
(ख) जनाः वेधशालां 'यन्त्रभवनम्' अपि वदन्ति।
(ग) वेधशाला उज्जयिन्याः दक्षिणभागे क्षिप्रायाः दक्षिणतटे उन्नत – भू–भागे स्थिता अस्ति।
(घ) उज्जयिनी ज्यौतिषविद्यायाः प्रमुखं केन्द्रम्।
(ङ) कर्करेखा उज्जयिनीतः निर्गता।

(ब) (क) वेधशालानिर्माणं जयसिंहेन कारितम्।
(ख) अष्टादशशताब्द्यां वेधशालानिर्माणं अभवत्।
(ग) वेधशाला उज्जयिन्यां, काश्यां, देहल्यां जयपुरे च सन्ति।
(घ) राजा जयसिंहः ग्रहाणां प्रत्यक्षबेधनाय वेधशालानां निर्माणं कृतवान्।
(ङ) जयसिंह वेधज्यौतिषमधिकृत्य एकं ग्रन्थम् रचितवान्।

(2) (क) उज्ययिन्यां महाकालेश्वरमन्दिरम् हरिसिद्धिमन्दिरम्, काल भैरव मन्दिरम् गढ़कालिकामन्दिरम् च इत्यादीनि दर्शनीयानि स्थलानि सन्ति।
(ख) दिगंशयन्त्रेण दिगंशः ज्ञायते।
(ग) सम्राटयन्त्रेण सूर्योदयात् सूर्यास्तं यावत् स्पष्ट समयो लभ्यते।
(घ) नाडिवलययन्त्रेण ग्रहनक्षत्राणां दक्षिणायनं ज्ञायते।
(ङ) पल्लभायन्त्रेण छायायामपि समयस्य सम्यक् ज्ञानं भवति।

(3) (क) जयसिंहेन
(ख) अब्जर्वेटरी
(ग) अवन्तिका, विशाला
(घ) कर्करेखा
(ङ) ग्रहनक्षत्रम्